शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

कक्षा : बारहवीं

हिन्दी

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार

सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता

निदेशक (शिक्षा)

डा0 रीता शर्मा

अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभाष कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)

श्रीमती सुनीता दुआ
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री राज कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री कृष्ण कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में **राजेश कुमार**, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा **मुद्रक :** सुप्रीम ऑफसेट प्रेस, 133, उद्योग केन्द्र, EXT.-1, ग्रेटर नोएडा, उ.प.

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187 Telefax : 23890119
e-mail : secyedu@nic.in

MESSAGE

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself, I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of School and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail: diredu@nic.in

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating thelatest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph. : 23890185

D.O. No. PS/Addl.DE/Sch/2022/131
Dated: 01 सितम्बर, 2022

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमि समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठयक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निंरतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा : बारहवीं

नि:शुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

सहायक-सामग्री निर्माण समिति

पुनरावलोकन

हिन्दी 'ऐच्छिक'

कक्षा-बारहवीं

क्रम सं.	नाम		विद्यालय
1.	डॉ. पंकज	-	उपप्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बालिका विद्यालय, सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली
2.	डॉ. शिवेन्द्र कुमार झा	-	प्रवक्ता- हिन्दी, कोर एकेडेमिक युनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ।
3.	डॉ. जय शंकर मुक्ता		प्रवक्ता- हिन्दी, कोर एकेडेमिक युनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ।
4.	डॉ. अंकित कुमार श्रीवास्तव	-	प्रवक्ता- हिन्दी, कोर एकेडेमिक युनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ।
5.	डॉ. पद्माक्षी पाठक	-	प्रवक्ता - हिन्दी, राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय बुराड़ी, दिल्ली
6.	श्रीमती सुमन शर्मा	-	प्रवक्ता - हिन्दी स्कूल ऑफ एक्सीलैंस, सैक्टर - 17, रोहणी, दिल्ली

विद्यार्थियों के लिए सहायक निर्देश:-

(1) अपठित गद्यांश व पद्यांश के सही विकल्प चुनते समय अपनी तर्क एवं विश्लेषण क्षमता का प्रयोग करें ।

(2) रचनात्मक लेखन करते समय छात्र अपने ज्ञान अनुभव व कल्पना-शीलता का प्रयोग करें ।

(3) बहुविकल्पीय प्रश्नों के विकल्पों का चयन ध्यानपूर्वक करें ।

(4) प्रश्नों के उत्तर देते समय निर्धारित अंकों व शब्दसीमा का ध्यान रखें ।

(5) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के पश्चात् दो पंक्तियाँ अवश्य छोड़ें जिससे सभी उत्तर स्पष्टत: दिखें ।

(6) महत्वपूर्ण अंशों को विशेषत: रेखांकित करें ।

(7) सभी प्रश्नों के उत्तर देने का अथक प्रयास करें ।

(8) वैकल्पिक / अथवा - प्रश्नों के इन निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढें ।

(9) सप्रसंग व्याख्या से संबंधित प्रश्नों में संदर्भ प्रसंग व्याख्या और विशेष को स्पस्ट करें।

(10) सभी पाठों के अंत में ऑनलाइन कक्षाओं का लिंक दिया गया है, बच्चे इस ऑनलाइन ई सामग्री की सहायता से पाठों को समझने का प्रयास करें ।

(11) वर्णनात्मक परीक्षा की तैयारी हेतु अधिक से अधिक लेखन अभ्यास करें ।

हिंदी (ऐच्छिक) (कोड सं. 002)

कक्षा-12वी (2022-23) परीक्षा भार विभाजन

प्रश्न-पत्र दो खण्डों-खंड 'अ' और 'ब' का होगा।

खंड 'अ' में 48 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होगें।

खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक : 80 **निर्धारित समय 3 घंटे**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1	**अपठित गद्यांश**		**18**
	अ	एक अपठित गद्यांश (लगभग 300 शब्दों का) बिना किसी विकल्प के (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश करना होगा। (लगभग 150 शब्दों के) (1 अंक x 8 प्रश्न)	08
2	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर**		**05**
	इकाई एक - जनसंचार माध्यम और लेखन (पाठ 3,4 और 5) पर आधारित बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)		05
3	**पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**12**
	अ	पठित काव्यांश पर छह बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 06 प्रश्न)	06
	ब	पठित गद्यांश पर छह बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 06 प्रश्न)	06
4	**पूरक पाठ्यपुस्तक अंतराल भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**05**
	अ	पठित पाठों पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)	05
खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर**		**17**

	इकाई एक – जनसंचार माध्यम और लेखन (पाठ 3,4 और 5) इकाई – दो सृजनात्मक लेखन पाठ 6,7,8 और 13 पर आधारित		
	1	दिए गए तीन नए और अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दो में रचनात्मक लेखन (5 अंक x 1 प्रश्न)	05
	2	कविता/कहानी/नाटक की रचना प्रक्रिया पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (3 अंक x 2 प्रश्न)	06
	3	समाचार लेखन (उल्टा पिरामिड शैली) फीचर लेखन/आलेख लेखन पर आधारित दो लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न)	06
6	**पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 + अंतराल भाग-2**		**20+3=23**
	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	2	एक काव्यांश की सप्रसंग (विकल्प सहित) (दीर्घउत्तरीय प्रश्न) (6 अंक x 1 प्रश्न)	6
	3	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	4	एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या (6 अंक x 1 प्रश्न)	6
7		**अंतराल भाग-2**	
		पाठों की विषयवस्तु पर आधारित एक प्रश्न (विकल्प सहित) (3 अंक x 1 प्रश्न)	
8	**(अ) श्रवण तथा वचन**		**10**
	(ब) परियोजना कार्य		**10**
	कुल अंक		**100**

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. **अंतरा, भाग-2,** एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **अंतरा, भाग-2,** एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम',** एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

❖ **नोट : निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।**

पाठ्यपुस्तक-अंतरा भाग 2

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-गीत गाने दो मुझे (घटाया गया पाठ का अंश और उससे संबंधित प्रश्न अभ्यास)
2. विष्णु खरे - एक कम, सत्य (पूरा पाठ)
3. केशवदास - रामचंद्रिका (पूरा पाठ)
4. घनानंद - सवैया (घटाया गया पाठ का अंश और उससे संबंधित प्रश्न अभ्यास)
5. ब्रजमोहन व्यास - कच्चा चिट्ठा (पूरा पाठ)
6. रामविलास शर्मा - यथास्मै रोचते विश्वम (पूरा पाठ)

पूरक पाठ्यपुस्तक - अंतराल 2

1. संजीव - आरोहण

विषय सूची

क्र सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	अंतरा भाग – 2 (काव्य खण्ड)	1
2.	अंतरा भाग – 2 (गद्य खण्ड)	65
3.	पूरक पुस्तक – अंतराल भाग – 2	123
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	147
5.	रचनात्मक लेखन	197
6.	अपठित बोध (काव्यांश तथा गद्यांश)	213
7.	प्रश्न-पत्र 2022-2023	222

विषय सूची

कविता खंड-

आधुनिक काल

1. जयशंकर प्रसाद	(क) देवसेना का गीत
	(ख) कार्नेलिया का गीत
2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	(क) सरोज स्मृति
3. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय (केवल पढ़ने के लिए)	(क) यह दीप अकेला
	(ख) मैंने देखा, एक बूँद
4. केदारनाथ सिंह	(क) बनारस
	(ख) दिशा
5. रघुवीर सहाय	(क) तोड़ो
	(ख) बसंत आया

प्राचीनकाल

6. (क) तुलसीदास	(क) भरत-राम का प्रेम
	(ख) पद
7. मलिक मुहम्मद जायसी	बारहमासा
8. विद्यापति	पद
9. घनानंद	कवित्त

हिन्दी सहित्य का काल विभाजन

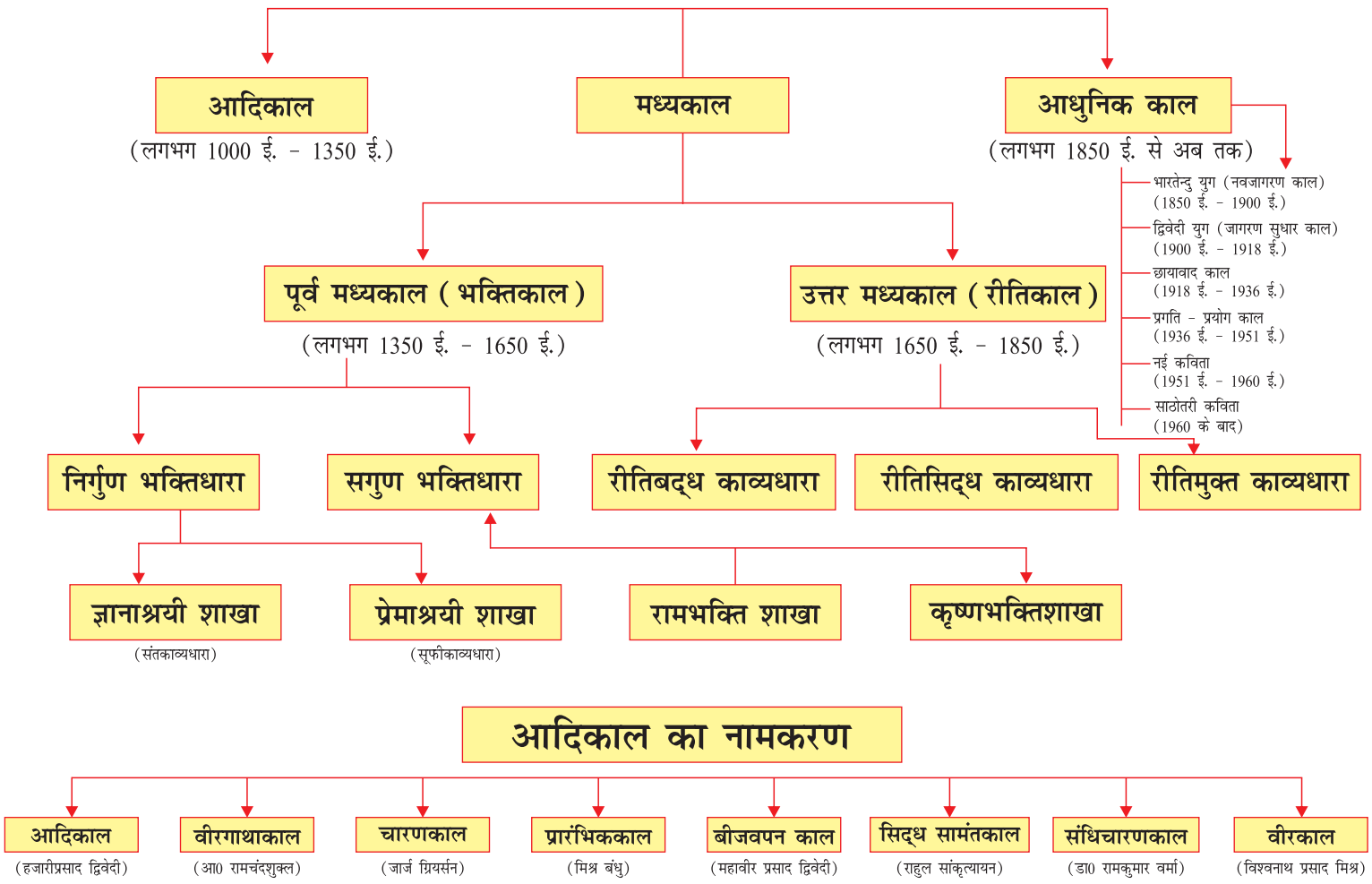

आदिकाल का नामकरण

आदिकाल (हजारीप्रसाद द्विवेदी)	वीरगाथाकाल (आ0 रामचंदशुक्ल)	चारणकाल (जार्ज ग्रियर्सन)	प्रारंभिककाल (मिश्र बंधु)	बीजवपन काल (महावीर प्रसाद द्विवेदी)	सिद्ध सामंतकाल (राहुल सांकृत्यायन)	संधिचारणकाल (डा0 रामकुमार वर्मा)	वीरकाल (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

पाठ-1

जयशंकर प्रसाद : जीवनी

(छायावाद के प्रवर्तक कवि)

जन्म:- जनवरी सन् 1889 में काशी के सुप्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ ।

मृत्यु - सन् 1937 ।

शिक्षा - वे विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक प्राप्त कर सके परंतु स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं का गहन अध्ययन किया। वे इतिहास, दर्शन, पुरातत्व के भी प्रकांड विद्वान थे ।

रचनाएँ - प्रारंभ में उन्होने 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं। बाद में खड़ी बोली में कविता के साथ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि विधाओं में भी लेखन कार्य किया ।

काव्य संग्रह:- झरना, आँसू, लहर, कानन-कुसुम, पथिक, कामायनी ।

नाटक:- अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी आदि ।

निबंध संग्रह:- 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध ।'

कहानी संग्रह:- आँधी, इंद्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप ।

साहित्यिक विशेषताएँ:-

भाव एवं विचार पक्ष:-

(1) उनके साहित्य में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख है। उन्होंने अपने नाटकों में भारतीय दर्शन और संस्कृति के गौरव का चित्रण किया ।

(2) उनके काव्य में सभी छायावादी तत्वों जैसे प्रेम, सौंदर्य, कल्पनाशीलता और मन की गहन अनुभूतियों का चित्रण हुआ है ।

(3) उनके साहित्य में मानवीय करुणा और प्रेम जैसे जीवन मूल्यों का समावेश है ।

कला पक्ष:-

(1) उनके काव्य में विषयों के अनुरूप संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है ।

(2) उनके नाटकों में अनेक प्रकार की शिल्पविधि का योग है ।

(3) बिंब योजना और प्रतीक विधान उनकी कविता के प्रमुख गुण हैं ।

(4) उनकी कविताओं में नवीन अलंकारों का सुदंर प्रयोग हुआ है ।

(5) कविताओं और गीतों में संगीत घुला-मिला है ।

पाठ परिचय

'देवसेना का गीत'

कविता का प्रतिपाद्य / मूल संवेदना

'देवसेना का गीत' 'जयशंकर प्रसाद' के प्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' का अंश है। देव सेना स्कन्दगुप्त के प्रेम से वंचित रह जाने पर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में अपने दु:ख, वेदना और व्याकुलता को प्रकट करते हुए यह गीत गाती है। हूणों के हमले में मालवा का राजा बंधुवर्मा और उसका परिवार मारा जाता है, लेकिन उनकी बहन देवसेना किसी तरह बच कर निकल जाती है। देवसेना स्कन्दगुप्त से प्रेम करती है और उसे पूरा विश्वास है कि इस मुश्किल घड़ी में स्कन्दगुप्त उसका साथ देगा और उससे विवाह करेगा। लेकिन स्कन्दगुप्त तो मालवा के धन कुबेर की पुत्री विजया से विवाह करना चाहता है। इस बात से देवसेना पूरी तरह से टूट जाती है और अपने पूरे जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर देती है।

सप्रसंग व्याख्या : आह वेदना ..... नीरवता अनंत अगँड़ाई।

संदर्भ : कवि-'जयशंकर प्रसाद'

कविता-'देवसेना का गीत'

प्रसंग : इसमें देवसेना अपने दु:ख और संघर्षों का वर्णन करते हुए कहती है कि उसकी जीवन यात्रा पर अगर किसी ने अधिकार किया है तो वह है एकमात्र उसका अकेलापन।

व्याख्या:- देवसेना कहती है कि मुझे जीवन के अन्तिम क्षणों में भी दु:ख और पीड़ा ही मिल रही है। मैंने अपना सारा जीवन इसी आशा में गुजार दिया कि स्कन्दगुप्त मुझसे प्रेम करता है लेकिन यह तो मात्र मेरा भ्रम था। इसी कारण मैंने अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया अर्थात् अपने जीवन की मधुर यादों को दान कर दिया अत: जीवन के अन्तिम क्षणों में भी मुझे दु:ख ही दु:ख मिल रहे हैं, मानो संध्या भी उसके दु:ख में आँसू बहा रही है। उसने अपना जीवन निरंतर दु:खों और संघर्षो के बीच ही बिताया है जहाँ उसका कोई साथी नहीं था । उसका एकाकीपन ही उसका साथी बनकर चलता रहा ।

काव्यगत विशेषताएँ :- देव सेना के जीवन संघर्षों का सजीव चित्रण हुआ है।

1. विषयानुकल गंभीर और तत्सम प्रधान खड़ी बोली।
2. मुक्त छंद।
3. लाक्षणिक शैली।
4. करुण रस।
5. उपमा, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
6. स्मृति बिंब।
7. गेयता का गुण।
8. व्याकरणिक शब्द- सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण।

सप्रसंग व्याख्या

चढ़कर मेरे जीवन रथ.....इससे मन की लाज गँवाई।

संदर्भ : कवि-'जयशंकर प्रसाद'
कविता-'देवसेना का गीत'

प्रसंग : इसमें देवसेना के हृदय की समस्त वेदना, व्याकुलता और बेचैनी का वर्णन किया गया है। वह अपने वेदनामय क्षणों को याद करती है।

व्याख्या : इस गीत में स्कंदगुप्त के विवाह-प्रस्ताव को ठुकराने के बाद देवसेना अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन करती हुई कहती है कि मेरे जीवन रूपी रथ पर चढ़कर विनाश व मुसीबतें मेरे साथ-साथ हमेशा चलते रहे अर्थात मैंने जीवन भर दु:खों को झेला है। मैं उनसे लगातार होड़ करती हुई, संघर्ष करती हुई निरन्तर आगे बढ़ती रही जबकि मुझे पता था कि मैं उनके सामने बहुत कमजोर हूँ; उनका मुकाबला नहीं कर पाऊँगी; फिर भी मैं उनसे जीवन भर लोहा लेती रही। देवसेना स्कंदगुप्त को संबोधित करते हुए कहती है कि हे राजन! अब मेरे हृदय की करूण रागिनी हाहाकार कर रही है अर्थात मैं बहुत अधिक दुखी हो रही हूँ। आप जो भी अधिकार मुझ पर रखते हो, उसे लौटा लो क्योंकि मेरा मन बहुत अधिक व्यथित हो गया है। अब इसे संभालना मेरे वश की बात नहीं है। इसी कारण मैं अपने मन की लज्जा की रक्षा भी न कर सकी और सबके सामने उसे खो बैठी।

काव्यगत विशेषताएँ :

विशेष : 1. देवसेना की विरह-विदग्ध दशा और हतोत्साहित मन:स्थिति का चित्रण है।
काव्य-सौदंर्य : 2. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। 3. मुक्त छंद की रचना, 4. छायावादी रचना। 5. करुण रस। 6. रूपक, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

काव्य-सौंदर्यः- श्रमित स्वप्न ..... विहाग की तान उठाई ।

भाव-सौंदर्यः- जिस प्रकार लंबी यात्रा से थके हारे और घने जंगल में वृक्ष की शीतल छाया में नींद और स्वप्न में डूबे पथिक को कोई विहाग राग की मधुर तान गाकर जगा दे, उसी प्रकार अपने जीवन के संघर्षो से थकी हारी देवसेना जब विगत जीवन को भुलाकर अपने मन को विश्राम देना चाहती है, उस समय स्कंदगुप्त द्वारा किया गया प्रेम निवेदन उसके मन को विचलित कर देता है ।

रसः - करुण रस।
गुणः - माधुर्य गुण।

शिल्प सौंदर्यः-
(1) खड़ी बोली का प्रयोग।
(2) संस्कृतनिष्ठ शब्दावली।
(3) लाक्षणिक एवं आत्मनिष्ठ शैली।
(4) मुक्त छंद।
(5) प्रतीक विधान - पथिक, स्वप्न, विपिन, विहाग की तान।
(6) बिंबों का प्रयोग - गहन विपिन, विहाग की तान।
(7) सामासिक शब्द - तरुछाया।
(8) गेयता का गुण।
(9) अलंकार - मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास ।

'कार्नेलिया का गीत'

प्रतिपाद्य / मूल संवेदना

'कार्नेलिया का गीत' 'जयशंकर प्रसाद' के प्रसिद्ध नाटक 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया जब सिंधु नदी के तट पर खड़े होकर भारत की गौरव गाथा तथा अद्‌भुत प्राकृतिक सौंदर्य को देखती है तो इसे अपना देश मानने लगती है। वह कहती है कि भारत वह स्थान है जो प्रेम और अपनत्व के माधुर्य और लालिमा से भरा हुआ है। जहाँ अनजान व भूले-भटके लोगों को भी आश्रय मिल जाता है। दूर-देशों से आये हुए रंग-बिरंगे पक्षी भी भारत में ही अपना घोंसला बनाना चाहते हैं। यहाँ के निवासी दूसरों के दुख-तकलीफों को देखकर अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। विशाल समुद्र की लहरें भी भारत के किनारों से टकराकर शांत हो जाती हैं अर्थात उन्हें भी यहीं आकर आश्रय मिलता है।

'कार्नेलिया का गीत'

सप्रसंग व्याख्या

''अरुण यह मधुमय.....मंगल कुंकुम सारा।''

संदर्भ:- कवि - जयशंकर प्रसाद

कविता - कार्नेलिया का गीत

प्रसंग:- यहाँ सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया सिंधु नदी के किनारे यूनानी शिविर के पास बैठी भारत की गौरवगाथा और प्राकृतिक सौंदर्य का बखान कर रही है ।

व्याख्या:- कार्नेलिया भारत के भौगोलिक और सांस्कृतिक सौंदर्य पर मुग्ध होते हुए इसे अपना देश मानती है । वह भारत भूमि की प्रशंसा करते हुए कहती है कि भारत भूमि ही वह भूमि है जहाँ सर्वप्रथम ज्ञान और सभ्यता का सूर्य उदित हुआ । यहाँ के निवासियों के हृदय में प्रेम और अपनत्व की मिठास भरी हुई है । इस भारत भूमि पर सुदूर देशों से आने वाले अनजान लोगों अथवा शरणार्थियों को भी आश्रय मिल जाता है । उन्हें यहाँ के लोग इस प्रकार अपना लेते हैं कि उन्हें यह देश अपना देश लगने लगता है ।

कार्नेलिया को भारत में प्रात:कालीन दृश्य अत्यंत मनोहर लगता है । इस दृश्य का वर्णन करते हुए वह कहती है कि सूर्य का लाल प्रकाश पेड़ों की शाखाओं से छनकर चारों ओर फैलता है, यह प्रकाश तालाब में खिले कमल के पुष्पों को भी आभायुक्त बना देता है उस समय ऐसा लगता है मानो पेड़ों की शाखाएँ प्रसन्न होकर नाच रही हैं । प्रात:काल में हरी-भरी धरती पर जब सूर्य की लाल किरणें बिखरती हैं तो ऐसा लगता है कि किसी ने सजीव जगत के ऊपर मंगलकारी सिंदूर बिखेर दिया है अर्थात् सबके मन में एक कल्याणकारी भावना का उदय हो जाता है ।

काव्यगत विशेषताएँ:-

(1) भारतभूमि के सांस्कृतिक व प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण ।
(2) विषयानुकूल सरस और तत्सम प्रधान खड़ी बोली ।
(3) लाक्षणिक शैली ।
(4) मानवीकरण, रुपक, उत्प्रेक्षा अलंकार ।
(5) दृश्य बिंब ।
(6) अद्‌भुत एवं शांत रस ।
(7) माधुर्य गुण ।
(8) गेयता का गुण ।

काव्य-सौंदर्य : हेम कुंभ ..... रजनी भर तारे।

भाव-सौंदर्य : ऊषा रूपी पनिहारिन सूर्य की किरणो रूपी सोने के घड़े में सुख-समृद्धि और वैभव लाकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में उड़ेल देती है अर्थात, बिखेर देती है। जबकि सारी रात जागने के कारण तारे नींद में मदमस्त होकर ऊँघने लगते हैं।

-रस-शांत, अद्‌भुत

-गुण-माधुर्य

शिल्प सौंदर्य :

1.	भाषा	- भावानुकूल
2.	शैली	- लाक्षणिक
3.	छंद	- मुक्त छंद
4.	अलंकार	- उषा और तारों मानवीकरण किया गया है । रूपक, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार हैं ।
5.	विधा	- गीत
6.	शब्द शक्ति	- लक्षणा व व्यंजना
7.	प्रतीक	- उषा, तारे, घड़ा

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. देवसेना की हार व निराशा के क्या कारण हैं?

उत्तर : देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन है। हूणों के आक्रमण में उनका सारा परिवार नष्ट हो जाता है।वह स्कंदगुप्त से गुप्त प्रेम करती है परन्तु स्कंदगुप्त मालवा के धन कुबेर की कन्या विजया को चाहते हैं। इसलिए उसे प्रेम में निराशा ही मिलती है। जीवन के अन्तिम क्षणों में स्कंदगुप्त उससे प्रणय-निवेदन करता है तो वह उसे स्वीकार नहीं करती। उसने अपने आप को कमज़ोर जानते हुए भी मुसीबतों और कठिनाइयों का डट कर सामना किया, परन्तु वह हार गई। इस प्रकार प्रेम में मिली असफलता और जीवन में मिली पीड़ाओं के कारण देव सेना हार जाती है। यही उसकी निराशा का कारण भी है।

प्रश्न 2. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

उत्तर : कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है क्योंकि वह मनुष्य को यथार्थ से दूर स्वप्न के संसार में ले जाती है । उसके मन में असंख्य आकांक्षाएँ जगाती है । आशा की डोर को पकड़कर वह असंख्य सपने सजाता है भले ही वे सपने पूरे न हो पाएँ। इन सपनों व आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए वह उन्माद की स्थिति में पहुँच जाता है। देवसेना के मन में भी जीवन भर यही आशा जागृत रही कि एक न एक दिन उसे स्कन्दगुप्त से उसके प्रेम का प्रतिदान मिलेगा । इस प्रकार आशा मनुष्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचने की ललक में बावला बनाए रखती है ।

प्रश्न 1. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होते हैं।

उत्तर : 'उड़ते खग' से अभिप्राय प्रवासी पक्षियों तथा बाहरी व्यक्तियों से है। यहाँ उनका अस्तिव और संस्कृति सुरक्षित है। यहाँ उन्हें घर-परिवार जैसा अपनत्व व आश्रय प्राप्त होता है।

'बरसाती आँखों के बादल' से अभिप्राय है कि यहाँ के लोग दूसरे के दु:ख दर्द को अपना समझकर उनका सहारा बनते हैं। इस देश में प्रेम व करुणा सर्वव्याप्त है।

पठित काव्यांश

देवसेना का गीत

बहुविकल्पीय प्रश्नः

1. "श्रमित स्वप्न की मधुमाया ..... यह विहाग की तान उठाई" ।
इन पंक्तियों में 'गहन विपिन' किसका प्रतीक है?

(i) घने जंगल का (ii) पर्वत की गुफा का
(iii) अंधकार का (iv) दुःख और संघर्ष से भरे जीवन का

2. इस कविता का मुख्य रस कौन सा है ?

(i) वीर (ii) करूण
(iii) वियोग श्रृंगार (iv) अद्भुत

3. 'श्रमित स्वप्न' में 'श्रमित' शब्द है-

(i) सर्वनाम (ii) विशेषण
(iii) क्रिया (iv) संज्ञा

4. 'विहाग की तान' के माध्यम से किसकी ओर संकेत किया गया है ?

(i) संगीत का राग (ii) सुंदर गीत
(iii) प्रेम निवदेन (iv) रात्रि का शोर

5. देवसेना स्कंदगुप्त द्वारा किए प्रेम निवेदन पर है-

(i) प्रसन्न (ii) व्यधित
(iii) विचलित (iv) क्रोधित

कार्नेलिया का गीत

"बरसाती आँखों के बादल ..... जगकर रजनी भर तारा । "

1. 'बरसाती आँखों ..... करूणा जल' पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?

(i) यहाँ वर्षा अधिक होती है

(ii) यहाँ के लोग बहुत जल्दी रो पड़ते है ।

(iii) यहाँ के निवासी दया, वरूण और सहानुभूति की भावनाओं से ओत-प्रोत है।

(iv) यहाँ के लोग दुखी और उदास रहते हैं ।

2. उपर्युक्त पंक्तियों में वर्णन है-

(i) भारतीय संस्कृति की उदारता व विशालता का

(ii) भारत की प्राकृति सुषुमा का

(iii) बादल एवं वर्षा का

(iv) उपर्युक्त (i) व (ii) का

3.यह रचना साहित्य की कौन सी विधा है?

(i) छंद

(ii) कविता

(iii) गीत

(iv) रागिनी

4. प्रात:काल में उषा रूपी पनिहारिन अपने घड़े से कौन से सुख उड़ेलती है?

(i) खाने-पीने के पदार्थ

(ii) सोना

(iii) नवीन आशा, उमंग और उत्साह

(iv) पानी

पाठ-2

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(छायावादी काव्य के प्रमुख स्तंभ एवं मुक्त छंद के प्रवर्तक कवि)

जन्म - सन् 1898 - मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल ।
मृत्यु - सन् 1961 - इलाहाबाद ।
बचपन का नाम - सूर्यकुमार
संघर्षपूर्ण जीवन - बहुत छोटी आयु में ही उनकी माँ का निधन हो गया । जिस पत्नी की प्रेरणा से उनकी साहित्य व संगीत में रुचि पैदा हुई, उनका भी सन् 1918 में निधन हो गया । उसके बाद पिता और अन्य परिवार जन भी एक-एक करके चल बसे । अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने उन्हें तोड़ दिया । मृत्यु के इस साक्षात्कार की अभिव्यक्ति उनकी कई रचनाओं में दिखाई देती है ।

शिक्षा:- उनकी विधिवत स्कूली शिक्षा नवीं कक्षा तक ही हो पाई। स्वाध्याय के द्वारा उन्होनें अनेक भाषाओं, भारतीय इतिहास, दर्शन, पुराण आदि का ज्ञान प्राप्त किया ।

रचनाएँ:-
काव्य संग्रह:- परिमल, गीतिका, अनामिका, बेला, अर्चना, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज ।

कहानी संग्रह:-लिली, चतुरीचमार, सुकुल की बीवी, सखी, देवी ।

उपन्यास:- बिल्लेसुर बकरिहा, अप्सरा, अलका, प्रभावती, इरावती, निरुपमा आदि ।
निबंध संग्रह:- प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन ।
समीक्षा:- पंत और पल्लव, रवींद्र कविता-कानन ।
संपादन कार्य:- रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'समन्वय' का संपादन, 'मतवाला' पत्रिका का संपादन ।
साहित्यिक विशेषताएँ:-
भाव एवं विचार पक्ष:-
(1) निराला जी के काव्य में भावों और विचारों की व्यापकता और विविधता के दर्शन होते हैं ।
(2) वे एक ओर भारतीय इतिहास, दर्शन और परंपरा को रचना का आधार बनाते हैं तो दूसरी ओर आधुनिक जीवन के यथार्थ का चित्रण भी करते हैं ।
(3) छायावादी विशेषताएँ जैसे गंभीर प्रेम, प्रकृति चित्रण और रहस्यवाद का चित्रण ।
(4) शोषितों, दीन-हीन जनों और किसानों के जीवन का चित्रण ।
(5) उनकी कविताओं में छायावाद, प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद-तीनों की विशेषताएँ मिलती हैं ।

कला पक्षः-

(1) मुक्त छंद में रचना करके उन्होंने हिंदी कविता को नई दिशा दी । साथ ही उन्होने विभिन्न छंदों में भी रचना की, जिनमें उनके संगीत ज्ञान की झलक मिलती है ।

(2) उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से लेकर बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग हुआ है

(3) उन्होंने प्रबंधात्मक कविताओं से लेकर प्रगीतों तक विभिन्न काव्य रूपों की रचना की ।

(4) उनकी यथार्थवादी कविताओं में व्यंग्य की कुशल अभिव्यक्ति हुई है ।

सरोज-स्मृति

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना : यह कविता हिन्दी काव्य साहित्य का पहला शोक-गीत है । यह कविता कवि की दिवगंता पुत्री सरोज के वियोग जनित दुख पर केन्द्रित है । पुत्री की असामयिक मृत्यु ने कवि को तोड़ दिया है । उसे पुत्री के विवाह का समय याद आ रहा है । पुत्री का विवाह हर तरीके से नये ढंग का था । कवि ने इस विवाह में माता-पिता दोनों का कर्त्तव्य निभाया था । विवाह के समय पुत्री के चेहरे पर स्वाभाविक लज्जा थी। कवि को अपनी पुत्री का वधू रूप देखकर अपनी स्वर्गीया पत्नी की याद आती है पुत्री का विवाह हो गया । विवाह में न तो मांगलिक गीत गाए गए और न ही किसी परिजन को बुलाया गया ।

विवाह के बाद माँ के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा भी पुत्री को कवि ने दी और पुष्प-शैया भी सजाई । कवि को कभी शकुन्तला याद आती है तो कभी सरोज का बचपन । विवाह के कुछ समय बाद वह बीमारी के कारण ननिहाल चली गई, जहाँ उसे मामा-मामी का अगाध प्यार मिला था । वहीं उसने असमय मृत्यु का वरण किया । इस कविता में एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष तथा पुत्री के लिए कुछ न कर पाने का दु:ख भी व्यक्त हुआ है । कवि इस कविता में अपने सभी संचित कर्मों से अपनी पुत्री का तर्पण करते हैं ।

सप्रसंग व्याख्या

मुझ भाग्यहीन.....कर, करता मैं तेरा तर्पण।

संदर्भ : कवि-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
कविता-'सरोज-स्मृति'

प्रसंग : इस गीत में कवि ने अपनी पुत्री सरोज के आकस्मिक निधन पर अपनी मर्मांतक पीड़ा और वेदना व्यक्त की है ।

व्याख्या : कवि अपनी पुत्री को संबोधित करते हुए कहता है कि हे पुत्री! मुझ अभागे का एकमात्र तू ही सहारा थी। आज तुम्हारे निधन के दो वर्ष बाद तुम्हारी याद से व्याकुल होकर इस बात को प्रकट कर रहा हूँ, जो मैंने आज तक नहीं कही थी मेरे जीवन की कहानी तो दु:ख की कहानी है अर्थात् मैं आजीवन विपत्तियों का सामना ही करता आया हूँ। यह बात

आज तक मैंने किसी से भी नहीं की, तो आज कह कर भी क्या करूंगा? यदि मेरा धर्म मेरे साथ रहे, चाहे मेरे सारे कर्मों पर भले ही बिजली टूट पड़े, मैं उन्हें सिर झुका कर स्वीकार कर लूंगा। इस जीवन मार्ग पर मेरे सम्पूर्ण कार्य उसी प्रकार नष्ट हो जाएँ, जिस प्रकार शरद ऋतु में ठंड के कारण कमल का फूल नष्ट हो जाता है। भाव यह है कि भले ही अपने सद्कार्यों से मुझे यश की प्राप्ति न हो तो भी मुझे किसी प्रकार का दुख नहीं होगा। हे पुत्री। मैं आज अपने पिछले सभी जन्मों के अपने पुण्यों और संचित कर्मों को श्राद्ध के रूप में तुम्हें अर्पण कर रहा हूँ ।

काव्य विशेषताएँ:

1. इस शोकगीत में कवि का समस्त दैन्य भाव मुखरित हो उठा है । उसके जीवन की सम्पूर्ण वेदना को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है ।
2. तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली।
3. मुक्त छंद।
4. भावपूर्ण आत्मपरक शैली।
5. माधुर्य गुण।
6. करूण रस एवं वियोग वात्सल्य रस।
7. अनुप्रास तथा उपमा अलंकार।

काव्य-सौंदर्य : शृंगार रहा जो निराकार ..... स्वर पर उतरा।

भाव-सौंदर्य : (1) पुत्री के विवाह के आयोजन में पत्नी के प्रतिरूप को अपनी बेटी में निहारने का व अपनी अभावग्रस्त ज़िंदगी का वर्णन किया है।

(2) सरोज के प्रति स्नेह को व्यक्त करने के साथ उसके सौदंर्य का मनोहारी चित्रण किया है।

(3) रस - वात्सल्य, करुण।

(4) गुण - माधुर्य।

शिल्प सौंदर्य

1. भाषा - तत्सम प्रधान।
2. शैली - भावात्मक व आत्मपरक।
3. छंद - मुक्त छंद
4. स्मृति बिंब।
5. अलंकार - 1 अनुप्रास -('राग-रंग' 'रति-रूप')

2. मानवीकरण – 'प्रिय मौन ..... उतरा।'

3. विरोधाभास – 'प्रिय मौन एक संगीत भरा।'

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'आकाश बदल कर बना मही' में 'आकाश' और 'मही' शब्द किनकी ओर संकेत करते हैं?

उत्तर : 'आकाश' कवि की स्वर्गीया पत्नी की ओर तथा 'मही' नववधू के वेश में सजी कवि की पुत्री की ओर संकेत करता हैं। कवि की पुत्री विवाह पर अत्यधिक सुन्दर लग रही थी, कवि को लगता है कि मानो उसकी पत्नी का अलौकिक सौंदर्य आकाश से उतर कर पृथ्वी पर सरोज के रूप में उतर आया हो। पुत्री सरोज का रति जैसा सौंदर्य कवि को उसकी पत्नी की याद दिला रहा है।

प्रश्न 2 **:** 'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है?

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा कवि कहता है कि वह लता वहीं की थी, जहाँ पर वह कली बनकर खिली । इस पंक्ति के द्वारा इस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है कि सरोज का अपने ननिहाल में ही पालन-पोषण हुआ था । वह उसी कुल में एक कली के रूप में विकसित हुई, जिसमें उसकी माँ एक लता रूप में पल्लवित – पुष्पित हुई थी ।

प्रश्न 3 **:** 'शकुंतला' के प्रसंग के माध्यम से कवि क्या संकेत करना चाहता है?

उत्तर : सरोज के विवाह के चित्रण में कवि निराला, कालिदास की शंकुतला को स्मरण करते हैं, जिसे वन में उसके पिता कण्व ऋषि ने सारी कलाओं अर्थात् जीवन की सारी विधाओं का पाठ पढ़ाया था, उसी प्रकार निराला ने अपनी पुत्री को जीवन की सभी शिक्षाएँ स्वंय दी परंतु शकुंतला को कण्व ऋषि ने दत्तक पुत्री के रूप में पाला था वे उसके धर्म पिता थे जब कि सरोज निराला की अपनी पुत्री थी ।

सरोज स्मृति

"माँ की कुल शिक्षा .....वर महामरण"

1. इन पंक्तियों में किस समय का वर्णन हुआ है?

(i) सरोज की विदाई (ii) विवाह का अनुष्ठान

(iii) सरोज के आगमन (iv) सरोज के शृंगार

2. सरोज और शकुंतला की विदाई में किस बात की समानता थी-

(i) पितृ हृदय की व्याकुलता (ii) संबंधियों के मन का दुख

(iii) विवाह विधि की समानता (iv) कोई नहीं

3. 'वह लता वहीं की' पंक्ति में लता किसे कहा गया है?

(i) सरोज (ii) सरोज की माता

(iii) नानी (iv) सरोज की सखी

4. 'भर जलद धरा को ज्यों अपार' में अलंकार है-

(i) रूपक (ii) उपमा

(iii) विरोधाभास (iv) उत्प्रेक्षा

5. 'मामा-मामी' के साथ सरोज का कैसा संबंध व्यक्त हुआ है?

(i) अति स्नेह एवं लगाव (ii) तटस्थता

(iii) विरक्ति (iv) औपचारिक

5. इन पंक्तियों में किस प्रकार की शब्दावली की प्रधानता है?

(i) संस्कृतनिष्ठ (ii) सरल एवं बोलचाल

(iii) देशज (iv) तद्भव

पाठ-3

सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय'

(प्रयोगवाद के प्रवर्तक)

जन्म:- मार्च 1911 ई0 - कुशीनगर, उत्तर प्रदेश ।

मृत्यु:- 4 अप्रैल सन् 1987 ।

शिक्षा :- इनकी प्रारंभिक शिक्षा अंग्रेजी और संस्कृत में हुई । मैट्रिक पंजाब वि. वि., इंटर मद्रास , बी. एस. सी. पंजाब और एम. ए. लाहौर वि. वि. से किया । स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने के कारण पढाई छोड़ दी। जेल में ही इन्होंने अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया । 'अज्ञेय' इनका उपनाम है।

रचनाएँ:- आँगन के पार द्वार काव्य कृति पर सन् 1964 में इन्हें'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा'कितनी नावों में कितनी बार' कृति पर सन् 1978 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

अन्य काव्य कृतियाँ:- 'भग्नदूत' चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षणभर, बावरा अहेरी, इंद्रधनु रौंदे हुए ये, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ नदी की बाँक पर, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ आदि।

उपन्यास:- नदी के द्वीप, शेखर: एक जीवनी, अपने अपने अजनबी ।

इसके अतिरिक्त अज्ञेय ने कहानी, यात्रा-वृतांत और ललित निबंध आदि में भी अपना भरपूर योगदान दिया । इन्होंने बहुचर्चित तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक तथा चौथा सप्तक का भी संपादन किया ।

साहित्यिक विशेषताएँ:-प्रकृति प्रेम एवं मानव मन के अंतर्द्वन्द्वों के कवि । काव्य वस्तु एवं काव्य शिल्प दोनों में सुरूचि एवं शालीनता । कविताओं में वैयक्तिक स्वर की प्रधानता । प्रकृति के अद्‌भुत दृश्यों का वर्णन । नवीन उपमानों व प्रतीकों का प्रयोग । भाषा के नवीन प्रयोग । भाषा संस्कृतनिष्ठ, स्वच्छ एवं परिष्कृत खड़ी बोली है । उन्होंने शब्दों को नया अर्थ देने का प्रयास करते हुए हिंदी काव्य भाषा का विकास किया ।

यह दीप अकेला

प्रतिपाद्य:- 'यह दीप अकेला' कवि अज्ञेय जी की प्रतीकात्मक कविता है तथा एक प्रकार से उनका आत्मकथ्य है । इस कविता में 'दीपक' को एक सर्वगुण संपन्न व्यक्ति के रूप में वर्णित किया है परंतु वह अकेला है । यहाँ दीप व्यक्ति का प्रतीक है और पंक्ति समाज का / व्यक्ति बहुत कुछ होते हुए भी समाज में विलय होकर अपना और समाज दोनों का भला कर सकता है । दीप का पंक्ति में या व्यक्ति का समष्टि में विलय ही उसकी ताकत / सत्ता का सार्वभौमीकरण है, उसके जीवन की सार्थकता है।

सप्रसंग व्याख्या :-

" यह वह विश्वास ..... इसको भी भक्ति को दे दो । "

संदर्भ:- कविता:- यह दीप अकेला

कवि:- सच्चिदा नंद हीरानंद वात्सयायन'अज्ञेय'

प्रसंग: - इन पक्तियों में कवि दीप/व्यक्ति की व्यक्तिगत सत्ता की बात कर रहा है, जो पंक्ति की तुलना में एकाकी है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि सृजनशील व्यक्ति हर परिस्थिति में अपना धैर्य बनाए रखता है । वह एकाकी एवं छोटा होने पर भी विचलित नहीं होता है । उसका विश्वास स्वयं पर अडिग रूप से कायम है । समाज में उसे कई बार निंदा, उपेक्षा एवं अपमान का शिकार भी होना पड़ता है परंतु वह हार नहीं मानता । वह सतर्क व सावधान रहता है। सबको अपनाने के लिए अपनी बाँहें उठाकर तत्पर रहता है । इसकी आँखें हमेशा अनुराग की तरतला से पूरित है । यह प्रज्ञावान और जिज्ञासु है तथा जीवन के प्रति आस्तिक भाव से परिपूर्ण है।इसे समाज की वृहद आध्यात्मिक शक्ति और भक्ति के साथ जोड़ दो ताकि इसकी आस्था समाज के काम आ सके ।

काव्यगत विशेषताएँ - (1) कवि ने व्यक्ति के महत्व को समाज से जोड़कर देखा है । उसकी व्यक्तिगत सत्ता का सामाजिक सत्ता में विलय करने की ओर संकेत किया है।

(2) लाक्षणिक शैली ।

(3) 'दीप' का प्रतीकात्मक प्रयोग ।

(4) तत्सम शब्दावली की प्रधानता

(5) शब्द चयन सटीक व प्रभावपूर्ण

मैने देखा, एक बूँद

प्रतिपाद्य :- 'मैने देखा, एक बूँद' कविता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि 'अज्ञेय' की विचारोन्मुख एवं दार्शनिक कविता है यह लघुकविता जापानी भाषा की लघुकविता 'हाइकू' की तर्ज पर रची गई है । इसमें भी कवि प्रतीकों के माध्यम से गहन अर्थ की अभिव्यक्ति करता है। कविता में एक छोटी सी बूँद और सागर क्रमश: व्यक्ति और समष्टि सत्ता की ओर संकेत करते हैं । सागर की विराट सत्ता शाश्वत है और बूँद क्षणभंगुर । बूँद का क्षणभर के लिए समुद्र से अलग होकर सूरज की लालिमा से रंग जाना नाशशीलता के बोध से मुक्ति का अहसास है । इस प्रकार यहाँ क्षण के महत्व को भी प्रतिपादित किया गया है ।

काव्य सौंदर्य :-

"मैंने देखा, एक बूँद ..... नश्वरता के दाग से ।"

भाव सौंदर्य :- दार्शनिक पुट से संपृक्त इन पंक्तियों में कवि ने समुद्र से अलग हुई एक बूँद के क्षणिक अस्तित्व को चित्रित किया है । कवि मे कहता है कि बूँद के ढ़लते सूर्य की रोशनी से रँग जाने में उसे विराट के सामने लघु की नश्वरता से मुक्ति दिखाई दी । बूँद का क्षण भर के लिए सूर्य के प्रकाश से

चमक उठना उसके अस्तित्व की सार्थकता है।

रस:- शांत, अद्‌भूत

गुण:- प्रसाद

शिल्प सौंदर्य :- (1) भाषा में सरलता, सजीवता, प्रवाहमयता है ।

(2) प्रतीकों का प्रयोग

(3) लाक्षणिक शैली का प्रयोग

(4) आंतरिक लय का समावेश

(5) बूँद का प्रयोगवादी स्वरूप

प्रश्न- 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि उसे कवि ने स्नेहभरा, गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा है ?

उत्तर:- 'दीप अकेला' से आशय यहाँ व्यष्टि अर्थात् व्यक्तिगत सत्ता से है ।'दीप' को यहाँ एक सर्वगुणसंपन्न मनुष्य के रूप में वर्णित किया गया है । इस व्यक्ति में स्वतंत्रता , मौलिकता और रचनात्मकता की अद्वितीय विशेषताएँ हैं । इसमें अंधकार से लड़ने की शक्ति भी है परन्तु अपनी शक्ति और गुणों पर अंहकार के कारण मद भी है।

प्रश्न: 'यह दीप अकेला', पर इसको भी पंक्ति को दे दो के आधार पर व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे संभव है ?

उत्तर:- दीप व्यक्ति का प्रतीक है और पंक्ति समाज का । दीप को पंक्ति में स्थान देने का तात्पर्य व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ना है । यही व्यष्टि का समष्टि में विलय है । व्यक्ति के सर्वगुणसंपन्न होते हुए भी उसके अस्तित्व की सार्थकता समाज के प्रति स्वयं के विसर्जन में ही है । समाज के साथ मिलकर वह अपनी सेवाओं से समाज एवं राष्ट्र को मजबूत बनाता है।

प्रश्न :-'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए 'एक बूँद' कविता का मूल भाव बताइए ।

उत्तर:- संध्या के समय समुद्र में एक बूँद का उछलना और फिर उसी में विलीन हो जाना क्षण के महत्व को प्रतिपादित करता है । बूँद एक क्षण में ही सूरज की लाल रोशनी में रँगकर चमक उठी थी ,इसी प्रकार विराट की निराकार सत्ता के समक्ष मानव के लघु जीवन में मधुर मिलन के प्रकाश से प्रदीप्त जो क्षण आते हैं, वही इसे नश्वरता के बोध से मुक्त करके आत्मबोध से भर देते हैं ।

यह दीप अकेला

" यह दीप अकेला स्नेह भरा ..... पंक्ति को दे दो । "

(1) "पंक्ति को दे दो " के माध्यम से कवि कहना चाहता है:-

(i) अकेला व्यक्ति शक्तिहीन और अयोग्य है ।

(ii) समाज से मिलना व्यक्ति की विवशता है ।

(iii) व्यक्ति और समाज एक दूसरे से मिलकर ही सार्थकता प्राप्त करते हैं।

(iv) केवल व्यक्ति ही शक्तिशाली होता है।

(2)' व्यक्ति' और'समाज' के लिए क्रमश: प्रतीक हैं :-

(i) जन और गीत

(ii) लकड़ी और समिधा

(iii) दीप और पंक्ति

(iv) पनडुब्बा और मोती

(3)'स्नेह' शब्द में अलंकार है -

(i) यमक

(ii) अनुप्रास

(iii) श्लेष

(iv) रूपक

(4) व्यक्ति के समाज से जुड़ने पर :-

(i) केवल व्यक्ति की शक्ति बढ़ जाएगी ।

(ii) केवल समाज शक्तिशाली हो जाएगा ।

(iii) दोनों को एक दूसरे का लाभ प्राप्त होगा ।

(iv) किसी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा ।

(5) 'गर्वभरा मदमाता' का अभिप्राय है :-

(i) व्यक्ति स्वयं अपने गुणों और योग्यता पर आत्ममुग्ध है ।

(ii) व्यक्ति अभिमानी है ।

(iii) वह नशे से युक्त है ।

(iv) वह अयोग्य है ।

मैने देखा, एक बूँद

"मैंने देखा ..... नश्वरता के दाग से ।"

(1) 'एक देखा, एक बूँद' जैसी लघु कविता को किस भाषा में' हाइकू' कहा जाता है:-

(i) अंग्रेजी

(ii) जापानी

(iii) चीनी

(iv) रूसी

(2) 'मैने देखा, एक बूँद' कविता है:-

(i) दार्शनिक

(ii) प्रेम प्रधान

(iii) हास्य प्रधान

(iv) यथार्थवादी

(3) 'बूँद का ढ़लते सूरज की आग से रँग जाना' किस भाव को व्यक्त कर रहा है?

(i)बूँद की सुंदरता

(ii) सूर्य की तीव्र प्रकाश

(iii) विराट के सम्मुख लघु की नश्वरता से मुक्ति

(iv) लघु का नष्ट हो जाना

(4) 'बूँद' किसका प्रतीक है?

(i) पानी की बूँद

(ii) एक व्यक्ति

(iii) वर्षा

(iv) समुद्र का झाग

(5) ''आलोक छुआ अपनामन" के माध्यम से कवि किस ओर संकेत कर रहा है?

(i) जीवन के क्षणिक सौंदर्य

(ii) सूर्य की किरण

(iii) बूँद की चमक

(iv) सौंदर्य और प्रेम से परिपूर्ण क्षण का महत्व

पाठ-4

केदारनाथ सिंह

(नई कविता धारा के वरिष्ठ कवि)

जन्मः- 7 जुलाई 1934 ई0 - बलिया, उत्तर प्रदेश ।

मृत्युः- 19 मार्च 2018 ई0 - नई दिल्ली ।

शिक्षा एवं व्यवसायः- केदारनाथ सिंह ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. किया। 'आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की उन्होंने पहले गोरखपुर तथा उसके बाद जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया । तत्पश्चात वे स्वतंत्र लेखन में रत रहे।

रचनाएँः- अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' में उनकी कविताएँ शामिल की गईं ।

काव्य संग्रहः- अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, कबीर तथा अन्य कविताएँ ।

आलोचना ग्रंथः- कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान ।

निबंध संग्रहः- मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत ।

संपादित ग्रथः- ताना-बाना (हिंदी में अनूदित भारतीय भाषाओं की कविताएँ)

सम्मान और पुरस्कारः- (i) 'अकाल में सारस' काव्य संग्रह पर 1989 में साहित्य अकादमी पुरस्कार । (ii) मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान (iii) कुमार आशान (iv) व्यास सम्मान (v) दयावती मोदी सम्मान आदि।

साहित्यिक विशेषताएँः-

भाव व विचार पक्षः-

(1) केदारनाथ सिंह की कविताओं में विद्रोह का शांत व संयत स्वर उभरता है ।

(2) उनकी कविताओं में संवेदना तथा विचार बोध साथ-साथ चलता है ।

(3) उनकी कविताओं में रोजमर्रा के जीवन के अनुभव प्रकृति के बिंबों के साथ मिलकर उभरते हैं ।

कला पथ:-

(1) उनकी कविताओं की मुख्य विशेषता है - बिंब विधान ।

(2) उनकी कविता की भाषा सीधी - सरल एवं सटीक है ।

(3) उनकी कविताओं के शिल्प में बातचीत की सहजता और अपनापन दिखाई देता है ।

'बनारस'

प्रतिपाद्य / मूलसंवेदना

'बनारस' कविता में कवि केदारनाथ सिंह ने बनारस के सांस्कृतिक एवम् सामाजिक परिवेश का सजीव चित्रण किया है। इसमें आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति का समावेश है। मृत्यु यहाँ किसी अंत के बोध से पैदा होने वाली हताशा का कारण नहीं बनती, बल्कि जीवन को नये सिरे से जीने की सीढ़ी है। यहाँ न तो हवन कुंड में से धुँआ उठना बंद होता है और न चिताग्नि ठंडी होती है।

सप्रसंग व्याख्या : जो है वह सुगबुगाता ..... कटोरों का निचाट खालीपन

संदर्भ : कवि - 'केदारनाथ सिंह'

कविता - बनारस

प्रसंग : इसमें कवि ने बनारस शहर की जागृति, उल्लास व नवीन चेतना का बड़ा ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या : बनारस में सांस्कृतिक परिवर्तन आने पर सुगबुगाहट होने लगती है, अर्थात् वहाँ के परिवेश में जीवतंता आने लगती है और जिन वस्तुओं मे चेतना का रूप दिखाई नहीं देता, उनमें भी अंकुरण होने लगता है, अर्थात् सांस्कृतिक परिवर्तन से पूरे वातावरण में नया उल्लास व जोश आने लगता है।

आदमी जब दशाश्वमेघ घाट पर जाता है, तो उसे महसूस होता है कि गंगा के निरन्तर स्पर्श से घाट का पत्थर भी मुलायम हो जाता है अर्थात हमारे मन में व्याप्त कठोरता भी आस्था व भक्ति से परिवर्तित होकर मुलायम होने लगती है। अर्थात कोमलता में बदलने लगती है। यहाँ घाट की सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखें भी अजीब सी चमक से भरी रहती हैं। भिखारियों के कटोरों का एकदम खालीपन एक विचित्र सी चमक (भिक्षा की सामग्रियों) से भरा हुआ दिखाई देता है। अर्थात् अब उनके खाली कटोरे भी दान-दक्षिणा से लबालब भर जायेंगे।

काव्यगत विशेषताएँ:-

(1) यहाँ कवि ने बनारस शहर के जीवन का सजीव चित्रण किया है ।

(2) खड़ी बोली का प्रयोग किया है ।

(3) मुक्त छंद की रचना है ।

(4) 'बैठे बंदरों' और 'एक अजीब' में अनुप्रास अलंकार है ।

(5) और पाता ..... हो गया है' में विरोधाभास अलंकार है ।

(6) बिंब विधान - दृश्य व स्पर्श

(7) रस - शांत

सप्रसंग व्याख्याः-

''जो है वह खड़ा है ..... बिलकुल बेखबर''

संदर्भ : कविः- बनारस

कविताः- केदारनाथ सिंह

प्रसंग :- कवि ने बनारस शहर के मिथकीय रूप के प्रति आस्था, विश्वास और इसमें आधुनिकता के उदय की ओर संकेत किया है ।

व्याख्याः- कवि कहता है कि बनारस की प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति, आस्था, विश्वास आदि वहाँ के लोगों के जीवन में दृढ़ता से समाए हुए है । उसे किसी बाहरी सहारे की आवश्यकता नहीं है । शहर को ध्यान से देखने पर यही प्रतीत होता है कि वहाँ एक ओर जनसमुदाय सामूहिक रूप से पूरी आस्था व श्रद्धा के साथ साधना में रत है तो दूसरी ओर मृत चिताओं के अंतिम संस्कार की क्रिया भी अनवरत रूप से चलती रहती है ।

कवि कहता है कि बनारस में जीवित मनुष्य की आस्था व भक्ति युक्त आध्यात्मिक क्रियाएँ बिना किसी सहारे के चल रही हैं और जो नहीं है अर्थात जो मृत हो चुके हैं, उनको थामने के लिए आग, पानी तथा धुँए के तथा आदमी के प्रार्थना में उठे हाथों का सहारा मिलता है । यह शहर जीवन और मृत्यु के एक निरंतर क्रम की ओर संकेत करता हुआ दिखाई देता है ।

यह शहर आज भी एक टाँग पर खड़े साधक की तरह साधना में लीन दिखाई देता है अर्थात अपने आस्था, विश्वास और ज्ञान के प्रकाश की कामना में डूबा हुआ है और जीवन की भौतिक चिंताओं और इसके बदलते हुए रूप से अनजान है ।

काव्यगत विशेषताएँः-

(1) बनारस में सदियों पुरानी आध्यात्मिक संस्कृति आज भी दृढ़ता से कायम है, दूसरी ओर यहाँ आधुनिकता की आहट भी सुनाई देती है ।

(2) ''किसी अलक्षित.....यह शहर'' में बनारस के गहन धार्मिक वातारण का चित्रण हुआ है ।

(3) सहज सरल खड़ी बोली (4) मुक्त छंद (5) बिंब विधान (6) मानवीकरण, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, अनुप्रास अलंकार ।

काव्य सौंदर्य :-

''अगर ध्यान से देखो ..... और आधा नहीं है ।''

भाव सौंदर्यः कविः- बनारस शहर को संपूर्णता में जान लेना सरल नहीं है । समृद्ध आध्यात्मिक संस्कृति के अलावा इस शहर का एक आधुनिक रूप भी है जो भौतिकता में डूबा हुआ है।

ये पंक्तियों इसके दार्शनिक पक्ष को भी उजागर कर रही हैं । यदि इस शहर के गूढ़ दर्शन किए जाएँ तो यही प्रतीत होता है कि अपनी समृद्ध संस्कृति के बीच यह शहर जीवन और जगत के पूर्ण सत्य (अर्थात मोक्ष) की साधना में लगा हुआ है । उसकी पूर्णता की ओर अग्रसर है, पर अभी पूर्ण नहीं है ।

रस - शांत रस

गुण - प्रसाद गुण

शिल्प सौदर्यः-

(1) सरल व सहज प्रवाहमयी खड़ी बोली।

(2) व्यंजनापूर्ण शैली।

(3) मुक्त छंद।

(4) बिंब विधान।

(5) अनुप्रास अलंकार।

दिशा

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना

'दिशा' बाल मनोविज्ञान पर आधारित 'कवि केदारनाथ' की लघु कविता है। इसमें बच्चों को निश्छलता और स्वाभाविक सरलता का अत्यन्त भावपूर्ण चित्रण हुआ है। इसमें कवि पतंग उड़ाते हुए बालक से पूछता है कि बताओ हिमालय किधर है? इस पर बालक बिना कोई विचार किए बाल सुलभ सरलता से उत्तर देता है कि जिधर उसकी पंतग उड़ती जा रही है, हिमालय उधर ही है। बालक का यह सहज उत्तर कवि का मोह लेता है। कवि सोचता है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना यथार्थ है।

दिशा

काव्य सौंदर्य :-

''हिमालय किधर है ! मैने ..... जाना हिमालय किधर है ।''

भाव सौदर्य: कवि के प्रश्न का बच्चे द्वारा बाल सुलभ उत्तर देने से कवि को यह प्रतीत हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति का वस्तुओं के प्रति अपना दृष्टिकोण और अपना यथार्थ होता है । जैसे बच्चे दुनिया की हर चीज़ को अपने ढंग से देखते हैं । उनका केवल अपनी छोटी सी दुनिया, अपनी रुचि और आनंद से सरोकार होता है । कवि को यह अनुभव नवीन और बहुत प्रभावी प्रतीत होता है ।

गुण - प्रसाद रस - अद्‌भुत

शिल्प सौंदर्य :-

(1) सरस, सरल एवं प्रवाह पूर्ण खड़ी बोली।
(2) मुक्त छंद।
(3) चित्रात्मकता।
(4) पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास अलंकार।
(5) शब्द शक्ति - व्यंजना।

पठित काव्यांश

बनारस

"जो है वह सुगबुगाता है .....कटोरों का निचाट खालीपन "

1. 'पचखियाँ' शब्द का अर्थ एवं श्रेणी है-

(i) लकड़ियाँ, तत्सम **(ii) अंकुरण, तद्‌भव**
(iii) अंकुरण, देशज **(iv) सब्जियाँ, तत्सम**

2. घाट का आखिरी पत्थर किस ऋतु में मुलायम प्रतीत होता है?

(i) सर्दी **(ii) गर्मी**
(iii) वसंत **(iv) पतझर**

3. भिखारियों के कटोरों में किस वस्तु की चमक भर उठी है?

(i) श्रद्धालुओं द्वारा दी गई भिक्षा (ii) सूर्य की किरणें

(iii) गंगा के जल की (iv) धातु की

4. "जो है, वह सुगबुगाता है " में कवि किस वस्तु की ओर संकेत कर रहा है?

(i) लोगों के मन की श्रद्धा और आस्था की भावना

(ii) पेड़-पौधे

(iii) लोगों का शोर (iv) पानी का शोर

5. आदमी दशाश्वमेध पर क्यों जाता है?

(i) पर्यटन के उद्देश्य से (ii) स्नान करने

(iii) गंगा मैया के प्रति अपनी आस्था और विश्वास आर्पित करने

(iv) दूसरे लोगों की नकल करने

दिशा

"हिमालय किधर है ? .....हिमालय किधर है।"

1. बच्चे का स्कूल के बाहर पतंग उड़ाने का संकेतिक अर्थ है-

(i) उसे पतंग उड़ाने के लिए आदेश मिला है ।

(ii) पतंग उड़ाना वर्जित है।

(iii) वह बंधनमुक्त अवस्था में आनंदित है ।

(iv) वह पतंग उड़ाना सीख रहा है।

2. कविता में बालकों की किस विशेषता का वर्णन है?

(i) बालक लापरवाह होते हैं (ii) बालक जिद्दी/हठी होते हैं

(iii) बालकों की दुनिया उनकी रूचि तक सीमित होती है।

(iv) बालक प्रश्न सुनकर डर जाते हैं ।

3. 'उधर-उधर' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास (ii) उपमा

(iii) यमक (iv) पुनरूक्ति प्रकाश

4. "पतंग उड़ाना " किस प्रकार की क्रिया के लिए प्रयुक्त हुआ है?

(i) कठिन कार्य

(ii) सरल कार्य

(iii) बालक की रूचि का कार्य (iv) प्रचलित कार्य

5. कवि ने पहली बार क्या जाना ?

(i) हिमालय की दिशा (ii) बालक का ज्ञान

(iii) पतंग उड़ाना

(iv) बालक का स्वभाव एवं बालोचित यथार्थ

पाठ-6

रघुवीर सहाय

(साठोत्तरी कविता के प्रमुख कवि तथा खबरों को कविता में पिरोने वाले कवि)

जन्म - 9 दिसंबर 1929 ई0 - लखनऊ, उत्तरप्रदेश।

मृत्यु - 30 दिसंबर 1990 - नई दिल्ली।

शिक्षा और व्यवसायः- उनकी संपूर्ण शिक्षा लखनऊ में हुई । वहीं से उन्होंने 1951 में अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया। पेशे से पत्रकार। उन्होंने प्रसिद्ध पत्रिका 'प्रतीक' 'आकाशवाणी' के समाचार विभाग, 'कल्पना' तथा 'दिनमान' पत्रिकाओं का भी सपांदन किया।

रचनाएँः- उनकी कुछ कविताएँ 'अज्ञेय' द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' 1951 में प्रकाशित हुई ।

काव्य संग्रहः- सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरूद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था ।

निबंध संग्रहः- दिल्ली मेरा परदेश, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी आदि

कहानी संग्रहः- रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे हैं ।

(रघुवीर सहाय रचनावली - छः खंडों में)

पुरस्कार :- 'लोग भूल गए हैं' काव्य संग्रह पर उन्हें सन् 1984 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया ।

साहित्यिक विशेषताएँः- भाव व विचार पक्षः-

(1) इनकी रचनाओं में पत्रकार दृष्टि का रचनात्मक उपयोग किया गया है । वे अखबारी खबरों में छिपी मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति को जरूरी समझते हैं ।

(2) इनकी रचनाओं में आत्मपरक अनुभवों की जगह जनजीवन के अनुभवों को व्यक्त किया गया है ।

(3) भावुकता के बिना यथार्थ का सटीक चित्रण करते हैं ।

(4) वे कविता के भीतर कथा या वृत्तांत का भी उपयोग करते हैं ।

कला पक्षः-

(1) वे अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते हैं।

(2) उनकी भाषा सरल और सहज खड़ी बोली है परंतु उनकी भाषा गहरे अर्थो को अभिव्यक्त करती है ।

(3) उन्होंने मुक्त छंद के साथ - साथ छंद में भी काव्य रचना की है ।

(4) उनकी भाषा में व्यंग्यात्मकता का स्वर भी है ।

(5) बिंबों व प्रतीको का प्रयोग भी किया गया है ।

(क) वसन्त आया

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना

मूलभाव: इस कविता में कवि ने आधुनिक मानव के प्रकृति से संबंध टूटने पर प्रकाश डाला है । वसन्त ऋतु का आना अब प्रकृति के परिवर्तनों को अनुभव करने की अपेक्षा कैलेंडर और दफ्तर में छुट्टी के होने से जाना जाता है । कवि ने मनुष्य की आधुनिक जीवनशैली को व्यंग्य का निशाना बनाया है कि उसका प्रकृति से संबंध नहीं रह गया है । यह उसके जीवन की विडम्बना है

प्रसंग सहित व्याख्या : और कविताएँ पढ़ते ..... कि वसन्त आया।

सन्दर्भ : कवि - 'रघुवीर सहाय'

कविता - 'वसंत आया'

प्रसंग : कवि को वसन्त का आना कैलेंडर से ज्ञात होता है। प्रकृति का सौंदर्य अब उसे आकर्षित नहीं करता। प्रकृति की उपेक्षा पर कवि व्यंग्य करते हुए कहता है कि:-

व्याख्या : वसन्त के आने का पता उसे कैलेंडर से चल गया है। कविताएँ पढ़ते रहने से उसे यह तो पता था कि वसन्त ऋतु के आने पर वनों में पलाश के वृक्ष लाल-लाल फूलों से लद जाते हैं। ये पलाश वृक्ष लाल फूलों से लदे ऐसे लगते हैं, मानों वन धधक-धधक कर लपट के साथ जल रहे हों। वसन्त में आम के वृक्ष बौर के भार से लदकर झुकने लगते हैं। वसन्त के आने पर उद्यानों में विभिन्न प्रकार के सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। फूलों का रस पीकर भँवरे व कोयल मस्त होकर अपने-अपने कार्यों का प्रदर्शन करते हैं। अर्थात गीत गाने लगते है। दफ्तर की छट्टी से वंसतपंचमी का आगमन जानकर वह निराश हो जाता है कि जीवन की भागदौड़ में प्राकृतिक सौदंर्य न जाने कहाँ खो गया है। यह दिन साधारण सा दिन है जिसमें उत्सव जैसा कुछ भी नही रहा।

काव्यगत विशेषताएँ :-

(1) यह कविता आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य है ।

(2) वसन्त ऋतु के समय प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन है ।

3. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार- दहर-दहर, अपना-अपना।

4. अनुप्रास अलंकार - दहर-दहर दहकेंगें, रंग-रस

5. बिम्बों और प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग।

6. मुक्त छंद

7. सरल-सहज व प्रवाहमयी खड़ी बोली

8. देशज शब्दों व क्रियाओं का प्रयोग।

काव्य सौंदर्य :-

ऊँचे तरूवर से गिरे ..... फिरकी सी आई, चली गई।

(क) भाव सौंदर्य - कवि कहता है कि वसन्त के आने पर सड़कों पर ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से बड़े-बड़े पीले पत्ते गिरे हुए हैं। इन सूखे पत्तों पर जब पाँव पड़ते हैं, तो चरमराने की आवाज आती है। सुबह छः बजे की हवा में ऐसी ताजगी है कि जैसे वह अभी-अभी गरम पानी से स्नान करके आई हो और प्रसन्नता से खिल उठी हो। ऐसी ताजगी भरी हवा फिरकी की तरह गोल-गोल घूमती हुई आई और कवि को छूकर चली गई।

रस - अद्‌भुत
गुण - प्रसाद

(ख) शिल्प-सौंदर्य

1. भाषा - सरल-सहज व प्रवाहमयी।
2. शैली - वर्णनात्मक।
3. छंद - मुक्त छंद।
4. शब्दावली - तद्‌भव (देशज)।
5. अलंकार।

1. पुनरुक्तिप्रकाश - 'बड़े-बड़े'।
2. उपमा - 'फिरकी-सी'।
3. अनुप्रास अलंकार - 'पियराए पत्ते' 'हुई हवा'।

6. बिम्बयोजना - दृश्य, स्पर्श, श्रव्य।
7. कविता - अतुकान्त।
8. विशेषणों का सटीक प्रयोग।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1: **''और कविताएँ पढ़ते रहने से ..... आम बौर आवेंगे - में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ?**

उत्तर - कवि कहता है कि उसे कविताएँ पढ़कर ही ढ़ाक के दहकते जंगलों और आम के पेड़ पर आते बौरों के बारे में जानकारी मिली थी । यही आधुनिक मानव के जीवन की विडंबना है कि आज उसका प्रकृति से रिश्ता पूरी तरह टूट चुका है । प्रकृति में आए सहज और स्वाभाविक परिवर्तनों को भी वह पुस्तकों में पढ़कर ही जान पाता है। वह प्रकृति के सौदर्य का पुस्तकीय ज्ञान ही प्राप्त करता है, कभी उसका प्रत्यक्ष आनंद प्राप्त नहीं कर पाता ।

प्रश्न 2 : 'वसन्त आया' कविता में कवि की चिन्ता क्या है? उसका प्रतिपाद्य लिखिए?

उत्तर : कवि की चिन्ता यह है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से नाता ही टूट गया है। अब ऋतुओं का आना अनुभव की बजाय कैलेंडर से जाना जाता है। कवि को वसन्त ऋतु का आना भी कैलेंडर से पता चलता है। हमारी आधुनिक जीवन शैली ने प्रकृति से प्राप्त होने वाले आनन्द से हमें दूर कर दिया है। व्यस्तता के कारण मनुष्य को प्रकृति में होने वाले परिवर्तन पता ही नही चलते। वृक्षों से गिरते पत्ते, कूकती कोयल, फूलों के खिलने, शीतल वायु के बहने व पलाश के जंगलों से मानव को कोई मतलब नहीं।

(ख) तोड़ो

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य: यह एक उद्‌बोधनपरक कविता है । इसमें कवि धरती से मन की तुलना करते हुए नवीन सृजन के लिए प्रेरित करता है । एक ओर वह धरती पर फैले बंजर, चट्‌टानों और ऊसर भाग को तोड़कर उसे उपजाऊ बनाने की बात करता है तो दूसरी ओर मन से नकारात्मक भावों को खोदकर बाहर निकालने का आह्‌वान करता है क्योंकि ये नकारात्मक भाव नवीन सृजन में बाधक हैं । यहाँ कवि विध्वंस के लिए नहीं उकसाता अपितु नवीन सृजन के लिए प्रेरित करता है ।

सप्रसंग व्याख्या

'' ये ऊसर बंजर तोड़ो ..... गोड़ो - गोड़ो - गोड़ो''

संदर्भ:- कवि:- रघुवीर सहाय
कविता:- तोड़ो

प्रसंग:- इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बंजर धरती को तोड़कर तथा गोड़कर हरे-भरे खेतों में बदल डालो ।

व्याख्या:- कवि कहता है कि बरसों से खाली पड़ी जमीन को हरे-भरे खेतों में बदल दो । उसके ऊपर छायी कठोर परत को तोड दो । बंजर या ऊसर धरती अपने अंदर बीज का पोषण नहीं कर पाती, अत: उसकी गुड़ाई करके ही उसकी उर्वरा शक्ति को पैदा किया जा सकता है। इसी प्रकार निराशा, ऊब, खीज आदि नकारात्मक भावों को मन से बाहर निकालकर ही उसकी सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है इसलिए इन संकीर्ण भावनाओं को तोड़कर मन की गहराई को सकारात्मक और सुंदर भावनाओं से पूर्ण करो ।

काव्यगत विशेषताएँ:-

(1) सकारात्मक भावों को बार - बार मन में धारण करके ही मन को सृजनशील बनाया जा सकता है ।
(2) भाषा-सरल, सहज और प्रवाहमयी ।
(3) ओज गुण।
(4) 'ऊसर-बंजर' और 'चरती-परती' में पद मैत्री।
(5) शब्द शक्ति-लक्षणा और व्यंजना।
(6) अलंकार - अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश।

पठित काव्यांश

वसंत आया

"ऐसे, फुटपाथ पर चलते चलते .....दिखावेंगे ।"

1. फुटपाथ पर चलते- चलते कवि ने क्या जाना?

(i) वसंत ऋतु की दिनचर्या (ii) वसंत के गीत

(iii) सड़क पर पड़े हुए पत्तों का रंग

(iv) वसंत ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन

2. इससे पहले कवि को वसंत के आने की सूचना कैसे मिलती थी ?

(i) कैलेंडर से (ii) कविताएँ पढ़ने से

(iii) दफ्तर की छुट्टी से (iv) उपर्युक्त सभी

3. इसके पहले कवि वसंत के विषय में क्या नहीं जानता था ?

(i) आम पर बौर आना (ii) भौरों और कोयल का गान

(iii) ढ़ाक के जंगलों में लाल फूल खिलना (iv) वसंत ऋतु में प्रकृति के परिवर्तनों का अनुभव

4. "नंदन-वन होवेंगे यशस्वी " में शब्द शक्ति है :-

(i) अभिधा (ii) लक्षणा

(iii) व्यंजना (iv) तीनों

5. "दहर-दहर दहकेंगे, कहीं ढ़ाक के जंगल" में बिंब है :-

(i) दृश्य (ii) स्पर्श

(iii) श्रव्य (iv) घ्राण

6. इस कविता में कौन सा अलंकार नहीं है :-

(i) अनुप्रास (ii) उपमा

(iii) पुनरूक्ति प्रकाश (iv) अतिशयोक्ति

तोड़ो

"तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो .....आधे-आधे गाने ।"

1. 'सुनते हैं मिट्टी में रस है' - यहाँ 'मिट्टी में रस' से कवि का क्या अभिप्राय है?

(i) हृदय में रचनात्मकता (ii) मिट्टी में नमी

(iii) धरती में उर्वरता (iv) मनुष्य में भाव

2. 'मन के मैदानों पर व्यापी अब' का क्या कारण है?

(i) परंपराओं में बँधे होने के कारण (ii) रचनात्मकता का अभाव

(iii) नकारात्मक भावों का हावी होना

(iv) उपर्युक्त सभी

3. ' आधे-आधे गाने' से आशय हैं-

(i) संगीत में रूचि न लेना (ii) आधा गीत गाना

(iii) मन में स्पष्ट भावों का सृजन न होना (iv) गीत न सुनना

4. ' तोड़ो' कविता है-

(i) उद्‌बोधन परक कविता (ii) आवेगपूर्ण कविता

(iii) निराशा की कविता (iv) प्रेम की कविता

5. पत्थर का चट्‌टान किसके प्रतीक है?

(i) संकीर्ण विार धारा एवं नकारात्मक भावों का (ii) झुठे बंधनों का

(iii) बजंर भूमि का (iv) पहाड़ का

6. कविता में कौन सा काव्य गुण मुख्य है :-

(i) माधुर्य (ii) ओज

(iii) प्रसाद (iv) कोई नहीं

पाठ-7

तुलसीदास

(भक्तिकाल की 'सगुण भक्ति धारा' की 'रामभक्ति शाखा' के प्रतिनिधि कवि)

जन्म - सन् 1532 (जन्म स्थान के विषय में मत वैभिन्य है)

मृत्यु - सन् 1623 - काशी

बचपन, शिक्षा एवं सृजन कार्य:- तुलसीदास का बालपन में ही माता-पिता से बिछोह हो गया था । इनका बचपन कष्ट में बीता । गुरु नरहरिदास की कृपा से इन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला । काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए उन्होंने अनेक काव्यों की रचना की । इन्हें 'लोकमंगल की साधना' के कवि तथा 'समन्वय के कवि' भी कहा जाता है ।

रचनाएँ:

रामचरितमानस:- यह तुलसीदास की प्रतिनिधि रचना है तथा उनकी प्रसिद्धि का आधार है । 1574 ई0 में उन्होंने काशी में इसकी रचना की। इसमें पारिवारिक तथा सामाजिक आदर्शों की स्थापना की गई है तथा अनेक मर्मस्पर्शी प्रसंगों का सुंदर चित्रण है ।

अन्य रचनाएँ:- कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, कृष्णगीतावली, दोहावली, रामाज्ञा प्रश्नावली, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी ।

साहित्यिक विशेषताएँ:- भाव व विचार पक्ष:

(1) जीवन के सभी पक्षों का सुंदर समन्वय ।
(2) दास्य भाव अर्थात् स्वामी - सेवक भाव से ईश्वर की आराधना ।
(3) सामाजिक सद्भाव तथा मर्यादा के प्रबल समर्थक ।
(4) प्राणीमात्र के कल्याण की आकांक्षा तथा लोकमंगल की भावना ।
(5) पारिवारिक, सामाजिक तथा दार्शनिक आदर्शों की स्थापना।

कला पक्ष:- उनके काव्य में काव्य के सभी अंगों का सुंदर समन्वय (मेल) दिखाई देता है जैसे -

काव्य रूप:- प्रबंध काव्य तथा मुक्तक काव्य ।
भाषा :- अवधी, ब्रज, संस्कृत ।
छंद:- दोहा-चौपाई (कड़वक), सोरठा, कवित्त आदि ।
अलंकार:- सांग रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि ।
रस:- वीर, शृंगार, करुण, वात्सल्य, शांत आदि ।
गीतितत्व - गेयता का सुंदर समावेश है ।

(क) भरत-राम का प्रेम

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना-

'भरत-राम का प्रेम' कविता 'रामचरित मानस' के अयोध्याकांड' से ली गई है जिसमें रामवन-गमन के पश्चात भरत की व्याकुल मनोदशा एवं आत्मपरिताप का वर्णन किया गया है । भरत भावुक हृदय से बताते हैं कि राम का उनके प्रति अत्यधिक प्रेमभाव है । वे कहते हैं कि विधाता इस प्रेमभाव को सहन नहीं कर सका और माता के रूप में उसने व्यवधान उपस्थित कर दिया । राम के वन गमन से माताएँ और अयोध्या के सभी नगरवासी अत्यंत दुखी हैं । भरत इस सारे दु:ख का दोष अपने भाग्य को ही देते हैं ।

''पुलकि सरीर सभी ..... प्रेम पिआसे नैन।''

सन्दर्भः कवि - तुलसीदास

कविता- 'भरत-राम का प्रेम'

प्रसंग : इसमें कवि ने राम के वन-गमन के बाद भरत की मानसिक दशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। वे अपने प्रति राम के अनन्य प्रेम को याद करते हुए अपने हृदय की वेदना को मुखरित करते हैं और राम को वापिस अयोध्या लौटा ले जाने के लिए चित्रकूट आते हैं।

व्याख्या : चित्रकूट में आयोजित सभा में राम अपने भाई भरत की प्रशंसा करते हैं तो मुनि वशिष्ठ भरत से भी अपने मन की बात व्यक्त करने का आग्रह करते हैं। यह सुनकर भरत का शरीर रोमांचित हो जाता है और वे सभा में खड़े हो जाते हैं। उनके कमल के समान नयनों से आँसुओं की बाढ़ सी आ जाती है। वे कहते हैं कि मुझे जो कुछ भी कहना था, वह तो मेरे गुरुजन पहले ही कह चुके हैं। इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ। मैं अपने स्वामी श्री राम का स्वभाव बहुत अच्छे से जानता हूँ। वे अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा और प्यार रहा है। मैंने खेल में भी कभी उनकी खीझ नहीं देखी। मैं बचपन से ही उनके साथ रहा हूँ और उन्होंने भी मेरे मन को कभी ठेस नहीं पहुँचाई। मैंने प्रभु की कृपा को भली-भाँति देखा है। वे स्वयं खेल में हारकर मुझे जिताते रहे हैं।

मैंने सदा उनका सम्मान किया हैं और प्रेम और संकोचवश उनके सामने कभी भी मुँह नहीं खोला। मैं अपने भाई व स्वामी राम से इतना अधिक प्रेम करता हूँ कि मेरे नेत्र आज तक प्रभु राम के दर्शन से तृप्त नहीं हुए हैं।

काव्यगत विशेषताएँ:- 1. इन पंक्तियों में भरत का राम के प्रति अनन्य प्रेम अभिव्यक्त हुआ है।

2. अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

3. माधुर्य गुण एवं अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है।

4. 'नीरज-नयन' तथा 'नेह-जल' में रूपक अलंकार है।

5. दोहा-चौपाई छंद है।

6. पूरे पद में संगीतात्मकता की छटा है।

7. काव्यांश में अनुप्रास अलंकार की छटा देखते ही बनती है।

काव्य सौंदर्य

मातु मंदि मैं साधु सुचाली .... संबुक काली।।

भाव सौन्दर्य : भरत इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि उन्हें यह अच्छा नहीं लग रहा कि वे यह कहें कि कौन अच्छे स्वभाव का है और कौन अच्छे स्वभाव का नहीं हैं। इसका निर्णय दूसरे लोग करते हैं। अर्थात् वे अपनी माता कैकयी के लिए अपशब्दों का प्रयोग करे और स्वयं को अच्छे स्वभाव का कहें, ऐसी बातें मन में लाना भी सबसे बड़ा अपराध है। भरत स्वप्न में भी किसी को दोष नहीं देना चाहते। इसे वे उदाहरण से स्पष्ट करते हैं कि कोदव (निम्न श्रेणी का अनाज) की बाली से उत्तम अनाज प्राप्त नहीं हो सकता और काली घोंघी में भी उत्तम कोटि का मोती नहीं मिल सकता। वास्तव में मेरे दुर्भाग्य से ही मुझे यह दु:ख मिला है।

रस - करुण

गुण - माधुर्य

शिल्प सौंदर्य

1. भाषा - अवधी ।
2. शैली - दोहा - चौपाई शैली/कड़वक शैली ।
3. छंद - छंदबद्ध ।
4. अलंकार - 1. 'मातु मंदि', 'साधु सुचाली', 'कोटि कुचाली' - अनुप्रास । अलंकार ।
   2. मुकुता..... काली - दृष्टांत अलंकार ।

(ख) पद

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना: ये पद 'तुलसीदास' की काव्य रचना 'गीतावली' से लिए गए हैं । इन पदों में कवि ने श्री राम के वनगमन के पश्चात् माता कौशल्या के हृदय की वियोग दशा और पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है । प्रथम पद में वे राम के बचपन की वस्तुओं को हृदय से लगा कर पुत्र की निकटता का अनुभव करती हैं । वे इतनी बेसुध हैं कि उन्हें कुछ ध्यान नहीं रहता जब उन्हें राम के वनगमन की स्मृति हो आती है तो वे चकित होकर चित्र के समान स्थिर हो जाती हैं ।

दूसरे पद में माँ कौशल्या राम के वियोग में दुखी अश्वों को देखकर राम से एक बार पुन: अयोध्या लौट आने का आग्रह करती हैं ।

काव्य सौंदर्य :-

''भरत सौगुनी.....इन्हकों बड़ो अंदेसो''

भाव सौंदर्य:- यहाँ कवि ने माता कौशल्या द्वारा राम के वियोग में दुखी घोड़ों को देखकर पुत्र- श्री राम से एक बार पुन: अयोध्या लौट आने का आग्रह करने का सहज, सुदंर व मर्मस्पर्शी वर्णन किया है ।

रस:- वियोग वात्सल्य रस गुण - माधुर्य

शिल्प सौंदर्य :- (1) ब्रज भाषा (2) सहज व भावानुकूल भाषा
(3) पद छंद (4) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा अलंकार

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'मही सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति द्वारा भरत के विचारों, भावों का स्पष्टीकरण कीजिए?

उत्तर : इस पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि राम के वन गमन व पिता की मृत्यु, माताओं की दशा के लिए भरत स्वयं को ही दोषी मानते हैं। पिता की मृत्यु व राम को वनवास भी उनके कारण ही हुए हैं। इसके लिए वह स्वयं को अपराधी मानते हैं और खेद प्रकट करते हैं।

प्रश्न 2. 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का अर्थ यह है कि जब माता कौशल्या को राम की याद आती है तो उनकी स्थिति एक जड़ चित्र के समान हो जाती है जो हिलती-डुलती नहीं है। वे राम की वस्तुओं को देखकर हैरान थी किन्तु जैसे ही कौशल्या का भ्रम टूटता है तो उसकी स्थिति चित्र के समान हो जाती है। जैसे ही उन्हें राम के वन जाने की बात याद आती है वैसे ही एक चित्र की भांति खड़ी रह जाती है।

प्रश्न 3. गीतावली के पद 'जननी निरखति बान धुनहियाँ' के आधार पर राम के वन गमन के पश्चात माँ कौशल्या की मन: स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर : राम के वन चले जाने के बाद राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है। ऐसे में माता कौशल्या बहुत व्यथित रहने लगती है। घर में जहाँ कहीं भी उन्हें राम के बचपन की कोई वस्तु दिखाई देती है तो उन्हें राम की याद सताने लगती है। वे राम के बचपन के दिनों के खेलने वाले धनुष-वाण को देखकर उठा लेती है और बार-बार राम को याद करते हुए उन्हें अपने हृदय और नेत्रों से लगाती हैं। इसी प्रकार से बालक राम के नन्हें-नन्हें पैरों की सुंदर जूतियाँ देखकर भी उनका हृदय उमड़ पड़ता है और उन्हें भी वे अपने हृदय और नेत्रों से लगाती है।

पठित काव्यांश

तुलसीदास- 'भरत राम का प्रेम'

"बिधि न सकेउ सहि .....जननि कहि काकू । "

1. भरत और राम के बीच का स्नेह किसे सहन नहीं हुआ?

(i) राजा **(ii) कैकेयी**

(iii) विधाता **(iv) लोग**

2. परिवार में आए सभी दुखों का कारण भरत किसे मानते है?

(i) कैकेयी को **(ii) दशरथ को**

(iii) स्वयं को **(iv) अपने दुर्भाग्य को**

3. ' अभाग- उदधि ' में अलंकार है :-

(i) यमक **(ii) रूपक**

(iii) उत्प्रेक्षा **(iv) श्लेष**

4. कविता किस छंद में लिखी गई है?

(i) कवित्त **(ii) सवैया**

(iii) दोहा-चौपाई (कड़वक) **(iv) हरिगीतिका**

5. "मुकुता प्रसव कि संबुक काली " कहकर भरत का आशय यही है :-

(i) उनकी ममता पूर्णतः दोषमुक्त है

(ii) माता के दुर्गुण भरत में व्यक्तित्व में भी समाहित हैं

(iii) माता के ही कारण भरत दोषी सिद्ध हुए हैं

(iv) माता पिता दोनों दोषी हैं

पाठ-8

मलिक मुहम्मद जायसी

(भक्तिकाल की निर्गुणभक्ति धारा की प्रेममार्गी शाखा के कवि)

जन्म -सन् 1492 में उत्तरप्रदेश के जायस गाँव में हुआ । इसी कारण वे जायसी कहलाए ।

मृत्यु - सन् 1542

व्यक्तित्व- जायसी सूफी प्रेममार्गी कवि थे जो प्रेम के माध्यम से परमात्मा की उपासना करते थे। जायसी अपने समय के सिद्ध फकीरों में गिने जाते थे । वे देखने में कुरूप थे । फिर भी उनके भीतर अत्यंत आत्मविश्वास युक्त विनम्रता मौजूद थी । सैयद अशरफ और शेख बुरहान उनके गुरु थे ।

रचनाएँ - उनकी 3 रचनाएँ ही प्रामाणिक मानी जाती हैं :-

(1) पद्मावत (2) अखरावट (3) आखिरी कलाम

साहित्यिक विशेषताएँ :- भाव पक्ष

(1) उनका 'पदमावत्' सूफी प्रेमाख्यानक परंपरा का सर्वश्रेष्ठ काव्य माना जाता है ।

(2) इसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम अर्थात् ईश्वरीय प्रेम की ओर संकेत किया गया है । इसमें रत्नसेन 'आत्मा' का, पदमावती 'परमात्मा' का, हीरामन तोता 'गुरु' का, नागमती 'सांसारिक मोहमाया' का प्रतीक है ।

(3) इसमें लोकप्रचलित प्रेम कथा को आधार बनाया गया है ।

(4) इनके काव्यों में एक मिली-जुली संस्कृति के दर्शन होते हैं ।

कला पक्ष:-

(1) लोक प्रचलित ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग ।

(2) लोक प्रचलित मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग ।

(3) फारसी की मसनवी शैली का प्रयोग ।

(4) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग ।

(5) दोहा-चौपाई (कड़वक) छंद का प्रयोग ।

बारहमासा

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना:- जायसी द्वारा रचित प्रेमाख्यानक महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' का एक भाग हैं इसमें नागमती के विरह का वर्णन है । नागमती चितौड़ के राजा रत्नसेन की पत्नी है । राजा सिंहल द्वीप की राजकुमारी 'पद्मावती' की सुन्दरता पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए नागमती को छोड़कर चला जाता है। राजा को पद्मावती के बारे में हीरामन तोते ने बताया है । यह तोता पद्मावती का तोता है। इस काव्य में कवि ने लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम को अभिव्यक्ति दी है। प्रेम द्वारा ईश्वर प्राप्ति पर बल दिया है। यहाँ रत्नसेन 'आत्मा' का प्रतीक है जो गुरु (हीरामन तोता) ज्ञान द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिए (पद्मावती) चल देता है। परन्तु ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बहुत कठिन है; अत: मार्ग में सांसारिक मोह-माया (नागमती) रास्ता रोकने का प्रयास करती हैं। इस काव्य पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

प्रश्न : प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

अगहन देवस घटा ..... धुआं हम लाग।

सन्दर्भ: कवि - 'मलिक मुहम्मद जायसी'।

कविता - 'पद्मावत' (महाकाव्य) से 'बारहमासा'।

प्रसंग : इसमें कवि ने नागमती के विरह का वर्णन किया है जिसे उसका पति पद्मावती से शादी करने के लिए छोड़कर चला जाता है।

व्याख्या : कवि नागमती के माध्यम से अगहन मास में उसके विरह का वर्णन करते हुए कहता है कि इस मास में दिन छोटा और रातें लम्बी हो गई हैं, जिससे नागमती की विरह वेदना भी लम्बी हो गई है । वह विरह की अग्नि में रात और दिन ऐसे जलती है, जैसे दीपक में बाती जल रही है । उसके लिए यह विरह वेदना असहनीय है । घर-घर में स्त्रियाँ रंगीन वस्त्रों से स्वयं को सुसज्जित कर रही हैं पर नागमती को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है । वह श्रृंगार नहीं करती है, क्योंकि उसे लगता है कि उसका रंग, रूप-सौदंर्य उसके पति के साथ चला गया है और उसका पति उसे एक बार छोड़कर ऐसा गया कि वापिस नहीं आया, यदि वह वापिस आ जाता है तो उसकी खुशियाँ उसका रूप सौंदर्य भी वापिस आ जायेगा । सर्दी भी उसकी विरह की अग्नि को शांत करने की अपेक्षा और अधिक बढ़ा रही है । विरह की आग में उसका यौवन रुपी जीवन भस्म हो रहा है। भँवरे और कौए के माध्यम से अपने पति को संदेश भेजती है कि उनकी पत्नी विरह की आग में जलकर मर गई है, उसी आग के निकले धुएँ के प्रभाव से वे भी काले हो गए हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

1. नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण है।

2. 'दूभर दुख', 'किमि काढ़ी', 'रूप-रंग', 'दु:ख-दग्ध' में अनुप्रास अलंकार है।

3. 'जरै बिरह ज्यों दीपक बाती'- उदाहरण अलंकार, उपमा ।

4. भाषा - ठेठ अवधी।

5. छंद - दोहा-चौपाई (कड़वक)

6. शैली - चित्रात्मक।

7. रस - वियोग श्रृंगार।

सप्रसंग व्याख्या

फागुन पवन झकौरे ..... कंत धरै जहँ पाउ।

सन्दर्भ: कवि - मलिक मुहम्मद जायसी।

कविता - 'पदमावत' (महाकाव्य) से 'बारहमासा।'

प्रसंग : इसमें कवि ने फागुन मास में नागमती की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन किया है।

व्याख्या : नागमती अपनी वेदना का वर्णन करते हुए कहती है कि फागुन मास में तेज और ठंडी हवाएँ चल रही है, जिससे सर्दी चार गुना बढ़ गई है। वह वियोग के कारण बहुत कमजोर और पीली पड़ गई है, जिससे इस माह में चलने वाली तेज हवाएँ भी वह सहन नहीं कर पा रही है। पेड़ों से पुराने पत्ते गिर गए हैं, ढाक के वन पत्ते रहित हो गए हैं वहीं दूसरी ओर पेड़ों पर नयी कोपलें फूट रही हैं। नये पत्ते और फूल आ रहे हैं। चारों ओर वनस्पति और लोगों में नया उल्लास भर आया है। सब इस मास में आनन्द के साथ चाचरी (फाग के माह में केवल दम्पत्ति द्वारा किया जाने वाला नृत्य) खेल रहे हैं। परन्तु नागमती को यह सब वस्तुएँ कष्ट दे रही हैं क्योंकि उसका पति उसके साथ नहीं है। अत: वह किसके साथ होली खेले। वह कहती है कि यदि उसके प्रिय को उसका विरह में इस प्रकार जलना अच्छा लगता है तो वह उसकी खुशी के लिए कोई शिकायत नहीं करेगी, ऐसे ही विरह में मर जाएगी। बस उसकी यही एक अन्तिम इच्छा है कि वह मरने से पहले एक पति के चरणों का स्पर्श करना चाहती है।

काव्यगत विशेषताएँ

1. नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया हैं
2. भाषा - ठेठ अवधी।
3. छंद - दोहा चौपाई।
4. रस - वियोग श्रृंगार।
5. अलंकार - उपमा, रूपक, अनुप्रास।
6. प्रकृति का सजीव चित्रण।
7. प्रेम की उत्सर्ग भावना, पूर्ण समर्पण का भाव है।

प्रश्न : काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) रक्त ढरा मांसू ..... आई समेटहु पंख।

भाव सौन्दर्य : कवि ने नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया है। विरह में उसका सारा रक्त आंसू बनकर बह रहा है। सारा मांस गल कर गिर रहा है और हड्डियाँ सूखकर शंख के समान हो गई हैं। अर्थात् वह मृत्यु को प्राप्त होने वाली है। वह सारस पक्षी के समान मरने से पहले बस एक बार अपने पति से मिलना चाहती है कि उसका पति सारस बनकर आए उसे सम्भाल ले।

- रस - वियोग श्रृंगार
- गुण - माधुर्य

शिल्प सौंदर्य

1. भाषा - ठेठ अवधी।
2. शैली - ऊहात्मक।
3. रस - वियोग श्रृंगार रस।
4. छंद - दोहा चौपाई, वीभत्स।
5. अलंकार - अतिशयोक्ति।

6. छंद कविता - तुकान्त

7. गुण - माधुर्य

प्रश्न 1. माघ महीने में विरहिणी को क्या अनुभूति होती है? (बारहमासा)

उत्तर : माघ महीने मे बहुत भंयकर सर्दी पड़ने लगती है। प्रियतम के वियोग में विरहिणी नायिका के दिन काटे नहीं कटते हैं। माघ की वर्षा के समान उसकी आखों से निरंतर विरह के आँसू बहते रहते हैं। इन आँसुओं से भीगे वस्त्र उसके शरीर को बाण के समान चुभते रहते हैं। माघ की तेज हवा और ओलों की वर्षा उसके जीवन को और भी अधिक कष्टप्रद बना देती है लेकिन प्रियतम के वियोग में उसका जीवन रसहीन हो गया है। वह दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। उसका शरीर तिनके के समान हल्का हो गया है। वह तो विरह रूपी अग्नि में जलकर राख के समान उड़ने के लिए तैयार है।

प्रश्न 2. वृक्षों से पत्तियाँ तथा वनों से ढ़ाँखे किस माह में गिरते हैं? इससे विरहिणी का क्या संबंध है ?

उत्तर - शिशिर ऋतु के माघ और फागुन के महीने में वृक्षों से पत्तियाँ और वनों से ढ़ाँखे गिरते हैं । पेड़-पौधों का सौंदर्य समाप्त हो जाता है । अपने प्रिय के विरह में जलती नायिका का शरीर भी पुराने पत्तों की तरह पीला पड़ गया है अर्थात् सौंदर्य विहीन हो गया है । विरह रूपी पवन उसके क्षीणकाय शरीर को अपने आघात से पीड़ा पहुँचा रही है ।

पठित काव्यांश

बारहमासा

"एहि मास उपजै रस .....चहै उड़ावा झोल ।"

1. कौन से मास में वनस्पति में नवीन रस उत्पन्न होता है?

(i) फागुन (ii) माघ

(iii) पौष (iv) अगहन

2. "रस मूलू" के माध्यम से विरहिणी के मन के कौन से भाव की ओर संकेत किया है?

(i) शृंगार (ii) दुख

(iii) आश्चर्य (iv) शांत

3." नैन चुवहिं जस माँहुट नीरू" में आँसुओं की समानता किस वस्तु से की गई है ?

(i) नदी का जल (ii) पसीना

(iii) उषा का जल (iv) माघ मास में होने वाली वर्षा

4. कविता की भाषा है :-

(i) ब्रज (ii) देशज

(iii) परिनिष्ठित अवधी (iv) बोलचाल की अवधी

5. नागमती के विरह वर्णन की विशेषता है :-

(i) अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन (ii) ऊहात्मकता

(iii) समर्पित प्रेम (iv) उपर्युक्त सभी

6. **इस कविता का मुख्य रस है:-**

(i) शृंगार (ii) वियोग शृंगार

(iii) संयोग शृंगार (iv) करूण

7. **'सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा' में अलंकार है:-**

(i) अनुप्रास, रूपक (ii) रूपक, विरोधाभास

(iii) यमक, विरोधाभास (iv) श्लेष, रूपक

ई सामग्री - (लिंक)

मलिक मुहम्मद जायसी - 22 दिसंबर 2020 - http://youtu.be/8DPafr-SaM8

II - 29 दिसंबर 2020 - http://youtu.be/FluOD-ZWJMC

पाठ-9

विद्यापति

(आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि)

जन्म :- अधिकांश विद्वानों के अनुसार सन् 1380 में मधुबनी (बिहार) के बिस्पी गाँव में हुआ।

मृत्यु - सन् 1460।

शिक्षा और कार्य:- ये बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और तर्कशील थे। साहित्य, संगीत, ज्योतिष, दर्शन, इतिहास, न्याय, भूगोल आदि के प्रकांड पंडित थे। उन्हें संस्कृत, अपभ्रंश, मैथिली तथा अन्य अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वे मिथिला नरेश के राजकीय सलाहकार थे।

रचनाएँ:- कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, भूपरिक्रमा, लिखनावली। 'पदावली' ग्रंथ इनकी प्रसिद्धि का प्रमुख आधार है। आज भी मिथिला के सांस्कृतिक अवसरों पर ये पद गाए जाते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ :-

भाव पक्ष:-

1. 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' जैसी रचनाओं पर दरबारी संस्कृति का प्रभाव है।
2. 'पदावली' के पदों में भक्ति और शृंगार का वर्णन है।
3. राधा कृष्ण के प्रेम को मानवीय (लैकिक) प्रेम का आधार बनाया है।
4. पदावली में तीन प्रकार के पद संकलित है-'लौकिक प्रेम संबधी पद' 'देवी-देवताओं की भक्ति संबंधी पद', 'प्राकृतिक सौंदर्य संबंधी पद'।
5. उनके पदों में प्रेम और सौदंर्य तथा लोक संस्कृति की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।

कला पक्ष:-

1. संस्कृत, अपभ्रंश और मैथिली-तीनों भाषाओं में रचना की।
2. अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग।
3. मुहावरेदार भाषा का प्रयोग।
4. शृंगार रस, शांत रस, अद्भुत रस आदि का चित्रण।
5. माधुर्य गुण का सुंदर चित्रण।

पद

प्रतिपाद्य/मूलसंवेदना

इस पाठ में राधा की विरह वेदना और प्रेम के अनिर्वचनीय रूप का वर्णन है। कृष्ण राधा को छोड़कर मथुरा में जा बसे हैं और एक बार भी उनसे मिलने गोकुल नहीं आए हैं। राधा उनके वियोग में व्याकुल हैं, उनसे अब कृष्ण के बिना रहा नहीं जाता है।

उनकी विरह व्यथा का अलग-अलग पद के द्वारा वर्णन किया गया है। प्रेम के अनुभव को प्रति पल नवीन होने वाली अनुभूति बताया गया है।

प्रश्न : प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

(क) सखि हे कि पुछसि ..... लाखे न मीलल एक।

सन्दर्भ : कवि-विद्यापति।

कविता-विद्यापति की पदावली।

प्रसंग : इस पद में नायिका अपने प्रियतम को जन्म-जन्म से देखते रहकर भी तृप्त न होने की बात अपनी सखी को बताते हुए नायक के प्रति अपने अनन्य प्रेम को व्यक्त करती है।

व्याख्या : नायिका और नायक एक-दूसरे से लंबे समय से प्रेम करते हैं। नायिका और नायक के इस प्रेम को उसकी सखी भी जानती है। अपनी इस उत्सुकतावश वह नायिका से इसका अनुभव पूछती है। तब नायिका अपने प्रेम का वर्णन करती हुई कहती है कि हे सखी! मुझसे मेरे प्रेम के अनुभव के बारे में क्या पूछती है अर्थात् मैं इसके आनंद और सच्चे स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकती।प्रेम तो क्षण-क्षण रूप बदलने वाला होता है, इसलिए यह अवर्णनीय है। मैं जन्मभर प्रिय का रूप निहारती रही, किंतु मेरी आँखें तृप्त नहीं हुई। उनके मधुर वचनों को कानों से सुनती रही, किंतु कानों को संतुष्टि नहीं हुई। प्रियतम के साथ प्रेम क्रीड़ा करते हुए भी यह नहीं समझ सकी कि मिलन का आनन्द क्या होता है। लाखों-लाखों युगों तक मैंने अपने प्रियतम को हृदय में रखा किंतु फिर भी मेरे प्रेम को पूर्णता प्राप्त नही हुई। हे सखी! मेरी बात ही क्या, कितने रसिक लोगों ने इसको अनुभूत किया, किंतु इसका पूर्ण अनुभव किसी को नहीं हुआ। विद्यापति जी कहते है कि लाखों में एक भी नहीं मिला जो कृष्ण प्रेम की पूर्णता को प्राप्त कर चुका है। वस्तुतः यह प्रेम शाश्वत है।

काव्यगत विशेषताएँ:

1. कवि ने प्रेमानुभूति को व्यक्तिगत अनुभव बताया है, जो अलौकिक एवम् स्वयं अनुभव करने योग्य है।

2. शृंगार रस का वर्णन है।

3. मैथिली भाषा है।

4. माधुर्य गुण विद्यमान है।

5. अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, यमक, विरोधाभास, अतिश्योक्ति अलकारों का प्रयोग हुआ है।

6. छंद पद है।

(क) जनम अबधि हम.....पथ परस न गेल।

भाव सौन्दर्य : विद्यापति नायिका के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि सच्चे प्रेम में कभी भी तृप्ति नहीं मिलती है। नायिका उसे बताती है कि वह जन्म-जन्मांतर से अपने प्रेमी को निहारती चली रही है, परन्तु अभी तक उसके नेत्रों को उसे देखने की इच्छा है। वह अपने प्रियतम के मीठे बोलों को सुनती आ रही है, फिर भी वह उसके लिए नवीन है। अर्थात् वह कहना चाहती है कि सच्चे प्रेम में मिलन के बाद भी अतृप्ति बनी रहती है।

रस - शृंगार

गुण - माधुर्य

शिल्प सौंदर्य

1. छंद कविता - तुकान्त।

2. भाषा - मैथिली।

3. 'स्रवनहि सूनल स्रुति' व पथ परस' में अनुप्रास अलंकार है।

4. शैली - चित्रात्मक, बिम्बात्मक।

प्रश्न 1 : कवि 'नयन न तिरपित भेल' के माध्यम से विरहिणी नायिका की किस मनोदशा को व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर : कवि यहाँ यह बताना चाहता है, कि सच्चे प्रेम में व्यक्ति कभी भी तृप्त नहीं होता है। नायिका भी जन्म-जन्मांतर से नायक के साथ है, फिर भी वह उससे एक क्षण के लिए भी अलग नहीं होना चाहती है और यही प्रेम का आदर्श रूप भी है। प्रेम हमेशा नवीन रहता है। उससे तृप्त होना संभव नहीं है। यही नायिका की भी मनोदशा है।

प्रश्न 2. 'सेह पिरित अनुराग बखानिअ तिल - तिल नूतन होए' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : कवि का आशय यह है कि प्रेम स्थिर नहीं है और यह अनुभव की चीज़ है, वर्णन की नहीं। प्रेम में प्रतिपल नवीनता आती रहती है, अर्थात् प्रेम प्रतिपल और मजबूत, गहरा और नवीन होता रहता है। अत: इसका वर्णन सम्भव नहीं है। इसे तो केवल महसूस किया जा सकता है।

प्रश्न 3. **कवि ने सावन मास में नायिका की किस मनोदशा का वर्णन किया है?**

उत्तर - कवि ने सावन मास में विरहिणी नायिका के हृदय की पीड़ा को व्यक्त किया है । वह प्रियतम के बिना पूरे भवन में अपने अकेलेपन की पीड़ा को सहन नहीं कर पाती है । वह मानती है कि इस दुनिया में कोई भी मनुष्य अन्य व्यक्ति का दुख नही समझ सकता । उसका मन भी उसके पास नहीं है क्योंकि वह भी हर समय प्रिय के ध्यान में लगा रहता है । उस हृदय वियोग के इस असहनीय दुख से पीड़ित है ।

प्रश्न 4. 'गोकुल.....अप जस तेल' प्रथम पद के आधार पर इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें

उत्तर - विरहिणी नायिका अपने हृदय की पीड़ा को प्रकट करते हुए कहती है कि उसके मन को हर कर (चुराकर) उसका प्रियतम गोकुल छोड़कर मथुरा में जाकर बस गया है । गोकुल में मिले अपार प्रेम को भुलाकर और गोकुल को त्यागकर उन्होंने अपनी हृदय हीनता का परिचय दे दिया है । मथुरा में जा बसने के इस कृत्य के कारण उन्हें बहुत अपयश (बदनामी) मिला है ।

पठित काव्यांश

पदावली

"सेह पिरिति .....अनुभव काहू न पेख ।"

1. नायिका प्रेम के अनुभव को प्रकट करने में असमर्थ है क्योंकि :-

(i) प्रेम का अनुभव अच्छा नहीं है ।

(ii) नायिका व्यस्त है ।

(iii) प्रेम प्रतिपल नवीन रूप धारण करता है ।

(iv) नायिका अशिक्षित है ।

2. "सच्चे प्रेम की मुख्य विशेषता है:-

(i) इसमें एकाधिकार का भाव समाहित होता है ।

(ii) इसमें अतृप्ति बनी रहती है ।

(iii) इसमें परस्पर ईर्ष्या बलवती होती है ।

(iv) इसमें प्रतिस्पर्धा जागृत होती है ।

3." तइओ हिय जरनि न गेल" प्रेम मनुष्य को कौन सी संतुष्टि प्रदान करता है?

(i) उसे वासना-विकार रहित अलौकिक सुख प्राप्त होता है ।

(ii) वह दूसरों से बड़ा बन जाता है ।

(iii) वह अधिक सुंदर और शक्तिशाली हो जाता है ।

(iv) वह सफलता प्राप्त कर लेता है ।

4. 'विदगध जन' से अभिप्राय है :-

(i) ज्ञानी (ii) रसिक

(iii) विद्वान (iv) उपर्युक्त सभी

5. इन पंक्तियों में कौन सा अलंकार मुख्य रूप से प्रयुक्त हुआ?

(i) अनुप्रास (ii) पुनरूक्ति प्रकाश

(iii) रूपक (iv) यमक

पाठ-11

घनानंद

(रीतिकाल की रीतिमुक्त स्वछंद काव्यधारा के प्रमुख कवि)

जन्म:- सन 1673 - दिल्ली

मृत्यु:- सन् 1760 ।

काव्य का आधार :- 'प्रेम की पीड़ा' इनके काव्य का आधार थी । कहते हैं कि इन्हें सुजान नाम की एक स्त्री (नर्तकी) से प्रेम था । उसी के प्रेम के कारण ये बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला के दरबार में बेअदबी कर बैठे जिससे नाराज हो बादशाह ने उन्हें दरबार से निकाल दिया परंतु वे सुजान को नहीं भूल पाए और सुजान के नाम का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हुए काव्य रचना करते रहे । वे वृंदावन चले गए और निंबार्क संप्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन निर्वाह करने लगे ।

साहित्यिक विशेषताएँ :- भाव पक्ष -

(1) उनकी रचनाओं में प्रेम का गंभीर, निर्मल और व्याकुल कर देने वाला रूप व्यक्त हुआ है । इसलिए इन्हें 'साक्षात रस मूर्ति' भी कहा गया ।

(2) उनकी कविताओं में वियोग शृंगार रस का मार्मिक चित्रण हुआ है ।

(3) लौकिक प्रेम और ईश्वर भक्ति का सुंदर समन्वय ।

(4) प्रेम के चित्रण में बाहरी सौंदर्य की अपेक्षा मन की गहन अनुभूतियों का चित्रण ।

कला पक्ष :-

(1) उनकी भाषा साहित्यिक ब्रज भाषा है ।

(2) अलंकारों का सुदंर प्रयोग ।

(3) उनकी कविताओं में सहजता के साथ वचन वक्रता का सुंदर मेल है ।

(4) लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग ।

(5) मुक्तक काव्य की रचना अधिक की है ।

रचनाएँ :-

प्रमुख काव्यग्रंथ :- सुजानसागर, विरहलीला, कृपाकंद निबंध, रसकेलिवल्ली आदि ।

कवित्त / सवैया

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना

पाठ्यक्रम में घनानंद द्वारा रचित दो कवित्त तथा दो सवैये दिये गए हैं। प्रथम कवित्त में कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान को सम्बोधित करते हुए कहा है कि वह उससे मिलने के लिए व्याकुल है। उसकी इच्छा है कि उसकी प्रेमिका एक बार अवश्य ही उसे दर्शन दे क्योंकि उसके प्राण इसी आस में अटके हुए हैं। रीतिकालीन कवि अपनी कविताओं में शृंगार का माध्यम राधा और कृष्ण के प्रेम को बनाते हैं। कवित्त में दूसरा अर्थ भी निकलता है कि सुजान शब्द यहाँ कृष्ण के लिए आया है। अर्थात् घनानन्द चाहते हैं कि मेरी भक्ति सफल हो जाये अगर प्राण निकलने से पहले सुजान (कृष्ण) दर्शन दे दें।

प्रथम सवैये में कवि ने संयोग और वियोग की परिस्थितियों का तुलनात्मक किया है। संयोग के समय के सुखद पल वियोग के क्षणों में दुखदायी बन जाते हैं। दूसरे सवैये में कवि कहते हैं कि उसने हृदय के समस्त प्रेमभावों से युक्त ऐसा हृदयरूपी प्रेम पत्र लिखा था, जो पहले कभी किसी ने नहीं लिखा था। परन्तु उसकी प्रेमिका सुजान ने उसे पढ़ा ही नहीं बल्कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

संप्रसंग व्याख्या : बहुत दिनान.....सँदेसो लै सुजान को।

संदर्भ : कवि – घनानन्द।

कविता – कवित्त

प्रसंग : इसमें कवि चाहता है कि उसके प्राण निकलने से पहले सुजान उसे दर्शन दे दें ताकि वह इस संसार से विदा ले सके।

व्याख्या : कवि घनानंद जी कहते हैं कि बहुत समय बीत गया है लेकिन सुजान अब भी उससे मिलने नहीं आई है। अब मेरे प्राण निकलने के लिए व्याकुल हो रहे हैं। मेरी दयनीय दशा का संदेश मेरी सुंदर व मन को भाने वाली प्रेमिका तक पहुँचा दिया जाता है और वह भी उन संदेशों को सम्मानपूर्वक अपने पास रख लेती है। परन्तु मुझसे मिलने नहीं आती है। उसकी झूठी बातों पर विश्वास करके कवि घनांनद उदास हो गये हैं।

घनांनद जी कहते हैं कि उपचार करने वाले आनन्द रूपी बादल अब घिरते ही नहीं है अर्थात् जिसको देखकर उसकी बीमारी दूर हो सके वह प्रियतमा सुजान अब आती ही नहीं है। अब मेरे प्राण अधरों तक आ गए हैं कि उसके दर्शनों की अभिलाषा में ही उसके प्राण अब तक अटके हुए हैं कि वह आकर उसे दर्शन दे दें।

काव्यगत विशेषताएँ :- 1. कवि के हृदय की व्याकुलता और वियोग का सजीव चित्रण किया गया है।

2. कवि अपनी प्रेमिका के वियोग में मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया है।

3. ब्रज भाषा का सुन्दर प्रयोग

4. कवित्त छंद

5. वियोग शृंगार रस

6. 'कहि-कहि, दै दै' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है।

7. 'घिरत घन', 'कहि के', 'पयान प्रान' तथा 'चाहत चलन' में अनुप्रास अलंकार, श्लेष अलंकार

8. मुहावरे का प्रयोग

काव्य सौदंर्य

''पूरन प्रेम को मंत्र महापन.....पर बाँचि न देख्यौ।''

भाव सौन्दर्य : कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान को ह्रदय रूपी पत्र लिखा, अर्थात् यह पत्र घनांनद ने अपने ह्रदय की पवित्र भावनाओं से लिखा था। घनांनद सुजान से बहुत प्रेम करते थे और उनके मन में सुजान की बहुत पवित्र छवि थी। इसी पवित्र छवि को उन्होंने हृदय में धारण करके यही जाहिर किया था कि वे उसे कितना सच्चा प्रेम करते हैं और उनके ह्रदय में सुजान का क्या स्थान है। परन्तु कठोर सुजान ने ऐसे ह्रदय से लिखे सच्चे पत्र को एक बार पढ़ा तक नहीं अपितु बिना पढ़े ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। कवि ने यहाँ सुजान की कठोरता प्रकट की है।

रस – वियोग शृंगार

गुण – माधुर्य

शिल्प सौन्दर्य

1. छंद – सवैया

2. भाषा – ब्रज

3. 'हियो हित पत्र' – रूपक अलंकार

4. घन आनन्द व सुजान – श्लेष अलंकार

5. शब्द शक्ति – व्यंजना तथा लक्षणा

6. शैली – भावात्मक

काव्य सौदंर्य

मौन हू सौं देखिहौं कितेक पन.....आप बोलि है।

भाव सौदंर्य : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि घनानंद जी अपनी प्रेमिका सुजान से कहते है कि- अब तो मुझे चुप रह कर यह देखना है कि मेरे ह्रदय की पुकार सुनकर भी तुम कब तक न बोलने की अपनी प्रतिज्ञा का पालन करती हो, क्योंकि मेरे प्रेम से भरे ह्रदय की मूक पुकार तुम्हें एक ना एक मुझसे बात करने पर अवश्य ही विवश कर देगी।

-रस – वियोग शृंगार

– गुण – माधुर्य

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा – ब्रज भाषा
2. शैली – रीतिमुक्त
3. छंद – कवित्त
4. अलंकार – पन पालिहौ में अनुप्रास, कूक भरी मूकता में विरोधाभास अलंकार है।
5. शब्दशक्ति – व्यंजना शक्ति

प्रश्न : प्रथम सवैये के आधार पर बताइए कि प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दुखी हैं?

उत्तर : प्रथम सवैये में कवि कहता है कि संयोगकाल में दोनों एक-दूसरे को देखते हुए आँखों से रूप का पान करते थे। अब सुजान के साथ न होने से आँखें विरह की आग में जल रही हैं। मिलनकाल में प्राण प्रिय के प्यार से पलते थे, अब दु:ख और शोक से भरकर व्याकुल हो रहे हैं। पहले उसके गले का हार पहाड़ की तरह बाधक लगता था, अब विरहकाल में दोनों के बीच का वियोग पहाड़ जैसा बाधक बन गया है।

प्रश्न 2. कवि ने 'चाहत चलन ये संदेसों ले सुजान को' क्यों कहा है?

उत्तर : कवि की प्रेमिका का नाम सुजान है । वह उससे प्रेम करता है। वह उससे मिलना चाहता है। परंतु वह कोई उत्तर नहीं देती। कवि मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया है। उसे लगता है कि कभी भी उसके प्राण निकल सकते हैं। वह अपनी प्रेमिका सुजान तक यह संदेसा पहुँचाना चाहता है कि उसके दर्शनों की इच्छा में ही उसके प्राण अब तक अटके हुए हैं इसलिए वह आकर उसे दर्शन दे।

पठित काव्यांश

घनानंद (कवित्त)

"आनाकानी आरसी निहारिबो .....कान खोलि है । "

1. घनानंद को माना जाता है :-

(i) प्रेम की पीड़ा के कवि **(ii) साक्षात रसमूर्ति**

(iii) वीर रस के कवि **(iv) क व ख दोनों**

2. 'आरसी' का अर्थ है:-

(i) वृक्ष **(ii) पुष्प**

(iii) आकाश **(iv) दर्पण**

3.नायिका द्वारा नायक की ओर न देखकर दर्पण को निहारना उसकी किस मनोदशा को सूचित करता है ?

(i) चिंता (ii) क्रोध

(iii) उपालंभ (iv) उदासीनता

4. कविता की भाषा है :-

(i) संस्कृत (ii) अवधी

(iii) अवधी-ब्रज मिश्रित (iv) परिस्कृत व साहित्यिक ब्रजभाषा

5. 'कूक भरी मूकता' में अलंकार है:-

(i) अनुप्रास (ii) विरोधाभास

(iii) उत्प्रेक्षा (iv) रूपक

6. 'कूकभरी मूकता बुलाय आप बोलिहै' कवि के किस मनोभाव को दर्शाता है?

(i) अपने सच्चे प्रेम पर विश्वास (ii) जिद्दी/हठी स्वभाव

(iii) प्रतिशोध का भाव (iv) क्रोध का भाव

उत्तर बिंदु (पठित काव्यांश)

देवसेना का गीत

(1) iv (2) II (3) ii (4) i (5) ii

कार्नेलिया का गीत

(1) iii (2) iv (3) iii (4) iii

सरोज स्मृति

(1) i (2) i (3) ii (4) iv (5) i (6) i

;

यह दीप अकेला

(1) iii (2) iii (3) iii (4) iii (5) i

मैने देखा, एक बूँद

(1) ii (2) i (3) iii (4) ii (5) iv

बनारस

(1) ii (2) iii (3) i (4) i (5) iii

दिशा

(1) iii (2) iii (3) iv (4) iii (5) i (6) iv

वसंत आया

(1) iv (2) iv (3) iv (4) iii (5) i

तोड़ो

(1) i (2) iv (3) iii (4) i (5) i (6) iii

तुलसीदास

(1) iii (2) iv (3) ii (4) iii (5) ii

मलिक मुहम्मद जायसी

(1) ii (2) i (3) iv (4) iv (5) iv (6) ii (7) ii

विद्यापति

(1) iii (2) ii (3) i (4) iv (5) ii

घनानन्द

(1) i (2) iv (3) iv (4) iv (5) iv

गद्य खंड

1.	**रामचन्द्र शुक्ल**	–	प्रेमघन की छाया–स्मृति
2.	**पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी**	–	सुमिरिनी के मनके
3.	**फणीश्वरनाथ रेणु**	–	संवदिया
4.	**भीष्म साहनी**	–	गांधी नेहरू और यास्सेर अराफात
5.	**असगर वजाहत**	–	शेर, पहचान, चार हाथ, साझा
6.	**निर्मल वर्मा**	–	जहाँ कोई वापसी नहीं
7.	**ममता कालिया**	–	दूसरा देवदास
8.	**हजारी प्रसाद द्विवेदी**	–	कुटज

पाठ-1

रामचन्द्र शुक्ल

लेखक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।

जन्म / स्थान : 1884 उत्तर प्रदेश अगोना गांव।

शिक्षा : आरम्भिक शिक्षा उर्दू, अंग्रेजी और फारसी में हुई मगर इंटरमीडिएट तक ही विधिवत पढ़ सके। बाद में स्वयं के प्रयासों से संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला और हिन्दी के प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य का गहन गंभीर अध्ययन किया।

कार्य 1. अध्यापन कार्य : काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे।

2. सम्पादक कार्य : काशी नागरी प्रचारिणी सभा में हिन्दी शब्द सागर के निर्माण कार्य में सहायक सम्पादक का कार्य किया।

रचनाएँ : 1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, 2. रस-मीमांसा, 3. जायसी ग्रंथावली, 4. चिंतामणि, 5. भ्रमरगीतसार।

साहित्यिक विशेषताएँ : 1. हिन्दी साहित्य को सम्यक ढंग से व्यवस्थित करना। 2. आलोचनात्मक, भावात्मक तथा मनोविकार संबंधी निबंध लिखना, सम्पादन, अनुवाद लेखन।

भाषा शैली : शुक्ल जी की गद्य शैली विवेचनात्मक है। तत्सम् तथा उर्दू शब्दों का सहज व सरल प्रयोग है। विचार प्रधान, सारगर्भित, तर्क योजना इनकी भाषा की विशेषता है।

मृत्यु : 1941

प्रेमघन की छाया-स्मृति

विधा : संस्मरणात्मक निबंध (स्मृति के आधार पर लिखा गया निबंध)।

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का एक ऐसा रेखाचित्रात्मक संस्मरण उकेरना चाहते हैं जिससे पाठकों के मनोमस्तिष्क पर प्रेमघन की छवि, व्यवहार, रहन-सहन, खानपान, अभिरूचि, पहनावा, बातचीत की शैली, चाल ढाल, विनोदप्रियता तथा हिन्दी भाषा के प्रति उनके विचार आदि का सजीव चित्र अंकित हो सके।

पाठ का सार

शुक्ल जी के बचपन का साहित्यिक वातावरण : शुक्ल जी को बचपन से घर में साहित्यिक वातावरण मिला क्योंकि उनके पिता फारसी भाषा के अच्छे ज्ञाता थे तथा पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे। वे प्राय: रात्रि में घर के सब सदस्यों को एकत्रित करके 'रामचरित मानस' तथा 'रामचंद्रिका' को पढ़कर सुनाया करते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक उन्हें अत्यंत प्रिय थे। बचपने के कारण शुक्ल जी 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक के नायक राजा हरिश्चंद्र तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र में अन्तर समझ नहीं पाते थे।

चौधरी प्रेमघन के प्रथम दर्शन : पिता की बदली मिर्जापुर में होने पर अपने घर से प्रेमघन के घर की निकटता रहने के कारण शुक्ल जी को अपनी मित्र मंडली के साथ उनके प्रथम दर्शन हुए जिसमें लता-प्रतान के बीच वे मूर्तिवत खड़े थे, कंधों पर बाल बिखेरे और एक हाथ बरामदे के खम्भे पर था।

शुक्ल जी की साहित्य के प्रति बढ़ती रूचि : पं. केदारनाथ के पुस्तकालय से पुस्तकें लाकर पढ़ते-पढ़ते शुक्ल जी की रूचि हिन्दी के नवीन एवं आधुनिक साहित्य के प्रति बढ़ गई व उनकी गहरी मित्रता केदारनाथ जी से भी हो गई। अपनी युवावस्था तक आते-आते शुक्ल जी को समव्यस्क 'हिन्दी प्रेमी लेखकों' की मंडली भी मिल गई। जहाँ शुक्ल जी रहते थे वह उर्दूभाषी वकीलों, मुख्तारों आदि की बस्ती थी। लेखक अपनी मित्र मंडली के साथ जब भी कोई बातचीत करते तो उस बातचीत में 'निस्संदेह' शब्द का बहुत बार प्रयोग होता था जिसे सुन-सुनकर उस बस्ती के लोगों ने इस लेखक मंडली का नाम 'निस्संदेह मंडली' रख दिया था।

चौधरी प्रेमघन की व्यक्तिगत विशेषता : प्रेमघन जी को खासा हिन्दुस्तानी रईस बताया गया है। उनकी हर बात में तबीयतदारी टपकती थी। बसंत-पंचमी, होली आदि त्यौहारों पर उनके घर में खूब नाच-रंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी बातें विलक्षण वक्रता (व्यंग्यात्मकता) लिए रहती थी। चौधरी साहब प्राय: लोगों को बनाया करते थे। वे प्रसिद्ध कवि होने के साथ-साथ भाषा के विद्वान भी थे।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दूभाषी लोग उन्हें किस नाम से पुकारते थे तथा क्यों?

उत्तर : शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दूभाषी लोग उन्हें 'निस्संदेह-मंडली' के नाम से पुकारने लगे थे। क्योंकि उन्हें लेखक मंडली की बोली अनोखी लगती थी। जिसमें

'निस्संदेह' शब्द का प्रयोग बहुत होता था जबकि वहाँ रहने वाले वकील, मुख्तार तथा कचहरी के अफसरों की भाषा उर्दू थी। इसलिए लेखक मंडली का नाम उन्होंने 'निस्संदेह मंडली' रख दिया था।

प्रश्न 2 : लेखक का रूझान और रूचि साहित्य की ओर कैसे बढ़ती गई?

उत्तर : शुक्ल जी की अभिरूचि हिन्दी के नवीन एवं आधुनिक साहित्य के प्रति बढ़ गई क्योंकि उन्होंने पंडित केदारनाथ के पुस्तकालय से पुस्तकें ला-लाकर पढ़ना आरम्भ किया। लेखक जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर उनका झुकाव बढ़ता गया। उनके घर में जीवन-प्रेस की पुस्तकें आती थीं जिन्हें वे बड़े चाव से पढ़ते थे। ऐसे ही उनका रूझान व रूचि साहित्य के प्रति बढ़ती गई।

प्रश्न 3. प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है?

उत्तर : प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी के व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं को उजागर किया है :-

1. चौधरी साहब एक रईस की तरह रहते थे।
2. उनका व्यक्तित्व आकर्षक तथा बाल कंधों तक थे।
3. वे सभी त्यौहारों पर नाच-रंग का आयोजन करते थे।
4. उनकी हर एक अदा से रियासत व तबीयतदारी टपकती थी।
5. वे छोटे से छोटे काम के लिए नौकरों पर निर्भर रहते थे।
6. नौकरों के साथ संवाद करने का उनका लहजा सुनने लायक होता था।
7. वे नागरी को भाषा मानते थे और उसी में लिखते भी थे।

सप्रसंग व्याख्या : चौधरी साहब तो ..... अक्सर लगा रहता था।

सन्दर्भ : पाठ - प्रेमघन की छाया स्मृति।

लेखक - पं. रामचंद्र शुक्ल।

प्रसंग : इन पंक्तियों में लेखक ने चौधरी प्रेमघन जी के घर के वातावरण का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में हिन्दुस्तानी संस्कार ही बसते थे।

व्याख्या : शुक्ल जी का आना-जाना प्रेमघन जी के घर में एक लेखक के रूप में होने लगा था। प्रेमघन जी को देखकर शुक्ल जी उन्हें कौतुहल की दृष्टि से देखा करते थे। क्योंकि वे प्रेमघन जी को प्राचीन कवियों के रूप में देखते थे। वे हिन्दुस्तानी रईसों की भाँति जीवन व्यतीत करते थे। अर्थात् उनके घर में होली, वसंत पंचमी के उत्सव पूरे जोश और उल्लास के साथ मनाए जाते थे। जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक साफ दिखाई पड़ती थी। उनकी बातचीत का ढंग नौकरों के साथ अनूठा होता था।

विशेष :-

1. **भाषा :** प्रवाह पूर्ण, खड़ी बोली, बोलचाल की भाषा शैली अपनाई है।
2. **शब्द भंडार :** तत्सम्, तद्भव शब्द चयन किया है जिनका सटीक प्रयोग किया गया है।
3. **लोकोक्ति/मुहावरा :** तबीयतदारी टपकना, काँट छाँट करना।
4. **शब्द शक्ति :** अभिधा शब्द शक्ति
5. **शैली :** वर्णनात्मक

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. उच्च कोटि के आलोचक, इतिहासकार और साहित्य चिंतक हैं।

(क) जयशंकर प्रसाद (ख) निर्मल वर्मा

(ग) राहुल सांस्कृत्यायन (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रश्न 2. हिन्दी साहित्य के इतिहास को क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित करने तथा कवियों की सम्यक समीक्षा करने का श्रेय किसे दिया जाता है?

(क) शिवसिंह सेंगर (ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) रामकुमार वर्मा (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 3. शुक्ल जी के निबंधों की क्या प्रधानता थी?

(क) भाव और मनोविकार (ख) श्रद्धा एवं भक्ति

(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. शुक्ल जी की कीर्ति का अक्षय स्रोत है –

(क) हिंदी शब्द भंडार (ख) हिंदी साहित्य में संत परंपरा

(ग) हिंदी साहित्य का इतिहास (घ) हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास

पश्न 5. प्रेमघन की छाया–स्मृति किस विधा पर आधारित रचना है?

(क) रेखाचित्र (ख) संस्मरण

(ग) यात्रा–वृत्तांत (घ) रिपोतार्ज

प्रश्न 6. लेखक के पिताजी के द्वारा घर में प्राय: किन पुस्तकों का चित्ताकर्षक ढंग से पाठन कार्य किया जाता था?

(क) रामायण और उपनिषद (ख) शिवपुराण और गरुड़ पुराण

(ग) श्रीमद्भागवत गीता (घ) रामचरित मानस और रामचन्द्रिका का

प्रश्न 7. 'लता प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी' उचित कथन किसके परिप्रेक्ष्य में है?

(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ख) उपाध्याय बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

(ग) भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र (घ) पं. केदारनाथ जी पाठक

प्रश्न 8. चौधरी साहब के यहाँ किन उत्सवों पर नाचरंग का आयोजन धूम-धाम से किया जाता था?

(क) दीपावली और होली (ख) होली और चैत्र नवरात्रि

(ग) बसंत पंचमी और होली (घ) दीपावली और बसंत पंचमी

प्रश्न 9. ''खंभा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की।'' उक्त कथन किस साहित्यकार के द्वारा कहा गया।

(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ख) चौधरी बदरी नारायण प्रेमघन

(ग) वामनाचार्य गिरि (घ) भगवानदास जी

पश्न 10. पं. लक्ष्मीनारायण चौबे, बा. भगवानदास हालना तथा बा. भगवानदास मास्टर के द्वारा किस विनोदपूर्ण पुस्तक का सृजन कार्य किया गया?

(क) रुस्तमे-ए-हिंद (ख) उर्दू बेगम

(ग) सोज़े वतन (घ) बे़गम खलीफा

ई सामग्री- (लिंक)

प्रेमघन की छाया स्मृति - 29 अगस्त 2020 - 8 सितंबर 2020

- https://youtu.be/HKKL57daUSA
- https://youtu.be/buXy088Nj90

पठित गद्यांश

रामचन्द्र शुक्ल

भारतेन्दु मंडल की किसी जीव स्मृति के प्रति मेरी कितनी उत्कंठा रही होगी, यह अनुमान करने की बात है। मैं नगर से बाहर रहता था। एक दिन बालकों की मंडली जोड़ी गयी । जो चौधारी साहब के मकान से परिचित थे, वे अगुआ हुए। मील डेढ़ का सफर तै हुआ । पत्थर के एक मकान के सामने हम सब जा खड़े हुए। नीचे का बरामदा खाली था। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से आवृत्त था। बीच –बीच में खंडों और खुली जगह दिखाई पड़ती थी। उसी ओर देखने के लिए मुझसे कहा गया। कोई दिखाई नहीं पड़ा। सड़क पर कई चक्कर लगे। कुछ देर पीछे एक लड़के ने ऊगली से ऊपर की ओर इशारा किया। लता–प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी। दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे। एक हाथ खंडों पर था। देखते ही देखते वह मूर्ति दृष्टि से ओझल हो गयी। बस, यही पहली झाँकी थी।

निम्नलिखित में से विकल्पों का चयन कीजिए।

1. चौधरी साहब के मकान से कौन परिचित थे?

(i) लेखक (ii) बालकों की मंडली

(iii) पिताजी (iv) कुछ लेखक

2. मकान कैसा था?

(i) पत्थर से बना (ii) ईटों से बना

(iii) संगमरमर से बना (iv) कच्चा था

3. ऊपर का बरामदा किससे ढँका था?

(i) जाली से (ii) लताओं से

(iii) काँटों से (iv) फूलों से

4. ऊपर खड़े व्यक्ति के बाल कहाँ थे?

(i) कंधो पर (ii) सिर पर

(iii) कपड़ों पर (iv) खंभे पर

5. लेखक की किस मंडली के प्रति सजीव उत्कंठा थी?

(i) साहित्यिक मंडल (ii) कवि मंडल

(iii) भारतेन्दु मंडल (iv) लेखक मंडल

पाठ-2

पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

सुमिरिनी के मनके

लेखक : पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

जन्म / स्थान : 1883 ई. राजस्थान जयपुर।

शिक्षा : उनकी रूचि बचपन से ही पढ़ने लिखने में थी। गुलेरी जी को संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, अंग्रेजी, लैटिन तथा फ्रेंच भाषाओं का अच्छा ज्ञान था।

कार्य : अध्यापन कार्य : अजमेर के मेयो कॉलेज में पहले अध्यापक और फिर प्रधानाध्यापक बने। बाद में ओरिएंटल कॉलेज के प्रधानाचार्य भी रहे।

उपाधि : उन्हें 'इतिहास-दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

रचनाएँ : ***कहानी :*** घंटाघर, सुकन्या, बुद्धू का काँटा, हीरे का हार, सुखमय जीवन तथा उसने कहा था।

साहित्यिक विशेषताएँ : संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रकांड पंडित थे। 'उसने कहा था' एक अद्‌भुत और नितांत भिन्न एवं मौलिक कहानी लिखकर एक विशिष्ट ख्याति अर्जित की थी। गुलेरी जी एक प्रतिष्ठित निबंधकार थे।

भाषा शैली : इनकी भाषाशैली अत्यंत सरल एवं सहज है। साथ ही विषय को बड़ी गंभीरता से पाठक के सामने प्रस्तुत करती है। गुलेरी जी बहुभाषा ज्ञानी थे।

मृत्यु : 1922 ई.

बालक बच गया

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य – वर्तमान शिक्षा पद्धति को गुलेरी जी राष्ट्र के लिए घातक मानते हैं। धर्म, विज्ञान, प्रकृति, या पौराणिकता – व्यावहारिक शिक्षा बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। लेखक, बचपन को जीवित रखते हुए ही बच्चों को शिक्षित करने के पक्षधर हैं।

पाठ का सार

बालक की विद्वता का प्रदर्शन : विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रधानाध्यापक का पुत्र अपनी विद्वता का प्रदर्शन करता दिखता है जिसे देख पिता और अध्यापक फूले नहीं समा रहे हैं।

लेखक द्वारा बालक के 'बचपन' के बचने की संतुष्टि : वृद्ध महाशय द्वारा इनाम माँगने के प्रस्ताव पर बच्चे के चेहरे पर एक रंग आता है एक रंग जाता है। जब 'लड्डू' शब्द उस बच्चे के मुख से सुनते हैं तब लेखक को महसूस होता है कि 'बालक बच गया' अर्थात् उसके बचपन का भाव अभी उसमें ही निहित है क्योंकि 'लड्डू' की मांग उसके बालपन की स्वाभाविक मांग है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों ली?

उत्तर : बालक के पिता व उनके शिक्षकों ने बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गला घोटने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लेखक बैठा-बैठा उस बालक के प्रश्नों को सुन रहा था और सोच रहा था कि क्या किसी बालक को जिसकी अभी खेलने-खाने की उम्र हो उस पर शिक्षा का इस प्रकार का दबाव उचित है? जब बालक ने लड्डू माँगा तो लेखक को लगा कि अभी इस बालक का बचपन मरा नहीं हैं। अभी भी इसको इस दबाव से उबारा जा सकता है। लेखक के द्वारा सुख की साँस लेने का यही कारण था।

प्रश्न 2. बालक की प्रवृत्तियों का गला घोंटना अनुचित है पाठ में ऐसा आभास किन स्थलों पर होता है कि उसकी प्रवृत्तियों का गला घोंटा जा रहा है।

उत्तर : बालक जब वार्षिकोत्सव के मंच पर खड़ा था तब उसका मुँह पीला, आँखें सफेद, दृष्टि भूमि से उठती नहीं थी।
जब बालक से इनाम माँगने को कहा गया तब बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था। कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक बालक की आँखों में साफ दिखाई दे रही थी। उसकी इस दशा से पता चलता है कि स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गला घोटा जा रहा था।

सप्रसंग व्याख्या : उसके बचने की आशा ..... वाली खड़खड़ाहट नहीं।

सन्दर्भ : पाठ - बालक बच गया।

लेखक - पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

प्रसंग : इन पंक्तियों में लेखक ने शिक्षा को जबरदस्ती बच्चे पर थोपने की प्रवृत्ति की तुलना सूखी लकड़ी से व लड्डू माँगने की स्वाभाविकता की तुलना हरी लकड़ी से की है।

व्याख्या : बालक के लड्डू माँगने पर लेखक ने राहत की साँस ली और पाया कि बच्चों में बचपन की स्वाभाविकता अभी भी शेष बची है। उसके द्वारा लड्डू की माँग वास्तव में जीवित और हरे पेड़ के पत्तों की जीवतं ध्वनि के समान है जो सभी को संगीतमय लगती है। शांति और मधुरता का आभास देती है जबकि बच्चे को कठिन से कठिन प्रश्नों का उत्तर रटवाना सूखी लकड़ी की कर्कश चरमराहट ध्वनि के समान है जिसकी चौखट बना दी जाती है और खडखड़ाहट कानों को चुभती है।

विशेष

1. भाषा - प्रवाह पूर्ण, खड़ी बोली, विषयानुकूल भाषा प्रयोग।
2. शब्द भंडार - तत्सम्, तद्भव उर्दू शब्द का प्रयोग।
3. शब्द शक्ति - लक्षणा एवम् व्यंजना शब्द-शक्ति।
4. शैली - प्रवाहमयी, विचारात्मक

घड़ी के पुर्जे

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य - लेखक ने घड़ी के पुर्जों के माध्यम से धर्म-विषयक बखान या उपदेश करने वालों पर व्यंग्य किया है। धर्म के रहस्यों को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों को घड़ी के दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट किया गया है। सभी मनुष्यों को भी धर्म के रहस्यों को जानने का अधिकार है।

पाठ का सार

धर्म का प्राचीन स्वरूप : धर्माचार्य अपने पूर्वजों से प्राप्त धर्म संबंधी ज्ञान को अपने तक ही सीमित रखना चाहते हैं तथा लंबे लंबे उपदेश देकर अपनी विद्वता आम लोगों पर थोपना चाहते हैं। धर्म से जुड़ी बातों में कुछ भी नया या वैज्ञानिक नहीं लाना चाहते हैं अपितु अपने प्राचीन ज्ञान से ही जनता पर अपनी प्रतिष्ठा बनाना चाहते हैं।

घड़ी के पुर्जों के माध्यम से धर्म के रहस्य की व्याख्या : लेखक ने घड़ी के पुर्जों की जानकारी को केवल घड़ीसाज तक ही सीमित नहीं रखा है। अपितु वे साधारण व्यक्तियों को भी घड़ी को खोलकर देखने, उसके कल-पुर्जे साफ करके फिर से जोड़ने का अधिकार देना चाहते हैं। अर्थात् धर्म के गूढ़ रहस्य धर्मोपदेशकों तक ही सीमित न रहें, जन-सामान्य को भी उसके गहरे अर्थों को समझने का अधिकार देना चाहिए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का ही दृष्टांत क्यों चुना?

उत्तर : लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का उदाहरण लिया है क्योंकि उन्होंने घड़ी को केवल समय बताने वाली मशीन समझने तक ही सीमित न मान कर, घड़ी को खोलकर देखने, उसकी साफ-सफाई, कल-पुर्जों के विषय में जानकारी हासिल करने का अधिकार सबका होना चाहिए ऐसा माना है इसी प्रकार धर्म से संबंधित बातें धर्मोपदेशकों तक ही सीमित न रहें। सभी को उसके अर्थों का बोध (ज्ञान) कराया जाना चाहिए।

प्रश्न 2. 'अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो'- आशय स्पष्ट कीजिए,

उत्तर : इस कथन का आशय यह है कि ऐसे व्यक्ति से कोई काम मत करवाओ जो उसके बारे में न जानता हो। यही स्थति धर्म की भी है। जिस व्यक्ति को धर्म के बारे में पूरी जानकारी है उससे धर्म के बारे में चर्चा कीजिए किंतु जिसे धर्म का तनिक ज्ञान नहीं उससे धर्म संबंधित ज्ञान न लें। जिस तरह घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया व्यक्ति खराब घड़ी सही कर सकता है वही स्थिति धर्म पर भी लागू होती है।

सप्रसंग व्याख्या : धर्म का रहस्य जानने ..... कई बाते निकल आवें।

सन्दर्भः पाठ - घड़ी के पुर्जे।

लेखक - पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

प्रसंग : लेखक का मत है कि धर्म मुट्ठीभर धर्माचार्यों तक ही सीमित न रहे अपितु आम लोग भी उसका रहस्य समझ सकें, जिससे समाज का समग्र विकास हो सके।

व्याख्या - धर्माचार्यों का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति को धर्म के रहस्य को जानने की इच्छा नहीं करना चाहिए। ये लोग घड़ी का दृष्टान्त देकर अपने मत का समर्थन लोगों से तालियाँ पिटवाकर करते हैं। घड़ी का काम है समय बताना। यदि तुम्हें घड़ी देखना नहीं आता तो किसी ऐसे व्यक्ति की मदद ले सकते हो 'जिसे घड़ी का पूर्ण ज्ञान हो। इसी तरह धर्म के बारे में भी धर्माचार्य से पूछकर काम चलाओ। तात्पर्य यह है कि धर्माचार्य नहीं चाहते कि आम व्यक्ति धर्म की गहराई में जाए। आम व्यक्ति को धर्म का रहस्य जानने का अधिकारी नहीं है अपितु धर्म का रहस्य तो वेदशास्त्र के ज्ञाता धर्माचार्य ही समझ सकते हैं। घड़ी के पुर्जों अर्थात् धर्म के रहस्य की बातों से आम आदमी का वास्ता नहीं है।

विशेष

1. भाषा : विषयानुकूल खड़ी बोली।
2. शब्द भंडार : तत्सम, तद्भव उर्दू शब्दों का प्रयोग।
3. शब्द शक्ति : लक्षणा व्यंजना शब्द-शक्ति।
4. शैली : विचारात्मक।

ढेले चुन लो

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : यह निबंध लोक-जीवन में व्याप्त अंधविश्वासों पर व्यंग्य करता है जो हमारे समाज की गहन तथा गंभीर समस्या है। लेखक का मत है कि अपनी आँखों से देखे सत्य को ही सत्य मानना चाहिए। भविष्य की झूठी कल्पना पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

पाठ का सार

समाज में व्याप्त अंधविश्वास : अपने जीवनसाथी को चुनने के लिए सोने चाँदी तथा लोहे की पेटियाँ अथवा विभिन्न स्थानों की मिट्टी के ढेलों पर विश्वास एक अंधविश्वास मात्र है, जिसका कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है। ऐसे अंधविश्वास समाज के सहायक न होकर घातक सिद्ध होते हैं।

वर्तमान पर विश्वास : लेखक मोर, कबूतर, मोहर, पहाड़, चक्की इत्यादि विभिन्न उदाहरण देकर अपने विचार पुष्ट करते हैं कि भविष्य की नींव कल्पना मात्र पर न टिकाकर सत्य की मजबूत धरती पर खड़ी करनी चाहिए। वर्तमान के सत्य को नकारना नहीं चाहिए तथा भविष्य की कल्पना को सत्य मान स्वीकारना नहीं चाहिए।

प्रश्न 1 : 'ढेले चुन लो' पाठ में किस अंधविश्वास की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर : इस पाठ में जिस विवाह-रीति का वर्णन किया गया है, वह अंधविश्वास की प्रतीक है जिसमें मिट्टी के ढेलों के आधार पर वधू को चुना जाता है। लड़की के सामने खेत की, हवन की, चारागाह की व श्मशान की मिट्टी के ढेले रखे जाते थे। लड़की जिसे उठा ले उसका भविष्य उसी के आधार पर निर्धारित होता था। यह अंधविश्वास ही था कि श्मशान की मिट्टी के ढेले उठाने पर अपशगुन होगा। ज्योतिष संबंधी अंधविश्वास पर कटाक्ष किया गया है।

सप्रसंग व्याख्या : आज का कबूतर ..... तेजपिंड से।

सन्दर्भ : पाठ - ढेले चुन लो।

लेखक - पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

प्रसंग : लेखक ने लोक-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास से भरी हुई मान्यताओं का खंडन किया हैं।

व्याख्या : लेखक का मत है कि हमें वर्तमान पर विश्वास करते हुए जीना चाहिए। जो आज उपलब्ध है वही सत्य है और अपना है। कल की कल्पना में आशा करते हुए जीना व्यर्थ है। लेखक उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि यदि आज कबूतर उपलब्ध है तो भविष्य में मिलने वाले मोर की कल्पना करते-करते कबूतर भी मत छोड़ देना। आज यदि पैसा हाथ में है कल स्वर्ण-मोहर की कल्पना से उन पैसों को मत छोड़ो क्योंकि आँखों देखा ही सत्य है। लाखों कोस दूर मंगल, बुद्ध, शनि ग्रह पर विश्वास न कर वर्तमान की स्थिति और सच्चाई पर विश्वास करो।

विशेष

1. भाषा - आम बोलचाल की सरल व सहज भाषा है।
2. शब्द भंडार - तद्भव शब्द प्रधान खड़ी-बोली।
3. शब्द शक्ति - लक्षणा शब्द शक्ति एवम् व्यंजना शब्द शक्ति।
4. शैली - विचारात्मक, व्यंग्यात्मक

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. गुलेरी जी को किस उपाधि से सम्मानित किया गया?

(क) मैथिल कोकिल (ख) इतिहास दिवाकर

(ग) साहित्य शलाका (घ) साहित्य दिनमान

प्रश्न 2. 'उसने कहा था' कहानी किसका पर्याय बन चुका है?

(क) ममता कालिया (ख) असगर वजाहत

(ग) पं. रामचन्द्र शुक्ल (घ) पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न 3. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्य विभाग के प्राचार्य 'गुलेरी' जी किसके कहने पर बने?

(क) पं. मदन मोहन मालवीय (ख) आचार्य श्यामसुन्दर दास

(ग) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रश्न 4. 'बालक बच गया' कहानी का मूल प्रतिपाद्य है?

(क) बालक का मेधावी होना (ख) बालक का शिक्षा ग्रहण करना

(ग) शिक्षा ग्रहण की सही उम्र (घ) बालक के बचपन का बच जाना

प्रश्न 5. व्यक्ति के बौद्धिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है –

(क) शिक्षित होना (ख) खेलना

(ग) शारीरिक मजबूती (घ) इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 6. प्रस्तुत पाठ में धर्म के रहस्यों को जानने तथा धर्म उपदेशकों के द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को किस कहानी के माध्यम से व्यक्त किया गया है?

(क) बालक बच गया (ख) ढेले चुन लो

(ग) घड़ी के पुर्जे (घ) क और ग

प्रश्न 7. वृद्ध महाशय के द्वारा इनाम देने की बात पर बालक ने क्या माँगा?

(क) किताबें (ख) मिठाई

(ग) बरफी (घ) लड्डू

प्रश्न 8. 'ढेले चुन लो' कहानी में उल्लिखित 'दुर्लभ बंधु' नाटक के लेखक हैं?

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

(ग) शेक्सपीयर (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 9. आश्वलायन, गोभिल, भारद्वाज नामक गृह्यसूत्रों में क्या उल्लिखित है?

(क) ढेलों के चुनाव का (ख) ढेलों की लाटरी का

(ग) क और ख (घ) इनमें से कोई नहीं

ई सामग्री- (लिंक)

सुमिरन के मनके–बालक बच गया–13 अक्टूबर 2020-https://youtu.be/zEoowd-fhF1

घड़ी के पुर्जे–20 अक्टूबर 2020 - https://youtu.be/jK6LbWQw5Kl

ढेले चुन लो–27 अक्टूबर 2020 - https://youtu.be/1-lolXlhO-o

पठित गद्यांश

पंडित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (घड़ी के पूर्जे)

धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है । घड़ी समय बतलाती है । किसी घड़ी देखना जानने वाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किन्तु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्जे गिन ले, उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ करके फिर लगा दें – यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं । यह तो वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जानें, तुम्हें इससे क्या ? क्या इस उपमा से जिज्ञासा बंद हो जाती है ? इसी दृष्टांत को बढ़ाया जाए तो जो उपदेशक जी कह रहे हैं उसके विरूद्ध कई बातें निकल आवें ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. धर्म के रहस्य जानने की इच्छा कौन ना करे –

(i) प्रत्येक मनुष्य **(ii) लेखक**

(iii) उपदेशक **(iv) इनमें से कोई नहीं**

2. धर्माचार्यो का क्या कहना है?

(i) प्रत्येक व्यक्ति को धर्म का रहस्य जानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए

(ii) हम जो कहें, केवल उसी को सुनें

(iii) क व ख दोनों **(iv) इनमें से कोई नहीं**

3. धर्माचार्यो किस वस्तु का उदाहरण देते हैं?

(i) घड़ी का **(ii) पुर्जो का**

(iii) समय का **(iv) किसी का नहीं**

4. आद आदमी के वश की क्या बात नहीं है ?

(i) धर्म का रहस्य जानना **(ii) चुप रहना**

(iii) घड़ी ठीक करना **(iv) घड़ी देखना**

5. वेदशास्त्र धर्माचार्यो का क्या कार्य है ?

(i) घड़ी को भली-भाँति देखना **(ii) घड़ी को ठीक करना**

(iii) घड़ी के पूर्जो के बारे में जानना **(iv) उपरोक्त सभी**

पाठ-4

फणीश्वर नाथ रेणु

लेखक : फणीश्वर नाथ 'रेणु'।

जन्म / स्थान : सन् 1921, बिहार - पूर्णिया जिला हिंगना गांव।

शिक्षा : रेणु जी की आरम्भिक शिक्षा नेपाल में हुई।

कार्य : लेखन कार्य : 1953 से वे साहित्य सृजन के क्षेत्र में आ गए। उन्होंने कहानी, उपन्यास तथा निबंध आदि विविध साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया।

रचनाएँ : मैला आंचल, परती परिकथा, कितने चौराहे, ठुमरी, अग्निखोर, मारे गए गुलफाम, ऋण, जल-धन जन, नेपाली क्रांति।

साहित्यिक विशेषताएँ : 1. लेखक आंचलिक कथाकार है। 2. उनके साहित्य में अभावग्रस्त जनता की बेबसी एवं पीड़ा का सशक्त वर्णन है। 3. ग्रामीण समाज को नई सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की है।

भाषाशैली : 1. इनकी भाषा संवेदनशील, संप्रेषणीय और भाव प्रधान है। 2. आंचलिक शब्दों और मुहावरों का सुन्दर प्रयोग है। 3. देशज शब्दों के प्रयोग से मानवीय संवेदना की गहरी अभिव्यक्ति हुई है।

मृत्यु : 1977

संवदिया

विधा : कहानी।

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : संवदिया कहानी में मानवीय संवेदना की गहन और विलक्षण पहचान हुई है। इसमें असहाय और सहनशील नारी-मन के कोमल तन्तु की, उसके दु:ख और करुणा की पीड़ा और यातना की सूक्ष्म पकड़ हुई है। इस कहानी में रेणु जी ने बड़ी बहुरिया की पीड़ा को, उसके भीतर के हाहाकार को संवदिया के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है।

पाठ का सार

संवदिया की विशेषता : संवदिया अर्थात संदेशवाहक जो बिना लालच के संवाद पहुँचाने का काम करता है। संवाद के प्रत्येक शब्द, भावना, स्वर का ध्यान रखते हुए उसी ढ़ंग से जाकर सुनाना संवदिया की विशेषता है। गांव के लोग उसे निठल्ला, कामचोर तथा पेटू समझते हैं।

बड़ी बहुरिया की सामाजिक, आर्थिक व मानसिक स्थिति : बड़ी बहुरिया की सामाजिक व आर्थिक स्थिति पहले बहुत अच्छी थी। हवेली में नौकर चाकरों की भीड़ लगी रहती थी। तब बड़ी बहुरिया के हाथों में मेहंदी लगा कर ही नाइन अपने परिवार का पेट पालती थी। किंतु अब उनकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चली थी कि वह अपना गुजारा उधार लेकर ही चला रही थी। इसी दुख से वह अपने मायके हरगोबिन के हाथ संदेश भेजना चाहती थी,क्योंकि वह इसी वजह से मानसिक यातना झेल रही थी।

बड़ी बहुरिया का संदेश : अपने आर्थिक दुख के कारण वह अपने मायके हरगोबिन के हाथों संदेश भेजना चाहती है कि भाई आकर उसे लिवा ले जाए। नहीं तो वह पोखरे में डूबकर जान दे देगी। बथुआ साग खा-खाकर कब तक जीऊँ? किसके लिए जीऊँ? किसलिए जीऊँ?

हरगोबिन का मानसिक द्वंद : बड़ी बहुरिया के संवाद का एक-एक शब्द हरगोविन के मन में काँटे की तरह चुभ रहा था तथा वह बड़ी बहुरिया की वेदना, बेबसी, पीड़ा और दु:ख समझ रहा था जिससे उसे स्वयं मानसिक पीड़ा हो रही थी। वह उसके मायके में कैसे संवाद सुनाएगा। गांव वाले उस पर थूकेंगे। कैसा गांव है-जहाँ लक्ष्मी जैसी बड़ी बहुरिया दु:ख भोग रही है। उसके मन में अपने गाँव तथा बड़ी बहुरिया की बहुत इज्जत थी। वह बड़ी बहुरिया को गांव छोड़कर नहीं जाने देगा।

हरगोबिन का संकल्प : अपने गांव वापिस पहुँचने पर उसने बड़ी बहुरिया के पाँव पकड़ लिए। माफी माँगते हुए उसका संदेश न पहुँचाने की बात कही। साथ ही स्वयं को उसका बेटा बताते हुए संकल्प लेता है कि वह उसकी माँ समान है,पूरे गांव की माँ समान है। वह आग्रह करता है कि वह गाँव छोड़कर न जाए। साथ ही संकल्प लेता है कि अब वह निठल्ला नहीं बैठा रहेगा। उन्हें(बड़ी बहुरिया) गाँव में कोई कष्ट नहीं होने देगा। उनके सभी काम करेगा।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन उसके मायके तक क्यों नहीं पहुँचा सका?

उत्तर : बड़ी बहुरिया की मानसिक पीड़ा और यातना को हरगोबिन अच्छी तरह समझ रहा था। उसके मायके पहुँचकर वहाँ का खुशनुमा वातावरण व आवभगत देखकर उसकी हिम्मत नहीं हुई क्योंकि इससे हरगोबिन को अपने गांव की इज्जत भी मिट्टी में मिलती दिख रही थी तथा लग रहा था कि फिर गांव की लक्ष्मी सदा के लिए गांव छोड़कर चली जाएगी। उसकी वेदना का समाचार वह किस मुँह से सुनाएगा।

प्रश्न 2. जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या सकंल्प लिया? इससे उसकी कौन सी विशेषता उद्घाटित होती है?

उत्तर : जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने यह संकल्प लिया कि अब वह उसे कोई कष्ट नहीं होने देगा। अब वह बड़ी बहुरिया का सारा काम करेगा। बड़ी बहुरिया उसकी माँ है, सारे गाँव की माँ है। अब उसे गाँव छोड़ कर जाने की आवश्यकता नहीं है। इस भाव से हरगोबिन की कर्तव्यनिष्ठा तथा स्वामिभक्ति की भावना उद्घाटित होती है जो उसके चरित्र को और अधिक मजबूत बनाती है।

प्रश्न 3. संवदिया की क्या विशेषताएं है और गांव वालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

उत्तर : संवदिया वातावरण सूंघ कर ही संवाद का अनुमान लगा लेता है। वह बहुत भावुक है। वह एक संवेदनशील और समझदार इंसान है। वह ईमानदार और दूसरों का मददगार है। वह चतुर है। गांव वालों के मन में संवदिया की यह अवधारणा है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का कार्य करता ह। जिसके आगे-पीछे कोई नहीं होता। बिना मजदूरी के ही जो संवाद पहुँचाता है वह औरतों का गुलाम होता है।

सप्रसंग व्याख्या : बड़े भैया के मरते ही जैसे सब ..... बेचारी बड़ी बहुरिया।

सन्दर्भ : पाठ - संवदिया

लेखक - फणीश्वर नाथ 'रेणु'

प्रसंग : इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने बड़ी बहुरिया की आर्थिक स्थिति खराब होने का कारण पति की मृत्यु के पश्चात् उसके भाईयों में परस्पर गृह क्लेश को बताया है।

व्याख्या : बड़ी बहुरिया के पति की मौत के बाद घर की रौनक ही चली गई। परिवार बिखर गया क्योंकि सारी सम्पत्ति का बंटवारा सभी भाईयों ने आपस में कर लिया और गांव छोड़कर चले गए। बड़ी बहुरिया के पास मायके जाने के अतिरिक्त और कोई स्थान नहीं है। बड़े भईया की मृत्यु के पश्चात् घर का जो हाल हुआ वह बहुत कष्टदायी था। वह केवल एक 'बेचारी' बनकर रह गई। उसकी भावनाओं की किसी ने कद्र नहीं की।

विशेष

1. भाषा - लोकजीवन से जुड़ी आंचलिक भाषा का प्रयोग है।
2. शब्दावली - आंचलिक शब्दों का प्रयोग।
3. लोकोक्ति/मुहावरा - खेल खत्म हो जाना, दावा करना, लीला करना।
4. शब्द शक्ति - अभिधा शब्द-शक्ति।
5. शैली - भावात्मक और प्रवाहपूर्ण

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'रेणु' जी ने सन् 1942 ई. में किस स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया?

(क) भारत छोड़ो (ख) साइमन कमीशन
(ग) इरविन समझौता (घ) सत्याग्रह आंदोलन

प्रश्न 2. हिन्दी के आंचलिक कथाकार हैं :-

(क) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ख) फणीश्वरनाथ रेणु
(ग) जैनेन्द्र (घ) इलाचन्द्र जोशी

प्रश्न 3. 'रेणु' जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किस लेखक की विरासत को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास किया?

(क) मुंशी कन्हैयालाल (ख) राय कृष्णदास 'स्नेही'
(ग) मुंशी प्रेमचन्द (घ) राधिका रमण प्रसाद

प्रश्न 4. आत्मा के शिल्पी रेणु के द्वारा किस कहानी में मानवीय संवेदना की गहन एवं विलक्षण पहचान प्रस्तुत हुई है?

(क) मैला आँचल (ख) संवदिया
(ग) परती परिकथा (घ) तीसरी कसम

प्रश्न 5. हरगोबिन के आश्चर्य का क्या कारण था?

(क) संदेशवाहक होना (ख) बड़ी बहुरिया के द्वारा बुलाया जाना

(ग) गाँव–गाँव में डाकघर का खुलना (घ) सभी।

प्रश्न 6. द्रौपदी चीर–हरण लीला! से तात्पर्य है?

(क) घर का बंटवारा होना।

(ख) बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े करके बाँटना

(ग) क और ख

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 7. बड़ी बहुरिया के गाँव का नाम था –

(क) बिहपुर (ख) जलालगढ़

(ग) खगड़िया (घ) बरौनी

प्रश्न 8. संवदिया डटकर खाता है और 'अफर' कर सोता है–उक्त कथन किसके बारे में है?

(क) हरगोबिन (ख) बड़ी बहुरिया

(ग) मायजी (घ) बड़े भैया

प्रश्न 9. हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संदेश माँ जी को क्यों नहीं दे पाया?

(क) शर्मिन्दगी के कारण।

(ख) पूरे गाँव की इज़्जत बचाने के कारण।

(ग) बड़ी बहुरिया गाँव के लिए माँ लक्ष्मी स्वरूपा थी

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10. गाड़ी में बैठे हुए हरगोबिन के विचलित मन को शांति कैसे मिली?

(क) निरगुन गायक के कारण

(ख) नींद आ जाने के कारण

(ग) बड़ी बहुरिया से पुन: मिलने की खुशी में

(घ) प्राकृतिक दृश्यों से मन परिवर्तित हो जाने से

ई सामग्री- (लिंक)

संवदिया – 8 दिसंबर 2020 - https://youtu.be/zEoowd-fhF1

II – 15 दिसंबर 2020 - https://youtu.be/B8llgoiy7uY

पठित गद्यांश

फणीश्वरनाथ रेणु (संवदिया)

बड़े भैया के मरने के बाद ही जैसे सब खेल खत्म हो गया तीनों भाइयों ने आपस में लड़ाई झगड़ा शुरू किया । रैयतों ने जमीन पर दावे करके दखल किया । फिर तीनों भाई गाँव छोड़कर शहर जा बसे, रह गयी बड़ी बहुरिया–कहाँ जाती बेचारी ! भगवान भले आदमी को कष्ट देते हैं । नहीं तो एक घंटे की बीमारी में बड़े भैया क्यों मरते ? बड़ी बुहरिया की देह से जेवर खींच–छीनकर बँटवारें की लीला हुई थी। हरगोविन ने देखी है अपनी आँखों से द्रौपदी चीर–हरण लीला। बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बँटवारा किया था, निर्दय भाईयों ने बेचारी बड़ी बहुरिया ।

निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए ।

1. बड़े भैया के मरने के बाद क्या हुआ ?

(i) भाइयों में लड़ाई-झगड़े हुए ।
(ii) रैयतो नें जमीन पर दावे करके दखल किया ।
(iii) तीनों भाई शहर में जा बसे ।
(iv) उपर्युक्त सभी बातें

2. बड़ी बहुरिया के साथ क्या व्यवहार किया गया ?

(i) उसके शरीर से जेवर खींच-छीनकर बाँटा गया।
(ii) चीर-हरण की लीला हुई ।
(iii) उसकी बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े किए गए
(iv) उपर्युक्त सभी

3. 'बनारसी' शब्द व्याकरण में क्या है ?

(i) संज्ञा **(ii) सर्वनाम**
(iii) विशेषण **(iv) क्रिया**

4. संवदिया को क्या करना पड़ता है ?

(i) संवाद का प्रत्येक शब्द याद रखना पड़ता है ।
(ii) संवाद जिस सुर-स्वर में कहा गया है, वैसे ही सुनाना पड़ता है ।
(iii) संवाद को सही जगह सही व्यक्ति तक पहुँचाना पड़ता है ।
(iv) उपर्युक्त सभी काम

5. तीनों भाईयों का बड़ी बहुरिया के प्रति कैसा बर्ताव था ?

(i) दयालु **(ii) निर्दयी**
(iii) वफादार **(iv) स्वार्थी**

पाठ-5

भीष्म साहनी

लेखक परिचय : भीष्म साहनी

जन्म / स्थान : सन् 1915, रावलपिंडी।

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए., पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

कार्य : *अध्यापन कार्य* - दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज में, खालसा कॉलेज, अमृतसर में अध्यापन कार्य किया।

अनुवादक : विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को में अनुवादक के पद पर कार्यरत रहे वहाँ रूसी पुस्तकों का अनुवाद किया।

संपादन : 'नयी कहानियाँ' का संपादन किया प्रगतिशील लेखक तथा अफ्रो-एशियाई लेखक संघ से संबद्ध रहे।

रचनाएँ : कहानी संग्रह : भाग्यरेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, शोभा यात्रा, निशाचर, पाली, डायन, वाडचू।

उपन्यास : झरोखे, कडियाँ, तमस, वसंती, कुंतो, नीलू, नीलिमा, नीलोफर।

नाटक : माधवी, कबीरा खड़ा बाजार में, मुआवजे, हानूश।

बाल कहानी : गुलेल का खेल।

धारावाहिक लेखन : बूँद-बूँद।

पुरस्कार : 'तमस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार। हिन्दी में 'साहित्यिक अवदान' के लिए शलाका सम्मान प्राप्त किया।

साहित्यिक विशेषताएँ : आम आदमी की संवेदनशीलता को और आम आदमी के चरित्र को उकेरा है। समाज के यथार्थ को चित्रित किया है।

भाषाशैली : छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग, संवादों का प्रयोग वर्णन में ताजगी ला देता है। भाषा में उर्दू और पंजाबी शब्दों की सोंधी महक भी है।

मृत्यु : सन् 2003

गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात (भीष्म साहनी)

विधा : आत्म कथा (संस्मरण)

पाठ की मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : भीष्म साहनी द्वारा रचित संस्मरण गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफात, उनकी आत्मकथा 'आज के अतीत' का एक अंश है। इसमें लेखक ने किशोरावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अपने अनुभवों को स्मृति के आधार पर शब्दबद्ध किया है। जहाँ एक ओर गांधी और नेहरू के साथ बिताए निजी क्षणों का मार्मिक उल्लेख है वहीं यास्सेर अराफात के साथ बिताए निजी क्षणों को अंतर्राष्ट्रीय मैत्री जैसे मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

गांधी जी

लेखक का गाँधी जी के साथ पहला अनुभव : लेखक अपने भाई के साथ सेवाग्राम आया हुआ था। वहीं पर गांधी जी से उनकी प्रथम मुलाकात हुई। लेखक ने जैसा चित्रों में देखा था वे हूबहू वैसे ही लग रहे थे। वे तेजी से चलते हुए लेखक से धीमें स्वर में हंसते हुए बातचीत कर रहे थे।

सेवाग्राम का वातावरण : लेखक तीन सप्ताह तक सेवाग्राम में रहा। रोज शाम को प्रार्थना होती थी। वहाँ का वातावरण देशभक्तिपूर्ण था। कस्तूरबा गांधी लेखक को अपनी माँ जैसी प्रतीत होती थी। लेखक को वहाँ कई देशभक्तों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। जैसे पृथ्वीसिंह आज़ाद, मीरा बेन, अब्दुल गफ्फार खान, राजेन्द्र बाबू आदि।

रोगी बालक और गांधी जी : आश्रम के किनारे एक खोखे में रहने वाले बालक के पेट में असहनीय दर्द हो रहा था। वह निरंतर गाधीजी को ही बुला रहा था। बापू ने उसका फूला हुआ पेट देखा और सारा माजरा समझ गए कि इसने गन्ने का रस अधिक मात्रा में पी लिया है। बापू ने उसे तब तक उल्टी कराई जब तक उसे आराम नहीं हो गया। इसी प्रकार वे तपेदिक के मरीज की देखभाल व उसका हालचाल भी लेते रहते थे।

जवाहरलाल नेहरु जी

नेहरू जी का व्यक्तित्व : नेहरू जी का व्यक्तित्व उदार और विनम्र था। वे देर रात तक काम करते और सुबह चरखा कातते थे। हर विषय पर उनकी पकड़ मजबूत थी। नेहरू जी के हृदय में सभी के लिए सम्मान की भावना थी। वह हर व्यक्ति के साथ नरमी से पेश आते थे। उदाहरण के लिए जब लेखक ने वार्तालाप के बहाने उन्हें अनदेखा करते हुए

अखबार नहीं दिया तब कुछ देर चुप खड़े रहने के बाद नेहरू जी ने विनम्रता से कहा कि ''यदि आपने देख लिया हो तो क्या मैं एक नज़र देख सकता हूँ?'' यह वाक्य पंडित जी के बड़प्पन का सूचक है।

धर्म के प्रति नेहरु जी के विचार : धर्म के प्रति नेहरु जी के विचार बहुत उदार थे। उनका मानना था कि ईश्वर की आराधना का अधिकार सभी को है। वे धर्म के संकीर्ण रूप के खिलाफ थे।

यास्सेर अराफात

यास्सेर अराफात का आतिथ्य प्रेम : आमंत्रण मिलने पर लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में ट्यूनिस गया हुआ था। राजधानी पहुँचने पर यास्सेर अराफात उनकी अगवानी करने के लिए स्वयं आए। खाने की मेज पर स्वयं फल छील-छीलकर खिला रहे थे तथा शहद की चाय भी बनाई। जब लेखक हाथ धोने गुसलखाने गया तो अराफात स्वयं तौलिया लेकर बाहर खड़े हो गए। ये घटनाएँ उनके आतिथ्य प्रेम को दर्शाती हैं।

गांधी जी के बारे में अराफात के विचार : गांधी जी अहिंसक आंदोलन के जन्मदाता थे। इसी कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी प्रसिद्धि थी। फिलीस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्यायपूर्ण रवैये को अहिंसक आंदोलन द्वारा समाप्त करने में अराफात ने गांधी जी को अपना आदर्श माना। अराफात गांधी जी को भारत का ही नहीं वरन् अपना भी नेता मानते थे।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : रोगी बालक के प्रति गांधी जी का व्यवहार उनके व्यक्तित्व की किस खूबी को दर्शाता है?

उत्तर : गांधी जी बहुत ही दयालु और सहृदय व्यक्ति थे। रोगियों की सेवा करना वो अपना धर्म समझते थे। बालक के पेट में जब दर्द असहनीय हो गया तो वह सिर्फ बापू को ही बुलाने की बात कर रहा था। बापू के स्नेह और सेवा से वह ठीक हो गया। गांधी जी रोगियों की मन:स्थिति को भांपकर उनसे प्रेम का व्यवहार करते थे। जिन रोगियों के पास लोग जाने से कतराते थे(जैसे-तपेदिक का रोगी),वे स्वयं उनके पास जाते और देखभाल करते थे। इन उदाहरणों से गांधी जी के उच्च व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

प्रश्न 2. फिलीस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत ही सहानुभूति पूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था?

उत्तर : साम्राज्यवादी शक्तियाँ कई देशों पर अन्याय कर रही थी और उन्हें अपने अधीन करना चाहती थीं। भारत स्वयं फिलीस्तीन की तरह साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्याय का शिकार था। इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वालों के साथ वह सहानुभूति रखता था। भारतवासी फिलीस्तीन के लोगों को सही मानते थे तथा उन्हें भी आन्दोलन के लिए समर्थन देना चाहते थे। इसी संघर्ष में यास्सेर अराफात ने गांधी जी को अपना आदर्श माना हुआ था।

प्रश्न 3. कश्मीर के लोगों ने नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया?

उत्तर : शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में, झेलम नदी पर, शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीराकदल तक, गाँवों में उनकी शोभा-यात्रा देखने को मिली थी जब नदी के दोनों ओर हज़ारों-हज़ार कश्मीर निवासी अदम्य उत्साह के साथ उनका स्वागत कर रहे थे।

प्रश्न 4. अराफात ने ऐसा क्यों बोला कि वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए। इस कथन के आधार पर गांधी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए,

उत्तर : इस कथन से पता चलता है कि गांधी जी केवल भारत के ही नेता नहीं थे बल्कि वे हर उस व्यक्ति और देश के नेता थे जो अपनी आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे। गांधीजी की सहानुभूति फिलिस्तीन के प्रति थी वे फिलिस्तीन की समस्याओं को सुलझाना चाहते थे। वे 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना में विश्वास रखते थे। अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण उन्हें समस्त विश्व में लोकप्रियता प्राप्त थी।

सप्रसंग व्याख्या : मैं साथ चलने लगा ..... मुझे सूझ गया।

सन्दर्भ : पाठ का नाम : गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफात
लेखक - भीष्म साहनी।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने गांधी जी के साथ बिताए अपने निजी क्षणों का उल्लेख किया है। सेवाग्राम में बिताए दिनों तथा गांधी जी के साथ प्रथम अनुभव को दर्शाया है।

व्याख्या : लेखक गाँधी जी की एक झलक देखने के लिए एवं उनसे बातचीत करने के लिए प्रातः ही उनकी टोली में सम्मिलित हो जाता है। लेखक भीड़ में एक दो लोगों को पहचान लेता है। वह सबकी आँख बचाकर गांधी जी को निहार रहा था। उनके सरल स्वभाव से वह प्रभावित था। गांधी जी की धूल भरी चप्पल इस बात का परिचायक थी कि वो इतने

प्रसिद्ध होने पर भी अपनी ओर ध्यान नहीं देते थे। एक साधारण जन की तरह रहते थे। लेखक खुद को उस महान व्यक्तित्व के सामने बौना मान रहा था।

विशेष

1. गांधी जी के सरल और सहज व्यक्तित्व का प्रभावशाली चित्रण है।
2. भाषा सरल, सुबोध और सजीव है।
3. चित्रात्मक वर्णन है।
4. वर्णनात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग है।

सप्रसंग व्याख्या : धीरे-धीरे ..... जितने आपके लिए।

सन्दर्भ : पाठ का नाम : गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफात
लेखक - भीष्म साहनी।

प्रसंग- इन पंक्तियों में लेखक ने उस समय का वर्णन किया है जब लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लेने के लिए ट्युनिस गया था। तब तक फिलीस्तीन का मसला हल नहीं हुआ था । वहीं लेखक की भेंट यास्सर अराफात से हुई । यास्सर अराफात ने लेखक को भोज पर आमंत्रित किया था ।

व्याख्या- खाने की मेज पर यास्सर अराफात के साथ लेखक की बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ । उनकी बात बहुत दूर तक नहीं जा सकती थी। उनका दायरा सीमित था । हमारा देश भारत प्रारम्भ से ही फिलीस्तीन की मुक्ति का हिमायती रहा था। वह साम्राज्यवादी शक्तियों का विरोध करता रहता था। साम्राज्यवादी शक्तियों रवैया अन्यायपूर्ण था । उस रवैये की हमारी देश के नेता निंदा करते थे । फिलिस्तीनी आंदोलन के प्रति भारतवासियों की सहानुभूति थी और वे इसे हर प्रकार से समर्थन दे रहे थे। यास्सर अराफात भी भारतीय नेताओं के प्रति सम्मान का भाव रखते थे । लेखक ने जब गांधीजी तथा अन्य भारतीय नेताओं का नामोल्लेख किया तब यास्सेर अराफात बोले वे आपके ही नेता नहीं है, हमारे भी नेता हैं । हम भी उनका उतना ही आदर-सम्मान करते हैं जितना आप ।

विशेषः

1. लेखक की यास्सेर अराफात के साथ भेंट का चित्रण कुशलतापूर्वक किया गया है।
2. फिलिस्तीन मुक्ति आंदोलन की जानकारी मिलती है ।
3. भारतीय नेताओं की लोकप्रियता का पता चलता है ।
4. सरल एवं सुबोध भाषा
5. खड़ी बोली का प्रयोग ।

भीष्म साहनी

यह भी लगभग उसी समय की बात रही होगी । पंडित नेहरू काश्मीर यात्रा पर आए थे जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ था । शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में, झेंलम नदी पर, शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीराकटल तक । नावों में उनकी शोभायात्रा देखने को मिली थी । जब नदी के दोनों ओर हजारों – हजार काश्मीर निवासी अदम्य उत्साह के साथ उनका स्वागत कर रहे थे। अद्‌भुत दृश्य था ।

निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए ।

1. **प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?**

   (i) भीष्म साहनी **(ii) यथास्मे रोचते विश्वम्**

   (iii) कुटज **(iv) गांधी, नेहरू, यास्सर अराफात**

2. **काश्मीर की यात्रा पर भव्य स्वागत किसा किया गया ?**

   (i) यास्सेर अराफात का

   (ii) नेहरू जी का

   (iii) गांधी जी का

   (iv) शेख अब्दुल्ला का

3. **नेहरू जी के स्वागत के नेतृत्व कर्ता थे ?**

   (i) शेख अब्दुल्ला **(ii) लेखक**

   (iii) क व ख दोनों **(iv) इनमें से कोई नहीं**

4. **झेलम नदी कहाँ पर स्थित है ?**

   (i) लद्‌दाख में

   (ii) भारत के पूर्वी तट पर

   (iii) काश्मीर में

   (iv) उपरोक्त सभी

5. **नेहरू की शोभा यात्रा कहां देखने को मिली थी ?**

   (i) नावों में **(ii) अमीराकदल तक**

   (iii) झेलम नदी के तट पर **(iv) उपरोक्त सभी**

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. भीष्म साहनी जी मास्को के किस कार्यालय में करीब सात वर्षों तक अनुवादक के पद पर कार्यरत रहे –

(क) विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (ख) राष्ट्र भाषा प्रकाशन गृह

(ग) साहित्यिक भाषा प्रकाशन गृह (घ) इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 2. रुसी भाषा का अध्ययन और लगभग 2 दर्जन रुसी पुस्तकों के अनुवाद की उपलब्धि रही?

(क) लाला भगवानदास (ख) भगवती चरणवर्मा

(ग) भगवती प्रसाद (घ) भीष्म साहनी

प्रश्न 3. अफ्रो एशियाई तथा प्रगतिशील लेखक संघ से संबंद्ध रहे –

(क) श्रीधर पाठक (ख) भीष्म साहनी

(ग) बालमुकुन्द गुप्त (घ) जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 4. 'तमस' उपन्यास के उपलक्ष्य में साहनी जी को किस सम्मान से सम्मानित किया गया?

(क) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ख) भारत–भारती

(ग) शलाका सम्मान (घ) साहित्य अकादमी

प्रश्न 5. प्रस्तुत पाठ किस विधा पर आधारित है?

(क) रेखाचित्र (ख) रिपोतार्ज

(ग) संस्मरण (घ) यात्रा–वृत्तांत

प्रश्न 6. 'नयी पत्रिका' के सह–संपादक के रूप में कार्यरत थे :–

(क) भीष्म साहनी (ख) यास्सेर अराफात

(ग) नेहरू जी (घ) बलराज

प्रश्न 7. मोहनदास करमचन्द गाँधी के निजी सचिव थे :–

(क) महादेव देसाई (ख) मास्सेर अराफात

(ग) डॉ. सुशीला नय्यर (घ) पृथ्वीसिंह आजाद

प्रश्न 8. पृथ्वी सिंह, आजाद मीरा बेन, अब्दुल गफ्फार खान, राजेन्द्र बाबू से लेखक भीष्म साहनी की मुलाकात कहाँ पर हुई?

(क) रावलपिंडी (ख) सेवाग्राम

(ग) हरिपुरा (घ) वर्धा

प्रश्न 9. शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में झेलम नदी पर शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक किसके स्वागत की तैयारी थी?

(क) राजेन्द्र बाबू (ख) मोहनदास करमचन्द गाँधी

(ग) अब्दुल्ला गफ्फार खाँ (घ) पं. जवाहर लाल नेहरू

प्रश्न 10. फ्रांस के विख्यात लेखक का नाम है?

(क) रस्किन बाँड (ख) अनातोले

(ग) पॉवलो कोएल्हो (घ) शेक्सपियर

प्रश्न 11. अफ्रो एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में भारत से जाने वाले प्रतिनिधि मंडल में शामिल नहीं थे?

(क) कमलेश्वर (ख) डॉ. सुशील नैयर

(ग) जोगिंदर पाल (घ) बालू राव

पाठ-6

असगर वजाहत

लेखक परिचय : असगर वजाहत

जन्म / स्थान : सन् 1946, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : आरंभिक शिक्षा फतेहपुर में तथा विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से हुई।

कार्य : सन् 1955-56 से ही असगर वजाहत ने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। प्रारंभ में उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया, बाद में वे दिल्ली में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे।

रचनाएँ : कहानी संग्रह : दिल्ली पहुंचना है, स्विमिंग पूल, सब कहाँ कुछ , आधी बानी, मैं हिन्दू हूँ।

नाटक : फिरंगी लौट आए, इन्ना की आवाज़, वीरगति, समिधा, जिन लाहौर नई देख्या, अकी।

नुक्कड़ नाटक : सबसे सस्ता गोश्त (संग्रह)

उपन्यास :रात में जागने वाले, पहर दोपहर, सात आसमान, कैसी आगि लगाई।

पुरस्कार / सम्मान : साहित्यकार सम्मान,हिन्दी अकादमी से, सन् 2000 में सृजनात्मक लेखन के लिए संस्कृति पुरस्कार। नाटक 'महाबली ' के लिए 2021 का व्यास सम्मान ।

साहित्यिक विशेषताएँ : इन्होंने अपने लेखन में समाज के यथार्थ को जगह दी है। मजदूरों, आम जनता के शोषण को और शोषकों के अत्याचार को दर्शाया है। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक तथा लघुकथा तो लिखी ही है, साथ ही फिल्मों एवं धारावाहिकों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया है।

भाषाशैली : भाषा में व्यंग्य की तीक्ष्णता के साथ-साथ गंभीरता और सहजता के दर्शन होते हैं। मुहावरों और तद्भव शब्दों के प्रयोग के कारण सहज और सादगी से परिपूर्ण है। व्यंग्य का सहारा लेते हुए समाज, राजनीति और अव्यवस्था की सत्यता को उद्घाटित किया है।

शेर, पहचान, चार हाथ, साझा

विधा : लघु कथाएँ।

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : इन चार लघु कथाओं में लेखक ने शासन तंत्र के हृदयरूप, पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों का शोषण व किसानों की समस्या पर करारी चोट की है।

शेर-व्यवस्था का प्रतीक

'शेर' असगर वजाहत की प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघु कथा है। शेर **व्यवस्था का प्रतीक** है। जो तभी तक खामोश रहता है जब तक सारी जनता उसके खिलाफ नहीं बोलती। जैसे ही व्यवस्था के खिलाफ ऊँगली उठती है, सत्ता उसे कुचलने का प्रयास करती है। सत्ता में बैठे लोग जनता को विभिन्न प्रलोभन देकर उसे अपनी ओर मिलाने का प्रयास करते हैं जबकि सच्चाई यह है कि वह केवल अपना उल्लू सीधा कर रहे होते हैं। शेर द्वारा दिए गए प्रलोभनों से गधा, लोमड़ी उल्लू और कुत्तों का समूह बिना कुछ सोचे विचारे उसके मुँह में चले जा रहे थे।

प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण विश्वास : भोली भाली जनता प्रमाण को अधिक महत्व न देते हुए विश्वास के आधार पर शोषक वर्ग, सत्ता वर्ग की बात मानती है। यह जानते हुए भी कि शेर एक मांसाहारी जीव है जो सभी को खाता है, सभी जानवरों को यह विश्वास दिला दिया जाता है कि अब शेर अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का समर्थक हो गया है और वह जानवरों का शिकार नहीं करेगा। अतः जानवर उनकी बात मानकर शेर के मुँह में स्वयं प्रवेश कर लेते हैं किन्तु लेखक जैसे कुछ लोग हैं जो प्रमाण को ही अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं जिन्हें सत्ता कुचलने का प्रयास करती है।

पहचान

राजा द्वारा दिए गए हुक्म : राजा ने अपने राज्य में उत्पादन बढ़ाने के लिए खैराती, रामू, छिद्दू आदि आम जनता को यह आज्ञा दी कि अपनी आँखें बंद करके काम करें। अपने-अपने कानों में पिघला सीसा डलवा लें, अपने होंठ सिलवा लें, क्योंकि बोलना उत्पादन में सदा बाधक रहा है। फिर उन्हें कई तरह की चीजें कटवाने और जुड़वाने का हुक्म दिया गया। इससे राजा आश्चर्यजनक रूप से रातदिन प्रगति करने लगा।

राजा की निरंकुशता का परिणाम : इस कहानी में शासनतंत्र की निरंकुशता और लालच को दर्शाया गया है। यदि जनता राज्य की स्थिति को अनदेखा करती है तो शासक

वर्ग निरंकुश हो जाता है। राजा प्रगति के नाम पर समस्त साधनों को हड़प कर अपना भला करता है। ऐसे शासकवर्ग को बहरी, गूंगी और अंधी जनता पसन्द आती है जो केवल उनकी आज्ञा का पालन करे। खैराती, रामू और छिद्दू ऐसी जनता के प्रतीक हैं जो आँख मूंदकर अपने राजा पर विश्वास करते हैं पर जब तक वह अपनी आँखें खोलते हैं तब तक राजा अत्यधिक बलशाली हो चुका होता है। उसका विरोध करने की हिम्मत उनमें नहीं होती।

चार हाथ

'चार हाथ' पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल-मालिकों का लालच मजदूरों के शोषण का कारण बनता है। मिल-मालिक मजदूरों को मात्र एक कलपुर्जे के रूप में लेता है जो उसको लाभ देंगे। वह हर संभव प्रयास करता है कि उन मजदूरों का अस्तित्व समाप्त हो जाए और वह विरोध की स्थिति में न रहें ताकि उसके इशारे पर चलते हुए वे दुगुना काम कर सकें। अधिक उत्पादन के चक्कर में वह मजदूरों के लोहे के हाथ लगाता है जिससे सारे मजदूर मर जाते हैं। अंत में उसे समझ आ जाता है कि यदि अधिक उत्पादन और मुनाफा चाहिए तो मजदूरी आधी कर दो और दुगने मजदूर रख लो।

साझा

साझा में आजादी के बाद किसानों की बदहाली का वर्णन किया गया है। पूँजीपतियों व गाँव के प्रभुत्वशाली वर्ग की नज़र किसानों की जमीन और उत्पाद पर है। वह हर संभव प्रयास द्वारा उसे हासिल करना चाहता है। हाथी समाज के अमीर और प्रभुत्वशाली वर्ग का प्रतीक है जो किसानों की सारी मेहनत और कमाई धोखे से हड़प लेता है और किसानों को पता भी नहीं चलता। किसान सक्षम होते हुए भी लाचार रह जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास' कहानी के आधार पर टिप्पणी करो।

उत्तर : लघुकथा 'शेर' से ली गई इन पंक्तियों में लेखक ने भोली-भाली जनता और धूर्त सत्ता के बारे में बताया है। लेखक यह मानने को तैयार नहीं है कि शेर के मुँह में रोजगार का दफ्तर है किंतु उसे बार-बार यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया जाता है कि शेर का मुँह ही सब दु:खों का अंत है। शेर का मुँह हिंसा का प्रतीक है, यह सभी जानवर जानते हैं किंतु केवल विश्वास दिलाने पर वे स्वेच्छा से उस मुँह के अंदर जा रहे हैं। आज का

सत्ताधारी एवं राजनैतिक वर्ग भी सर्वप्रथम लोगों का विश्वास हासिल करता है उसके पश्चात् उनका शोषण करता है जिसका पता जनता को नहीं चलता। वह अंत तक यही सोचती है कि सत्ता पक्ष उसके हित के लिए काम करती है।

प्रश्न 2. पहचान लघुकथा का प्रतिपाद्य क्या है?

उत्तर : पहचान कथा का प्रतिपाद्य यह है कि राजा को बहरी, गूँगी और अँधी प्रजा पसंद आती है जो बिना कुछ बोले, बिना कुछ देखे उसकी आज्ञा का पालन करती रहे। कहानी में इसी यथार्थ की पहचान कराई गई। प्रगति और विकास के बहाने राजा उत्पादन के सभी साधनों पर अपनी पकड़ मजबूत करता जाता है। वह जनता को एकजुट होने से रोकता है और उन्हें भुलावे में रहता है। यही उसकी सफलता का राज है।

प्रश्न 3. 'चार हाथ' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए?

उत्तर : 'चार हाथ' कथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। पूँजीवादी भाँति-भाँति के उपाय कर मजदूरों को पंगु बनाने के नए-नए तरीके ढूँढते हैं और अंततः उसकी अस्मिता को ही समाप्त कर देते हैं। मजदूर विरोध करने की स्थिति में नहीं है। वे तो मिल के कल-पुर्जे बन गए है और लाचारी में आधी मजदूरी पर भी काम करने को विवश हैं। मजदूरों की यह लाचारी शोषण पर आधारित व्यवस्था का पर्दाफाश करती है।

प्रश्न 4. 'साझा' कथा का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए?

उत्तर : 'साझा' कथा में उद्योगों पर कब्जा जमाने के बाद पूँजीपतियों की नजर किसानों की जमीन और उत्पाद पर जमीं है। वह किसान को साझा खेती करने का लालच देता है और उसकी सारी फसल हड़प लेता है। किसान को पता भी नहीं चलता और उसकी सारी कमाई हाथी (पूँजीपति) के पेट में चली जाती है। यह हाथी कोई और नहीं बल्कि समाज का धनाढ्य और प्रभुत्वशाली वर्ग है जो किसानों को धोखे में डालकर उनकी सारी मेहनत डकार जाता है।

सप्रसंग व्याख्या : अगले दिन मैंने कुत्तों का एक ..... रोजगार का दफ्तर है।

सन्दर्भ : पाठ का नाम - शेर (लघुकथा)

लेखक - असगर वजाहत

प्रसंग : इन पंक्तियों में शेर को व्यवस्था का प्रतीक बताया गया है। लेखक ने दिखावा करने वालों, सत्ता का साथ देने वालों और चापलूसों पर भी व्यंग्य किया है।

व्याख्या : लेखक कहता है कि छोटे-छोटे जानवरों को विभिन्न प्रलोभनों में फंसकर शेर के मुँह में जाते हुए देखा है। कुत्तों का समूह जो कभी सत्ता के विरोध में नारे लगा रहा

था, कभी हंस और गा रहा था, वह भी व्यवस्था से डरकर शेर के मुँह में जा रहा है अर्थात् व्यवस्था का विरोध करने वालों का यह समूह व्यवस्था की शक्ति के आगे विवश है। उनका समर्थन करने तथा उनकी आज्ञा मानने के लिए विवश है। लेखक के अनुसार ये छद्म क्रांतिकारी है जो दिखावा तो सत्ता के विरोध कर रहे हैं। किंतु भीतर ही भीतर वे दुम दबाकर उसका समर्थन भी कर रहे हैं। शेर को अहिंसावादी और सभी के अस्तित्व की रक्षा करने वाला घोषित कर दिया गया है। लेखक ने शेर के कार्यालय में जाकर उसके कर्मचारियों से रोजगार के दफ्तर के बारे में पूछा। कर्मचारियों के अनुसार जनता को यह विश्वास है या फिर यह विश्वास दिलाया गया है कि शेर का मुँह ही सारे सुखों को देने वाला है, अर्थात् व्यवस्था और सत्ता ही तुम्हारे सारे दुखों को दूर करेगी। सच्चाई यह है कि प्रमाण द्वारा यह सिद्ध होता है कि व्यवस्था के कारण सारी समस्याएँ हैं किन्तु लोगों ने प्रमाण से अधिक विश्वास को महत्व दिया है।

विशेष

1. लेखक ने प्रतीकों के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।
2. शेर व्यवस्था का प्रतीक है, कुत्तों का समूह झूठे क्रांतिकारियों का, कर्मचारी सुविधाभोगी चापलूसों का और छोटे जानवर आम जनता का प्रतीक है।
3. छोटे-छोटे संवादों में गहनता छिपी है।
4. भाषा सादगी से पूर्ण चिंतन प्रधान है।
5. व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. असगर जी की कहानी संग्रह का नाम है :-

(क) अग्नि परीक्षा (ख) आकाशद्वीप

(ग) अजातशत्रु (घ) आधी बानी

प्रश्न 2. निम्न में से असगर वजाहत की भाषा की विशेषता नहीं है :-

(क) लाक्षणिकता (ख) व्यंग्यात्मकता

(ग) गांभीर्यता (घ) भावाभिव्यक्ति

प्रश्न 3. 'बूँद-बूँद' धारावाहिक का लेखन तथा 'गजल की कहानी' वृत्तचित्र का निर्देशन किया :-

(क) भीष्म साहनी (ख) फणीश्वरनाथ 'रेणु'
(ग) असगर वजाहत (घ) ब्रजमोहन व्यास

प्रश्न 4. प्रस्तुत पाठ में प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक लघुकथा है :-
(क) शेर (ख) पहचान
(ग) चार हाथ (घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. चार हाथ कहानी समाज के किस पक्ष पर प्रहार करती है?
(क) पूँजीवादी व्यवस्था (ख) मजदूरों का शोषण
(ग) पूँजीपतियों का अत्याचार (घ) सभी

प्रश्न 6. प्रगति और विकास को आधार मानकर उत्पादन पर अपनी मजबूत पकड़ राजा किस तरह बनाना चाहता है?
(क) प्रजा पर अत्याचार करके (ख) प्रजा को अंधा, बहरा और गूँगा बनाकर
(ग) क और ख (झा) प्रजा के हित में कार्य करके।

प्रश्न 7. साझा कहानी में हाथी प्रतीकार्थक है :-
(क) प्रभुत्वशाली वर्ग (ख) धनाढ्य वर्ग
(ग) पूँजीपति वर्ग (घ) सभी

प्रश्न 8. ''शेर के मुँह के अंदर रोजगार का दफ़्तार है'' कथन किसका है?
(क) गधा (ख) कुत्तों का झुंड
(ग) लोमड़ी (घ) उल्लू

प्रश्न 9. अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का जबरदस्त समर्थक किसे बताया है। (पाठ के आधार पर)
(क) लोमड़ी (ख) लेखक
(ग) गधा (घ) शेर

प्रश्न 10. शेर, चीता, मगरमच्छ के साथ साझे की खेती कौन कर चुका था?
(क) हाथी (ख) प्रभुत्वशाली वर्ग
(ग) राजा (घ) किसान

ई सामग्री- (लिंक)
लघुकथाएँ-शेर, पहचान - 19 जनवरी 2021 - https://youtu.be/EmWbg-W6FBA

पठित गद्यांश

असगर वजाहत

हालाँकि उसे खेती की हर बारीकी के बो में मालूम था, लेकिन फिर भी डरा दिए जाने के कारण वह अकेला खेती करने का साहस न जुटा पाता था । इससे पहले वह शेर, चीते और मगरमच्छ के साथ साझे की खेती कर चुका था, अब उससे हाथी ने कहा कि अब वह उसके साथ साझे की खेती करे। किसान ने उसको बताया कि साझे में उसका कभी गुजारा नहीं होता और अकेले वह खेती कर नहीं सकता । इसलिए वह खेती करेगा ही नहीं । हाथी ने उसे बहुत देर तक पट्टी पढ़ाई और यह भी कहा कि उसके साथ साझे की खेती करने से यह लाभ होगा कि जंगल के छोटे-मोटे जानवर खेतों को नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे और खेती की अच्छी रखवाली हो जाएगी । किसान किसी न किसी तरह तैयार हो गया और उसने हाथी के साथ मिलकर गन्ना बोया ।

निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए ।

1. **कौन अकेला खेती करने का साहस नहीं जुटा पा रहा था?**
   - **(i) किसान**
   - **(ii) दादा किस्म का व्यक्ति**
   - **(iii) मजदूर**
   - **(iv) इनमें से कोई नहीं**
2. **किसान ने क्या निर्णय किया ?**
   - **(i) वह साझे की खेती करेगा ।**
   - **(ii) वह अकेले खेती नहीं कर सकता ।**
   - **(iii) वह खेती करेगा ही नहीं**
   - **(iv) वह शेर के साथ मिलकर खेती करेगा**
3. **इस बार किसान ने किसके साथ मिलकर गन्ना बोया ?**
   - **(i) हाथी के साथ**
   - **(ii) शेर के साथ**
   - **(iii) मगरमच्छ के साथ**
   - **(iv) चीते के साथ**
4. **'हाथी ' किसका प्रतीक है ?**
   - **(i) ताकत का**
   - **(ii) पूँजीपती का**
   - **(iii) किसान का**
   - **(iv) मजदूर का**
5. **उपरोक्त गद्यांश के अनुसार किसे खेती की हर बारीकी के बारे में मालूम था?**
   - **(i) लेखक को**
   - **(ii) किसान को**
   - **(iii) ग्राम प्रधान को**
   - **(iv) पूँजीपति को**

पाठ-7

निर्मल वर्मा

लेखक परिचय : निर्मल वर्मा

जन्म / स्थान : सन् 1929, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

शिक्षा : इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. किया।

कार्य : चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य-विद्या संस्थान प्राग के निमंत्रण पर सन् 1959 में वहाँ गए और चेक उपन्यासों तथा कहानियों का हिन्दी अनुवाद किया। हिन्दुस्तान टाइम्स तथा टाइम्स ऑफ इण्डिया के लिए यूरोप की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं पर लेख तथा रिपोर्ताज लिखे जो उनके निबंध संग्रहों में संकलित हैं। इसके पश्चात् (1970) भारत में आकर स्वतंत्र लेखन करने लगे।

रचनाएँ : कहानियाँ - परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकांत, पिछली गरमियों में, कव्वे और काला पानी, बीच बहस में, सूखा तथा अन्य कहानियाँ आदि।

उपन्यास : वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख तथा अंतिम अरण्य। 'रात का रिपोर्टर' जिस पर सीरियल तैयार किया गया है, उनका उपन्यास है।

यात्रा संस्मरण : हर बारिश में, चीड़ों पर चाँदनी, धुंध से उठती धुन।

निबंध संग्रह : शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढ़लान से उतरते हुए।

पुरस्कार : सन् 1985 में कव्वे और काला पानी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। अन्य कई पुरस्कारों से भी इन्हें सम्मानित किया गया।

साहित्यिक विशेषताएँ : निर्मल वर्मा नई कहानी आंदोलन के अग्रज माने जाते हैं। इनके लेखों में विचारों की गहनता है। इन्होंने भारत ही नहीं यूरोप की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं पर भी अनेक लेख लिखे।

भाषा शैली : भाषा शैली में अनोखी कसावट है जो विचार सूत्र की गहनता को विविध उदाहरणों से रोचक बनाती हुई विषय का विस्तार करती है। शब्द चयन में जटिलता होते हुए भी वाक्य रचना में मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों की प्रधानता है। स्थान-स्थान पर उर्दू एवं अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग द्वारा भाषा शैली में अनेक नवीन प्रयोगों की झलक मिलती है।

मृत्यु : सन् 2005

जहाँ कोई वापसी नहीं

पाठ की विधा : यात्रा वृतांत।

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : प्रस्तुत पाठ में लेखक ने पर्यावरण संबंधी सरोकारों के साथ-साथ विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उत्पन्न मनुष्य की विस्थापन संबंधी समस्या को भी चित्रित किया है। लेखक ने यह बताना चाहा है कि यदि विकास और पर्यावरण संबंधी सुरक्षा के बीच संतुलन न बनाए रखा जाए तो हमेशा विस्थापन और पर्यावरण संबंधी समस्या सामने आती रहेगी जिससे केवल मनुष्य ही अपनी जमीन और घर से अलग नहीं होता बल्कि उसका परिवेश व संस्कृति भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाती है।

पाठ का सार

अमझर शब्द का अर्थ : एक ऐसा गाँव जो आम के पेड़ों से घिरा रहता था, जहाँ आम झड़ते थे। जब से सरकारी घोषणा हुई कि अमरौली प्रोजेक्ट के तहत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएंगे तब से आम के पेड़ सूखने लगे, उन पर सूनापन छा गया। ठीक ही तो है - आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रह कर क्या करेंगे?

आधुनिक भारत के नए शरणार्थी : जिन लोगों को औद्योगिकरण की आँधी ने अपने घर-जमीन से हमेशा के लिए अलग कर दिया वही लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहलाए।

प्रकृति एवं औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में अंतर : बाढ़ या भूकंप के कारण जब लोग अपने घर को छोड़कर कुछ समय के लिए सुरक्षित स्थान पर चले जाते हैं और स्थिति सामान्य होने पर वापिस अपने घर लौट आते हैं उन्हें प्रकृति के कारण विस्थापित कहा जाता है। जब लोगों को औद्योगीकरण व विकास के नाम पर निर्वासित (घर-जमीन से अलग) कर दिया जाता है और ये लोग फिर कभी अपने घर वापिस नहीं आ पाते, उन्हें औद्योगीकरण के नाम पर विस्थापित कहा जाता है।

यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ : यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ सर्वथा भिन्न हैं। यूरोप में मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखना पर्यावरणीय प्रश्न है जब कि भारत में यही संतुलन मनुष्य और संस्कृति के बीच बनाए रखने का भी है।

सिंगरौली की उर्वरा भूमि अपने लिए अभिशाप : सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और जंगल इतने समृद्ध थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसान अपना भरण-पोषण करते थे। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय संपदा उसके लिए अभिशाप बन

गई, तभी तो दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अपार संपदा छुप नहीं पाई। सिंगरौली जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण बैकुण्ठ और अकेलेपन के कारण काला पानी माना जाता था अब प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ।

औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण संकट : ये सच है कि औद्योगीकरण ने पर्यावरण संकट पैदा किया है। औद्योगीकरण के कारण गांव के गांव उजाड़ कर लोगों की जमीन ले ली गई। ऐसा करके वहाँ का परिवेश तो खराब हुआ ही साथ ही मनुष्य और उसका परिवेश भी उजड़ गया जिससे प्रकृति, मनुष्य व संस्कृति का संतुलन गड़बड़ा गया। औद्योगीकरण के कारण स्थापित उद्योगों ने धुएँ व कचरे से पर्यावरण संकट पैदा कर दिया। औद्योगीकरण ने मनुष्य, प्रकृति व संस्कृति के बीच संतुलन को नष्ट कर दिया है। हमें ऐसी योजनाएँ बनानी हैं जो इस संतुलन को बनाए रखकर विकास एवं प्रगति करें।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है?

उत्तर : बाढ़ या भूकंप प्रकृति की आपदाएँ हैं। प्रकृति के कारण जब लोग विस्थापित होते हैं तब यह विस्थापन अस्थायी होता है। आपदा के टलते ही लोग अपने घरों को लौट आते हैं और वहाँ पहले की तरह रहने लगते हैं। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित हुए लोग सदा-सदा के लिए अपने घर अपने परिवेश से अलग हो जाते हैं। उनकी जमीन पर कोई उद्योग स्थापित हो जाता है फिर वे कभी भी अपने घरों को लौट नहीं पाते। औद्योगीकरण की आँधी उन्हें घर और परिवेश से उजाड़ देती है। इन्हीं लोगों को आधुनिक भारत के नए शरणार्थी भी कहा गया है।

प्रश्न 2. यूरोप और भारत की पर्यावरण संबधी चिंताएँ किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर : यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है जबकि भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारंपरिक संबध बनाए रखने का हो जाता है। दोनों देशों की पर्यावरण संबधी चिंताओं में अंतर है।

प्रश्न 3. औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है। क्यों और कैसे?

उत्तर : यह बिल्कुल सच है कि औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट खड़ा कर दिया है। औद्योगीकरण के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का बडी मात्रा में दोहन हो रहा है। पेड़ काटे जा रहे हैं, जंगलों का सफाया किया जा रहा है। उद्योगों से निकला कचरा पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। इससे वायु, जल, पृथ्वी, ध्वनि, आकाश सभी में प्रदूषण फैल रहा है।

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) किन्तु कोई भी प्रदेश ..... हजारों गाँव उजाड़ दिये गये थे।

सन्दर्भ : पाठ का नाम - जहाँ कोई वापसी नहीं।

लेखक : निर्मल वर्मा

प्रसंग : इस पाठ में लेखक ने विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उत्पन्न विस्थापन पर विचार किया है।

व्याख्या : लेखक का मानना है कि कोई भी प्रदेश आज के लालची युग में अपने अलगाव में सुरक्षित नहीं रह सकता अर्थात आज का युग लालच का युग है इसमें कोई भी प्रदेश दूसरों से कटकर सुरक्षित नहीं है। कभी-कभी किसी प्रदेश की अच्छी संपदा ही उसके अभिशाप का कारण बन जाती है। दिल्ली के सत्ताधारियों तथा उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अपार खनिज संपदा भी छिपी नहीं रही। उनके लालच ने इस प्रदेश की अपार संपदा को भी ढूँढ निकाला। विस्थापन की एक लहर रिहंद बाँध बनने से आई थी, जिसके कारण हज़ारों गाँव उजाड़ दिये गये थे अर्थात् रिहंद बाँध की परियोजना हजारों गाँवों के उजड़ने का कारण बनी।

विशेष : 1. खड़ी बोली व विषयानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. रिहंद बाँध से विस्थापन की समस्या का वर्णन किया गया है।
3. तत्सम, तद्भव शब्दावली की अधिकता है।
4. शैली - विचारात्मक व चिंतन प्रधान

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. सन् 1959 में चेक गणराज्य जाने का उद्देश्य क्या था?

(क) उपन्यासों और कहानियों का हिन्दी में लेखन
(ख) प्राग के लोगों को हिन्दी की शिक्षा देना
(ग) प्राग में हिन्दी विषय के शिक्षक के रूप में नियुक्ति
(घ) उपन्यासों तथा कहानियों का हिन्दी अनुवाद

प्रश्न 2. निर्मल वर्मा जी ने यूरोप की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर रिपोतार्ज और लेख किस अखबार में लिखे?

(क) टाइम्स ऑफ इंडिया और नवभारत टाइम्स
(ख) हिन्दुस्तान टाइम्स और नवभारत टाइम्स
(ग) हिन्दुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इंडिया
(घ) द हिन्दू और नवभारत टाइम्स

प्रश्न 3. नयी कहानी आंदोलन के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं :-

(क) निर्मल वर्मा (ख) महादेवी वर्मा

(ग) राजकुमार वर्मा (घ) श्रीराम वर्मा

प्रश्न 4. निर्मल वर्मा जी के किस उपन्यास को आधार बनाकर सीरियल बनाया गया?

(क) चीड़ो पर चाँदनी (ख) परिंदे

(ग) रात का रिपोर्टर (घ) तीन एकांत

प्रश्न 5. सन् 1985 में 'कब्बे और काला पानी' संग्रह पर कौन सा पुरस्कार दिया गया?

(क) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ख) साहित्य अकादमी

(ग) शलाका सम्मान (घ) भारत-भारती पुरस्कार

प्रश्न 6. विस्थान संबंधी मनुष्य की यातना को वर्मा जी ने किस लेख के माध्यम से व्यक्त किया है?

(क) लालटीन की छत (ख) जहाँ कोई वापसी नहीं

(ग) एक चिथड़ा सुख (घ) चीड़ो पर चाँदनी

प्रश्न 7. बढ़ते औद्योगीकरण के दूरगामी प्रभाव से समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) विस्थापन की समस्या (ख) प्राकृतिक सौंदर्य का क्षय

(ग) पर्यावरण विनाश (घ) सभी

प्रश्न 8. सिंगरौली गाँव का नाम किस पर्वत शृंखला के नाम पर पड़ा?

(क) सृंगावली (ख) विन्धयाचल

(ग) मेहरौली (घ) हिमालयन

प्रश्न 9. लेखक को दिल्ली स्थिति किस संस्था की तरफ से सिंगरौली की यात्रा पर भेजा गया था?

(क) लोकायतन (ख) सेवाग्राम

(ग) लोकायन (घ) राष्ट्र भाषा संस्था

प्रश्न 10. स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजडी रही है :-

(क) पाश्चात्य अंधानुकरण (ख) विस्थापन

(ग) औद्योगीकरण (घ) क व ग दोनों

पठित गद्यांश

(जहाँ कोई वापसी नहीं)

भारत की सास्कृतिक विरासत यूरोप की तरह म्यूजियम्स और संग्रहालयों में जमा नहीं थी– वह उन रिश्तों से जीवित थी, जो आदमी को उसकी धरती, उसके जंगलों, नदियों एक शब्द में कहें – उसके समूचे परिवेश के साथ जोड़ते थे । अतीत का समूचा मिथक संसार पोथियों में नहीं, इन रिश्तों की अदृश्य लिपि मे मौजूद रहता था । यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है – भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है ।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए ।

1. **भारत की सांस्कृतिक विरासत किसमें निहित है ?**

   (i) संग्रहालयों में **(ii) परिवेश में**

   (iii) जंगलों में **(iv) रिश्तों में**

2. **गद्यांश में किसके मिथक संसार की बात हो रही है ?**

   (i) यूरोप की **(ii) अतीत के रिश्तो की**

   (iii) भारत की **(iv) मनुष्य की**

3. **रिश्तों की अदृश्य लिपि से आप क्या समझते हैं ?**

   (i) मनुष्य के आपसी संबंध **(ii) भारत की सांस्कृतिक पहचान**

   (iii) प्रकृति से रिश्ते **(iv) मनुष्य और प्रकृति का संबंध**

4. **'मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन' से क्या अभिप्राय है ?**

   (i) मनुष्य और धरती का संबंध

   (ii) अपने परिवेश से संबंध

   (iii) पर्यावरण और मनुष्य का संबंध

   (iv) पर्यावरण का रक्षण

5. **भारत में पर्यावरण का प्रश्न किससे संबंधित है ?**

   (i) मनुष्य से **(ii) संस्कृति से**

   (iii) प्रकृति से **(iv) परिवेश से**

पाठ-9

ममता कालिया

लेखिका परिचय : ममता कालिया।

जन्म / स्थान : 1940, मथुरा, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : उनकी शिक्षा के कई पड़ाव रहे जैसे नागपुर, पुणे, इंदौर, मुम्बई आदि। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया।

कार्य : अध्यापन कार्य : दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी प्राध्यापिका रही। एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय मुम्बई में अध्यापन कार्य, महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद में प्रधानाचार्या रही।

निदेशक कार्य : भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता में निदेशक रही।

स्वतंत्र लेखन कार्य : वर्तमान में नयी दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

रचनाएँ : उपन्यास : बेघर, नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, दौड़।

कहानी संग्रह : पच्चीस साल की लड़की, थिएटर, रोड के कौवे। इसके अतिरिक्त 12 कहानी संग्रह है जो 'संपूर्ण कहानियाँ' नाम से दो खंडों में प्रकाशित है।

एकांकी संग्रह : यहाँ रहना मना है, आप न बदलेंगे।

काव्य : खाँटी, घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूँ।

अंग्रेजी काव्य संग्रह : Tribute to Papa and Other Poem

पुरस्कार : सरस्वती पत्रिका का कहानी पत्रिका सम्मान। अभिनव भारती का रचना सम्मान, कलकत्ता। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का कहानी सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान प्राप्त किया। 2017 का व्यास सम्मान ।

साहित्यिक विशेषताएँ : मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को अपने लेखन में स्थान दिया है। लेखन में कहीं सटीक व्यंग्य है तो कहीं कल्पना और रूमानियत है। युवा मन के आकर्षण और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

भाषा शैली : साधारण शब्दों को भी आकर्षक भाषा शैली में प्रस्तुत करना ममता

कालिया की विशेषता है। विषय के अनुरूप सहज भावाभिव्यक्ति, शब्दों की परखता, सजीवता, सरलता, सुबोधता, व्यंग्य की सटीकता और रोचकता उनकी कहानियों के प्राण हैं। तत्सम्, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ ग्रामीण अंचल के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

दूसरा देवदास

विधा : कहानी

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्त्व और उसकी गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती है। कहानी से यह सिद्ध होता है कि प्रेम के लिए किसी नियत व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वतः ही घटित हो जाता है। 21वीं सदी में भोग विलास की संस्कृति ने प्रेम का स्वरूप अधिकतर उच्छृंखल कर दिया है। ऐसी स्थिति में यह कहानी प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित करती है और दूसरी तरफ युवा मन की संवेदना, भावना और कल्पनाशीलता को भी प्रस्तुत करती है।

पाठ का सार

हर की पौड़ी का मनोहारी दृश्य : हर की पौड़ी पर संध्या के समय गंगा की आरती का रंग ही निराला होता है। भक्तों की भीड़ मनोकामना की पूर्ति के लिए फूल, प्रसाद आदि खरीदती है। उस समय पंडे और गोताखोर सक्रिय हो जाते हैं। चारों तरफ पूजा का वातावरण है। पंच मंजिली नीलांजलि में लगे, सहस्र दीप जल उठते हैं और आरती शुरु हो जाती है। मनौतियों के दिये लिए हुए फूलों के छोटे-छोटे दोने गंगा की लहरों पर इठलाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। पूरे वातावरण में चंदन और धूप की सुगंध फैली हुई और भक्तजन संतोष भाव से भर उठते हैं।

गंगापुत्रों का जीवन परिवेश : गंगापुत्र उन गोताखोरों को कहते हैं जो गंगा में डुबकी लगाकर भक्तों द्वारा छोड़े गए पैसों को इकट्ठा करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इनका जीवन गंगा पर ही निर्भर रहता है ये रेजगारी बटोरकर अपनी बहन या बीवी को कुशाघाट पर दे आते हैं जो इन्हें बेचकर नोट कमाती है। कभी-कभी इनके साथ हादसा भी हो जाता है किंतु बगैर परवाह किए ये अपने कार्य में लगे रहते हैं।

नायक-नायिका का प्रथम परिचय : कहानी का नायक संभव है और नायिका पारो है। संभव कुछ दिनों के लिए अपनी नानी के घर आया हुआ है। नास्तिक होते हुए भी अपने माता-पिता के कहने पर गंगा का आशीर्वाद लेने आया हुआ है। नायक-नायिका का प्रथम

परिचय गंगा किनारे के मंदिर में होता है। संभव मंदिर में पैसे चढ़ाने के उपरांत अपना हाथ कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ाता है तभी एक नाजुक सी कलाई भी कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ती है। संभव उस गुलाबी कपड़ों में भीगी लड़की को देखता है। पुजारी दोनों को दम्पत्ति समझकर आशीर्वाद देता है- 'सुखी रहो, फूलो फलो, जब भी आओ साथ ही आना, गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।'' लड़की घबराहट में छिटककर दूर हो गई और तेजी से चली गई। इस प्रकार दोनों के बीच प्रथम आकर्षण हर की पौड़ी पर उत्पन्न होता है जो निरन्तर घटने वाली घटनाओं के तारतम्य से प्रेम में बदल जाता है। इसे प्रथम दृष्टि का प्रेम कहा जा सकता है।

संभव की मनःस्थिति (लड़की से मिलने के पश्चात्) : उस छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन में कल्पना और सपनों के पंख लगा दिए। उसके अंदर पुनः मिलने की बेचैनी पैदा हो गयी। यह एक ऐसी निराली अनुभूति थी जो बेचैनी के साथ सुख भी प्रदान कर रही थी। वह मन ही मन उसके रूप को याद कर उससे बातचीत के बारे में सोचने लगा। ऐसा आकर्षण उसे प्रथम बार महसूस हो रहा था।

लड़की का आँख मूंदकर अर्चना करना, माथे पर भीगे बालों की लट, कुरते को छूता गुलाबी आंचल और उसका सौम्य स्वर, संभव सारी रात इन्हीं ख्यालों में खोया रहा। यकायक उसे बिंदिया और शृंगार के अन्य साधन भाने लगे और 'मांग में तारे भरने' जैसे गीत अच्छे लगने लगे।

मनसा देवी पर मनोकामना की गाँठ : मनसा देवी पर सभी भक्तजन लाल-पीले धागे मनोकामना हेतु बाँध रहे थे। संभव ने भी पूरी श्रद्धा के साथ मनोकामना की गाँठ लगाई जिसमें पुनः उस लड़की से मिलने की इच्छा थी। अब प्रथम आकर्षण प्रेम में परिवर्तित हो गया था। दूसरी तरफ पारो ने भी इसी प्रकार की आशा लिए मनोकामना की गाँठ लगाई। दोनों ही एक-दूसरे से मिलने को आतुर थे। अचानक मंदिर के बाहर दोनों का पुनःमिलन हो जाता है दोनों ने अपनी-अपनी मनोकामना की गाँठ के इतनी शीघ्र परिणाम की अपेक्षा नहीं की थी।

पारो की मनोदशा : पारो की मनोदशा भी संभव से भिन्न न थी, वह स्वयं भी उसके आकर्षण में बंध चुकी थी। युवा मन का निश्चल प्रेम केवल एक झलक देखने के लिए व्याकुल था। मनसा देवी पर लगी मनोकामना की गाँठ का परिणाम संभव से मिलने के रूप में आया तो वह आश्चर्यमिश्रित सुख में डूब गई। सफेद साड़ी में उसका चेहरा लाज से गुलाबी हो रहा था क्योंकि उसे भी इस बात की प्रतीक्षा थी। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और मन ही मन एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया। मनोकामना पूरी होने से देवी पर आस्था और संभव के प्रति प्रेम और अधिक दृढ़ और स्थायी हो गया।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'देवदास' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखिका ने कहानी का शीर्षक 'दूसरा देवदास' सोच समझकर रखा है जो कहानी के मूल कथ्य को स्पष्ट करने में समर्थ है। शरतचन्द्र की रचना 'देवदास' में नायक देवदास पारो पर अपना प्रेम लुटाता है और अंत तक यह प्रेम एक निश्चल रूप में जीवित रहता है। उसी प्रकार संभव भी पारो को प्राप्त करने के लिए बेचैन है। देवदास और पारो निश्चल प्रेम के प्रतीक है। इसलिए संभव के लिए लेखिका ने 'दूसरा देवदास' शीर्षक रखा।

प्रश्न 2 : 'मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती हैं।' कथन के आधार पर पारों की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर : पारो भी संभव से प्रेम करने लगी थी। हर की पौड़ी पर लड़के के साथ छोटी सी मुलाकात ने पारो को विचलित कर दिया। वह मन ही मन उससे प्रेम करने लगी थी व दोबारा उससे मिलना चाहती थी। उसने भी कुछ ऐसी ही मनोकामना की पूर्ति के लिए धागा बाँधा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि मनसा देवी से माँगी गई मुराद इतनी जल्दी पूरी हो जायेगी। वह संभव से मिलने के बाद प्रसन्न थी। वह हैरान भी थी कि उसकी इच्छा इतनी जल्दी पूरी हो गई।

सप्रसंग व्याख्या : एकदम प्रकोष्ठ में चामुंडा ..... शीश नवाते।

सन्दर्भ : पाठ का नाम - दूसरा देवदास

लेखिता - ममता कालिया

प्रसंग : इस कहानी में लेखिका ने युवा मन के प्रेम, भावों, प्रथम आकर्षण और उससे उत्पन्न संवेदनाओं को व्यक्त करने के साथ-साथ धार्मिक स्थानों पर बढ़ती व्यापारिक वृत्ति का भी वर्णन किया है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में लेखिका ने धार्मिक स्थलों पर बढ़ते व्यापार का वर्णन किया है। मंसा देवी में पहुँचने के बाद संभव ने चढ़ावा चढ़ाने के लिए एक थैली खरीदी। मंदिर के कक्ष में चामुंडा रूप में मंसादेवी विराजमान थी। आसपास का वातावरण भक्तिमय था किंतु मानव का ये स्वभाव है कि वह बिना लाभ की कामना के कोई कार्य नहीं करता। यहाँ तक कि ईश्वर की भक्ति के पीछे भी अपने और अपनों के सुख की कामना रहती है। लोग भगवान के दर्शन बाद में करते हैं, पहले कामनापूर्ति की गाँठ बाँधते, लेन-देन की यह प्रवृत्ति

भक्ति और पूजा में भी व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ती। अन्य धार्मिक स्थलों की भाँति यहाँ भी व्यापार था। अर्थात् बड़े चढ़ावे वालों को पहले और अलग से दर्शन करने की सुविधा थी और आम लोगों को केवल दूर से ही दर्शन कराए जा रहे थे। यह पुजारियों की व्यापारिक वृत्ति की ओर संकेत करता है।

विशेष

1. मानव की स्वार्थ वृत्ति और व्यापार वृत्ति को व्यंग्यात्मकता शैली में प्रस्तुत किया है।
2. धार्मिक स्थलों पर भक्ति के स्थान पर पैसे को अधिक महत्व दिया जाता है।
3. भाषा सरल, चित्रात्मक और सहज है।
4. तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।

- बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. कथा-साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के द्वारा किस सम्मान से सम्मानित किया गया?

(क) साहित्य भूषण (ख) व्यास सम्मान
(ग) सोवियत लैंड पुरस्कार (घ) भारत-भारती सम्मान

प्रश्न 2. युवामन की संवेदना, भावना और विचार जगत की उथल-पुथल को ध्यान में रखकर कालिया जी ने किस कहानी का सृजन किया?

(क) बेघर (ख) प्रेम कहानी
(ग) दूसरा देवदास (घ) एक पत्नी के नोट्स

प्रश्न 3. प्रेम का प्रथम अंकुरण किसके हृदय में उत्पन्न हुआ?

(क) पारो (ख) देवदास
(ग) संभव (घ) क और ग दोनों

प्रश्न 4. किस कहानी का कथ्य, विषयवस्तु, भाषा और शिल्प बेजोड़ है?

(क) तीसरी कसम (ख) संवादिया
(ग) दूसरा देवदास (घ) उसने चुना था

प्रश्न 5. प्रस्तुत कहानी के कथ्य को किस धार्मिक और पवित्र स्थल के इर्द-गिर्द रचा गया है?

(क) ऋषिकेश (ख) उज्जैन
(ग) राम की पौड़ी (घ) हर की पौड़ी

प्रश्न 6. पाँच बजे जो फूलों के दोने एक रुपये में बिक रहे थे, अचानक वे दो-दो रुपये के क्यों हो गये?

(क) फूलों की कमी के कारण (ख) फूलों की माँग बढ़ जाने के कारण
(ग) केवल क (घ) इनमें से काई नहीं

प्रश्न 7. प्रस्तुत पाठ में गंगापुत्र की उपाधि से किसे सम्मानित किया गया है?

(क) गोताखोर (ख) भीष्म पितामह को
(ग) देवव्रत को (घ) पुजारी को

प्रश्न 8. पूजा-पाठ में नियमित आस्था किसकी नहीं थी?

(क) गोताखोर (ख) संभव
(ग) लेखिका (घ) देवदास

प्रश्न 9. पुजारी द्वारा युगल समझ कर आशीर्वाद देने की गलती कैसे हुई?

(क) पारो के द्वारा 'हम' शब्द का प्रयोग करना
(ख) दोनों का सन्निकट खड़े होना
(ग) संभव के द्वारा लड़की को एकटक देखना
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10. सद्यः स्नाता शब्द का तात्पर्य है?

(क) प्रातःकालीन स्नान (ख) तुरंत नहाकर आयी हुई नायिका
(ग) दौड़कर आना (घ) नदी में किया गया स्नान

पठित गद्यांश

दूसरा देवदास

यकायक सहस्र दीप जल उठते हैं, पंडित अपने आसन से उठ खड़े होते हैं । हाथ में अंगोछा लपेट के पंचमंजिली नीलांजलि पकड़ते हैं और शुरू हो जाती है आरती । पहले पुजारियों के झर्राए गले से समवेत स्वर उठता है – जय गंगे माता, जो कोई तुझको घ्याता, सारे सुख पाता, जय गंगे माता । घंटे घड़ियाल बजते हैं । मनौतियों के लिए लिए हुए फूलों की छोटी–छोटी किश्तियाँ गंगा की लहरों पर इठलाती हुई आगे बठ़ती हैं । गोताखोर दोने पकड़, उनमें रखा चढ़ावे का पैसा उठाकर मुँह में दबा लेते हैं ।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए ।

1. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से अवतरित है ?

(क) देवदास (ख) दूसरा देवदास

(ग) क व ख (दोनों) (घ) इनमें से कोई नहीं

2. 'यकायक सहस्र दीप जल उढे' कहाँ ?

(क) हर की पौड़ी पर (ख) राम की पौड़ी पर

(ग) वृदावन में (घ) मंदिरों में

3. पडित ने अपने हाथ में क्या पकड़ा ?

(क) आसन (ख) दीपक

(ग) पंचमंजिली आरती (घ) अंगोछा

4. भर्राए गले से समवेत स्वर किनका उठता है ?

(क) भक्तों का (ख) पुजारियों का

(ग) लोगों का (घ) सभी

5. गोताखोर क्या करते है ?

(क) दोना पकड़ते है (ख) पैसा मुँह में दबाते हैं

(ग) क व ख (दोनों) (घ) डुबकी लगाने का

पाठ-10

हजारी प्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय : हजारी प्रसाद द्विवेदी।

जन्म / स्थान : सन् 1907, गांव आरत दुबे का छपरा, जिला बलिया, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। 1930 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की।

कार्य : 1940-50 तक द्विवेदी जी हिन्दी भवन, शांति निकेतन के निदेशक रहे। सन् 1950 में वाराणसी के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। 1952-53 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रहे। 1955 में वे प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य राष्ट्रपति के नामिनी नियुक्त हुए। 1960-67 तक पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे। 1967 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में रेक्टर नियुक्त हुए। यहाँ से अवकाश ग्रहण करने पर वे भारत सरकार की हिन्दी विषयक अनेक योजनाओं से संबद्ध रहे। जीवन के अंतिम दिनों में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष थे।

रचनाएँ : निबंध संकलन : अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज तथा आलोक पर्व।

उपन्यास : चारूचंद्र लेख, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा तथा अनामदास का पोथा।

आलोचनात्मक निबंध : सूर साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य योजना। द्विवेदी जी की सभी रचनाएँ हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली (के ग्यारह खंडों) में संकलित है।

पुरस्कार : आलोक पर्व पुस्तक पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट् की मानद उपाधि दी। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया।

साहित्यिक विशेषताएँ : द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बंगला आदि भाषाओं एवम् इतिहास, दर्शन, संस्कृति, धर्म आदि विषयों में उनकी विशेष रूचि थी। इसी कारण उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ और

विषय वैविध्य के दर्शन होते हैं। वे परंपरा के साथ आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे।

भाषा शैली : भाषा सरल एवं प्रांजल है। व्यक्तित्व व्यंजकता और आत्म परकता उनकी शैली की विशेषता है। व्यंग्य शैली के प्रयोग ने उनके निबंधों पर पाण्डित्य के बोझ को हावी नहीं होने दिया है। भाषा शैली की दृष्टि से उन्होंने हिंदी की गद्य शैली को एक नया रूप दिया।

मृत्यु : सन् 1979.

कुटज

पाठ की विधा : निबंध।

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : कुटज हिमालय पर्वत की ऊँचाई पर सूखी शिलाओं के बीच उगने वाला एक जंगली पौधा है। इसमें सौन्दर्य व सुगंध न होते हए भी मानव के लिए एक संदेश है। कुटज अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति, आत्म निर्भरता एवं विषम परिस्थितियों में भी शान से जीता है और मानव को भी यही संदेश देता है। इस निबंध का उद्देश्य यह बताना है कि सामान्य से सामान्य वस्तु मे भी विशेष गुण हो सकतें है।

पाठ का सार

हिमालय और कुटज : कहा जाता है कि पर्वत शोभा के निकेतन (घर) होते हैं। हिमालय को तो पृथ्वी का मानदण्ड कहा जाता है। लोग इसे शिवालिक शृंखला भी कहते है। अर्थात् शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा प्रतीत होता है। यहाँ काली-काली चट्टानों और उनके बीच की शुष्कता को झेलकर भी कुछ ठिगने से पौधे मस्त मौला से दिख रहे हैं। ये भयंकर गर्मी की मार को झेलकर भी बेहया से जी रहे हैं। ये पौधे कठोर पत्थरों की छाती को चीरकर गहरी खाईयों से रस खींचकर सरस बने हुए हैं।

नाम से रूप की पहचान : हिमालय पर्वत पर लगे इन ठिगने से पेड़ों में एक पेड़ को लेखक पहचानता है किन्तु उसका नाम याद नहीं आता। नाम के बिना रूप की पहचान अधूरी रह जाती है। यूँ तो इसे अनेक नाम लेखक दे सकता था किन्तु नाम तो वह होना चाहिए जिसे समाज की स्वीकृति मिली हो। तभी लेखक को याद आता है कि इस ठिगने पौधे का नाम तो कुटज है।

गाढ़े का साथी : संस्कृत साहित्य का परिचित नाम 'कुटज' लेकिन कवियों ने इसकी सदैव उपेक्षा की है। कालीदास ने यक्ष द्वारा मेघ की अभ्यर्थना कराते समय कुटज के फूलों की ही अंजलि दिलवाई थी। ऐसे समय में जब कोई फूल नहीं था, मुसीबत के समय इसी के द्वारा पूजा सम्पन्न होने के कारण इसे गाढ़े का साथी कहा गया।

अपराजेय जीवनी शक्ति : कुटज का पौधा नाम और रूप दोनों में ही अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है। ये भयंकर गर्मी की लू के थपेड़े खाकर भी हरा-भरा बना रहता है। यह पाताल की छाती चीरकर भी अपना प्राप्य वसूल लेता है, भोग्य खींच लेता है। यही प्रेरणा कुटज मानव को भी देता है कि उसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी किसी के आगे गिड़गिड़ाना नहीं है, किसी के आगे घुटने नहीं टेकने, दाँत नहीं निपोरने वरन् संघर्ष करते हुए सफलता पानी है। मनुष्य को स्वयं के लिए नहीं बल्कि सर्व के लिए न्योछावर होना है।

स्वावलंबी कुटज : सुख और दु:ख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है और दुखी वह है जिसका मन परवश है। परवश अर्थात् दूसरों की खुशामद करने, तलवे चाटना आदि। कुटज धन्य है क्योंकि वह तो अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने ऊपर सवारी नहीं करने देता।

कुटज शब्द के विभिन्न अर्थ : कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो। कुट घड़े को भी कहते हैं और घर को भी कहते हैं। कुट अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहे जाते हैं। घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे। कोई और बात रही होगी। संस्कृत में 'कुटिहारिका' और 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं। एक ज़रा गलत ढ़ंग की दासी को कुटनी भी कह दिया जाता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : कुटज क्या केवल जी रहा है - लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

उत्तर : 'केवल जी रहा है' शब्दों से लगता है जैसे कोई मजबूरी में जी रहा है लेकिन कुटज के साथ ऐसा नहीं है। वह तो अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर जी रहा है और केवल जी ही नहीं रहा शान से, स्वावलंबन के साथ जी रहा है।

इस प्रश्न से मानव स्वभाव की इन कमजोरियों पर प्रकाश पड़ता है- बहुत से लोग 'जीना है' - केवल इसलिए विवशता पूर्वक जीते हैं। उनमें जिजीविषा (जीने की इच्छा) शक्ति की कमी होती है। ऐसे लोगों में संघर्ष का अभाव होता है। जो मिल जाता है, उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। वे कठिन परिस्थितियों से टकराकर अपना प्राप्य वसूल नहीं कर पाते।

वे मन से हार चुके हैं। जब तक वे अपनी इस प्रवृत्ति को नहीं त्यागेंगे, तब तक उनके जीवन में आनन्द नहीं आएगा।

प्रश्न 2. कुटज की जीवन जीने की कला से आप क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं? उसके माध्यम से लेखक ने मनुष्य की किन कमजोरियों की ओर संकेत किया है?

उत्तर : कुटज की जीवन जीने की कला से हम यह प्रेरणा ग्रहण करते हैं कि हमें विषम परिस्थितियों में जीने की कला आनी चाहिए। हर हाल में जिओ और मस्ती के साथ जियो। हमें आत्मसम्मान के साथ जीना चाहिए। जहाँ से भी संभव हो अपना प्राप्य पाने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए चाहे पाताल की छाती भी क्यों न भेदनी पड़े। किसी की चापलूसी मत करो और अपने मन पर नियंत्रण रखो। ईर्ष्या द्वेषभावना से उपर उठना चाहिए।

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

दुख और सुख तो मन ..... दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है।

सन्दर्भ : पाठ का नाम - कुटज। लेखक - हजारी प्रसाद द्विवेदी।

प्रसंग : लेखक ने कुटज के जीवन को प्रेरणादायी बताते हुए सुखी और दुखी व्यक्ति की विवेचना की है।

व्याख्या : लेखक कहता है कि सुख और दुख तो मन के दो भाव हैं। व्यक्ति सुखी भी रह सकता है, दुखी भी। जिस व्यक्ति का मन अपने वश में है, वह सुखी है और जिस व्यक्ति का मन परवश होता है अर्थात् दूसरों के अधीन होता है, वह दु:खी रहता है। ऐसे लोगों की संकल्प शक्ति क्षीण (कमजोर) होती है। परवश अर्थात् स्वयं को छोटा समझना, दूसरों की चापलूसी करना, दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना अर्थात् ऐसे लोग कोई भी कार्य अपनी इच्छा से नहीं कर पाते, न ही शीघ्र कोई निर्णय ले पाते हैं। ऐसे लोग सदैव दूसरों को फँसाने, नीचा दिखाने के लिए चाल चलते हैं। अपने दोषों को छिपाने के लिए दूसरों के दोष निकालते हैं।

विशेष

1. दुख और सुख की समीक्षा की गई है।
2. विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
3. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग है।
4. तत्सम प्रधान शब्दावली।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 1955 में प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य और राष्ट्रपति का नामिनी किसे नियुक्त गया ?

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) सोहन लाल वर्मा
(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) श्री राम वर्मा

प्रश्न 2. किस पुस्तक पर द्विवेदी जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ?

(क) विचार और वितर्क (ख) विचार और वीथि
(ग) आलोक पर्व (घ) रस–मीमांसा

प्रश्न 3. भारत सरकार ने द्विवेदी जी को किस अलंकरण से विभूषित किया?

(क) भारत रत्न (ख) पद्म विभूषण
(ग) पद्म श्री (घ) पद्म भूषण

प्रश्न 4. अपराजेय जीवनीशक्ति स्वालंबन आत्म विश्वास और विषम परिस्थितियों में भी शान से खड़ा है?

(क) हिमालय (ख) लेखक
(ग) कुटज (घ) हिन्दी साहित्य

प्रश्न 5. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और आचार्य क्षिति मोहन सेन का सान्निध्य किसे प्राप्त हुआ?

(क) श्री धर पाठक (ख) नलिन विलोचन शर्मा
(ग) रामविलास शर्मा (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 6. संपूर्ण हिमालय को देख कर किसी के मन में मूर्ति स्पष्ट होगी –

(क) समाधिस्थ महादेव (ख) समाधिस्थ विष्णु
(ग) समाधिस्थ कृष्ण (घ) समाधिस्थ ब्रह्मा

प्रश्न 7. 'ये भी पाषण की छाती फोड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लेते हैं।' इस पंक्ति से कुटज की किस विशेषता का पता चलता है?

(क) जिजीविषा (ख) दूसरों का हक छीनने की सोच
(ग) मरने की चाह (घ) कोई नहीं

प्रश्न 8. कुटज के माध्यम से मानव को उपदेश दिया गया है–

(क) विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए लक्ष्य प्राप्त करना

(ख) विषम परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देना

(ग) अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर असंभव को भी संभव पर दिखाना।

(घ) क व ग दोनों दोनों

प्रश्न 9. मन की परवशता का परिणाम है –

(क) मानव सुखी होना (ख) मानव का दु:खी होना

(ग) मानव की सफलता का होना (घ) क व ग दोनों

प्रश्न 10. कुटज हरा–भरा व जीवंत बना रहता है –

(क) शिवालिक की शुष्क पहाड़ियों पर

(ख) कंचनजंघा की बर्फीली पहाड़ियों पर

(ग) हिमालय पर्वत की चट्टानों पर

(घ) कोई नहीं

पठित गद्यांश

कुटज

रूप की तो बात ही क्या है। बलिहारी हैं इस मादक शोभा की । चारों ओर कुपित यमराज के दाहण नि:श्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से अधिक कठोर पाषाण की कारा में रूद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है । और मूर्ख के मस्तिक से भी अधिक सूने गिरि कांतर में भी ऐसा मस्त बना हुआ है कि ईर्ष्या होती है । कितनी कठिन जीवनी–शक्ति है। प्राण ही प्राण को पुलकित करता है, जीवनी–शक्ति ही जीवनी –शक्ति को प्रेरणा देती है।

निमनलिखित प्रश्नों को हल कीजिए ।

1. गद्यांश में रूप का आशय है-

(क) व्यक्ति सत्य **(ख) समाज सत्य**

(ग) संस्कृति सत्य **(घ) कोई नहीं**

2. लेखक किसी मादक शोभा पर बलिहारी होने की बात कर रहा है।

(क) संस्कृति **(ख) कुटज**

(ग) फूल **(घ) यमराज**

3. धधकती लू किसा प्रतीक है का अभिप्राय क्या है ?

(क) मादक शोभा **(ख) यमराज का दारूण नि:श्वास**

(ग) दुर्जन **(घ) पौधे का**

4. पाषाण की कारा में रूद्ध अज्ञात जल-स्रोत से रस खींचकर सरस कौन बना हुआ है ?

(क) मानव **(ख) जीवन**

(ग) कुटज **(घ) दुर्जन**

5. लेखक को कुटज से ईर्ष्या क्यों होती है ?

(क) सूने गिरि-कांतर में भी मस्त खड़ा है ।

(ख) अज्ञात जलस्रोत से बरबस ही रस खींच लेता है ।

(ग) धधकती लू में भी हरा - भरा है

(घ) उपरोक्त सभी

परिशिष्ट

उत्तर संकेत (गद्य खंड)

पाठ–1

1. घ	2. ख	3. ग	4. ग	5. ख	6. घ	7. ख
8. ग	9. ग	10. ख				

पाठ–2

1. घ	2. घ	3. क	4. ग	5. क	6. ग	7. घ
8. क	9. ख					

पाठ–3

1. ग	2. ग	3. घ	4. क	5. ग	6. ख	7. क
8. क	9. घ	10. क				

पाठ–4

1. क	2. ख	3. ग	4. ख	5. ख	6. ग	7. क
8. क	9. घ	10. क				

पाठ–5

1. क	2. घ	3. ख	4. घ	5. ग	6. क	7. क
8. ख	9. घ	10. ख	11. ख			

पाठ–6

1. घ	2. क	3. ग	4. क	5. क	6. ग	7. घ
8. ख	9. घ	10. ख				

पाठ–7

1. घ	2. ग	3. क	4. ग	5. ख	6. ख	7. घ
8. क	9. ग	10. घ				

पाठ–8

1. ख	2. घ	3. ख	4. घ	5. ख	6. ग	7. क
8. घ	9. ख	10. ख				

पाठ–9

1. क	2. ग	3. घ	4. ग	5. घ	6. ख	7. क
8. ख	9. घ	10. ख				

पाठ–10

1. ग	2. ग	3. घ	4. ग	5. घ	6. क	7. क
8. घ	9. ग	10. ग				

अंतराल भाग-2

1. सूरदास की झोपड़ी

3. बिस्कोहर की माटी

4. अपना मालवा : खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में

पाठ-1

सूरदास की झोपड़ी

मुख्य बिन्दु

- प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'रंगभूमि' का एक अंश 'सूरदास की झोपड़ी' एक कहानी के रूप में प्रस्तुत की गई है। यह कहानी एक अंधे भिखारी सूरदास तथा उसके पालित बेटे मिठुआ को केन्द्र में रख कर लिखी गई है।
- सूरदास ने भिक्षा माँग-माँग कर कुछ पैसे संचित किए हैं जिससे वह अपनी तीन अभिलाषाएँ पूरी करना चाहता है-

  (क) संचित धन से पितरों का पिंडदान करना।

  (ख) अपने पालित पुत्र मिठुआ का ब्याह करना।

  (ग) गाँव के लिए एक कुँआ बनवाना।
- उसी गाँव में जगधर और भैरों भी रहते हैं जो इस कथा के खलनायक और उपखलनायक के पात्रों के रूप में उभरते हैं।
- भैरो की पत्नी सुभागी अपने पति की रोज-रोज की मार से बचने के लिए सूरदास की झोपड़ी में शरण लेती थी। इसी ईर्ष्या भाव के कारण भैंरो सूरदास को अपना दुश्मन समझ उससे किसी भी प्रकार बदला लेने की ठान लेता है। जिससे भैंरों सूरदास से ईर्ष्या करने लगता है।
- बदले की आग बुझाने के लिए एक रात भैरों सूरदास की झोपड़ी में आग लगाने घुसता है वहीं उसे सूरदास की जमा पूँजी एक पोटली में मिलती है। भैरों वह पोटली चुराकर झोपड़ी में आग लगा देता है।
- आग बुझाने पूरा गांव इकट्ठा होता है। सभी आग बुझाने तथा अपराधी का नाम सोचने का कार्य करते हैं किंतु सूरदास की मन:स्थिति उस समय निराशापूर्ण होती है। वह आश्चर्यचकित, दु:खी तथा निराश था। उसके मन में केवल एक ही बात थी कि वह किसी प्रकार झोपड़ी में जाकर अपनी पोटली निकाल लाना

चाहता था। उसे अपनी सभी मनोकामनाएँ पोटली के साथ जलती नज़र आ रही थीं।

- झोपड़ी के जल जाने पर सूरदास झोपड़ी में अपनी पोटली तलाशने जाता है। वहाँ पर चारों ओर फूस की राख थी। उसे महसूस होता है कि आग में केवल फूस ही नहीं उसकी तीनों अभिलाषाएँ भी जल गईं। ढूंढने पर भी उसे पोटली नहीं मिलती।
- जगधर सूरदास की झोपड़ी जलने के पीछे भैरों को जिम्मेदार समझ कर भैरों के पास जाता है। वहाँ उसे पता चलता है कि भैरों ने झोपड़ी जलाने से पहले सूरदास की पोटली भी चुराई थी।
- जगधर के मन में पैसों को देखकर ईर्ष्या का भाव जगता है कि भैरों को रातो रात बिना मेहनत किए पैसे मिल गए तो उसे भी ये प्राप्त होने चाहिए। इसी बात की धमकी वह भैरों को देता है कि यदि उसने आधे पैसे न दिए तो वह सूरदास को इस राज़ के बारे में बता देगा। भैरों पैसे देने से इंकार कर देता है।
- इसी ईर्ष्या की भावना में आकर जगधर सूरदास को भैरों की चोरी के विषय में बताता है किंतु सूरदास अपनी इस आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त रखता है क्योंकि एक गरीब के पास इतने पैसे होना उसके लिए लज्जा की बात है।
- सुभागी जो जगधर और सूरदास की बातें सुन रही है वह सूरदास से सहानुभूति रखती है तथा पोटली वापस लाने का संकल्प लेती है।
- सूरदास अपनी दशा पर दुखी था किंतु अपने पुत्र और उसके मित्रों की यह बात सुनकर कि 'खेल में कोई रोता है?' वह इस जीवन को एक खेल मानता है। उसकी मनोदशा बदल जाती है तथा वह एक खिलाड़ी की भांति उत्साह और आत्मविश्वास से भर जाता है जो अगला खेल खेलने को तैयार होता है। सूरदास की हार न मानने की प्रवृत्ति उसमें विजय गर्व की तरंग भर देती है।

पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : भैरों ने सूरदास की झोपड़ी क्यों जलाई?

उत्तर : भैरों ने सूरदास की झोपड़ी बदला लेने के लिए जलाई। वह कई कारणों से सूरदास से बदला लेना चाहता था।

1. **सुभागी को शरण देने के कारण :** भैरों अपनी पत्नी सुभागी को रोज नशे में पीटता था। एक दिन भैरों की मार से बचकर वह सूरदास की शरण में आई। सूरदास ने उसे शरण देकर भैरों की मार से बचाया जिससे भैरों की जग हँसाई हुई।

2. **भैरों के मन में सूरदास के प्रति ईर्ष्याभाव के कारण :** सुभागी द्वारा बार-बार पति की मार से बचने हेतू सूरदास के घर में जाकर छिप जाना व सूरदास के द्वारा बीच-बचाव करके सुभागी को भैंरों से बचाना-ही भैंरों के मन में ईर्ष्याभाव जगा देता है और वह सूरदास से बदला लेने का निश्चय कर बैठता है।

प्रश्न 2 : 'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।

उत्तर : सूरदास का इस वाक्य से एक सशक्त चरित्र उभर कर आता है जिसमें कई विशेषताएँ हैं-

1. **हार न मानने की प्रवृत्ति :** सूरदास जीवन की विषम तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता। पुनः परिश्रम करने को तैयार रहता है।

2. **कर्मशील / मेहनती :** सूरदास एक मेहनती व्यक्ति है। अंधा होने पर भी उसने इतने पैसे जमा किए तथा आगे भी मेहनत करने से नहीं कतराता।

3. **प्रतिशोध की भावना से मुक्त :** सूरदास किसी से भी प्रतिशोध लेने की भावना नहीं रखता। भैरों के विषय में पता चलने पर भी वह उसे नुकसान पहुँचाने की नहीं सोचता।

4. **निर्णय लेने की क्षमता :** सूरदास, किसी भी परिस्थिति को केवल मौन रहकर उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देता। वह तुरंत सकारात्मक निर्णय लेकर जीवन में आगे बढ़ता है। झोपड़ी जलने पर उसने यही किया।

5. **सहृदय एवं परोपकारी :** सूरदास कोमल हृदय का है जिसने स्वयं पर संकट आने का अंदेशा होने पर भी सुभागी को शरण दी। अंत में भी सुभागी के बेघर होने का जिम्मेदार वह स्वयं को ही मानता है।

6. **आशावादी दृष्टिकोण :** मिठुआ के खेल की बात सुन कर सूरदास के मन में भविष्य के प्रति नवीन आशा जागृत होती है। वह अतीत को भूल कर भविष्य को फिर से सुधारना चाहता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. सूरदास के लिए पोटली की अहमियत थी क्योंकि:-

(क) रुपयों की पोटली उसकी अभिलाषाओं का आधार

(ख) रुपयों की पोटली उसके बुजुर्गों की कमाई

(ग) रुपयों की पोटली उसके लोक-परलोक का आशा दीपक

(घ) क व ग दोनों

प्रश्न 2. सुभागी रात-भर छिपी रही :-

(क) मंदिर के आँगन में लगे अमरूद के बाग में

(ख) मंदिर के पिछवाड़े अमरूद के बाग में

(ग) मंदिर के बाहर अमरूद के पेड़ के पीछे

(घ) कोई नहीं

प्रश्न 3. सुभागी अकेले रहने का, जीवन-यापन का निर्णय लेती है :-

(क) भैरों के सरस स्वभाव के कारण (ख) भैरों के नीरस स्वभाव के कारण

(ग) भैरों के सहज स्वभाव के कारण (घ) क व ग दोनों

प्रश्न 4. घीसू की बात का सूरदास पर प्रभाव पड़ा :-

(क) सूरदास का क्षुब्ध हो जाना

(ख) सूरदास का मर्माहत हो जाना

(ग) सूरदास की निराशा, क्षोभ व उदासी का गायब हो जाना

(घ) कोई नहीं

प्रश्न 5. सुभागी प्रण तोड़ती है :-

(क) भैरों के घर को छोड़ने के इरादे का (ख) सूरदास के घर को छोड़ने का

(ग) जगधर से बात न करने का (घ) जगधर के घर को छोड़ने का

प्रश्न 6. 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मन का कलेजा कैसे ठंडा होता' में शब्द कहे थे :-

(क) सूरदास ने (ख) जगधर ने

(ग) नायकराम ने (घ) बजरंगी ने

प्रश्न 7. 'सूरदास की झोपड़ी' में प्रयुक्त शब्द 'सुभा' का अर्थ है :-

(क) शक करना (ख) शुभ काम करना

(ग) चिंता करना (घ) माफ करना

प्रश्न 8. पोटली की जानकारी मिलने पर जगधर की पहली प्रतिक्रिया थी :-

(क) भैरों को उस पोटली को वापिस लौटाने की सलाह देना

(ख) भैरों को बराबर-बराबर बाँट लेने की सलाह देना

(ग) भैरों को रखने की सलाह देने

(घ) कोई नहीं

प्रश्न 9. सूरदास अपनी आर्थिक हानि को गुप्त रखना चाहता था :-

(क) दरिद्रता के कम होने के कारण (ख) अंधा होते हुए भी धन-संचय के कारण

(ग) लज्जा के कारण (घ) ख व ग दोनो

प्रश्न 10. 'सूरदास की झोपड़ी' लेखक प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है :-

(क) रंगभूमि (ख) कंकाल

(ग) कर्मभूमि (घ) गबन

पाठ-3

बिस्कोहर की माटी

- प्रस्तुत पाठ में लेखक अपने गाँव तथा वहाँ के प्राकृतिक परिवेश, ग्रामीण जीवनशैली, गांवों में प्रचलित घरेलू उपचार तथा अपनी माँ से जुड़ी यादों का वर्णन करता है।
- कोइयाँ एक प्रकार का जलपुष्प है। इसे कुमुद और कोकाबेली भी कहते हैं। शरद ऋतु में जहाँ भी पानी एकत्रित होता है, कोइयाँ फूल उग जाता है। शरद की चाँदनी में कोइयाँ की पत्तियाँ तथा उजली चाँदनी एक सी लगती है। इस पुष्प की गंध अत्यंत मादक होती है।
- लेखक के अनुसार बच्चे का माँ से संबंध भी अद्‌भुत होता है। बच्चा जन्म लेते ही माँ के दूध को भोजन के रूप में ग्रहण करता हैं नवजात शिशु के लिए दूध अमृत के समान हैं। बच्चा माँ से सिर्फ दूध ही ग्रहण नहीं करता, उससे संस्कार भी ग्रहण करता है जो उसके चरित्र तथा व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते हैं।
- बच्चा सुबकता है, रोता है, माँ को मारता है। माँ भी कभी-कभी मारती है फिर भी बच्चा माँ से चिपटा रहता है। बच्चा माँ के पेट से गंध स्पर्श भोगता है। बच्चा दाँत निकलने पर टीसता है अर्थात् हर चीज़ को दाँत से काटता है।
- चाँदनी रात में खटिया पर बैठकर जब माँ बच्चे को दूध पिलाती है, तब बच्चा दूध के साथ-साथ चाँदनी के आनंद को महसूस करता है अर्थात् चाँदनी माँ के समान स्नेह, आनंद तथा ममता देती है, माँ से लिपटकर बच्चे का दूध पीना जड़ से चेतन होना यानि मानव जन्म लेने की सार्थकता है।
- बिसनाथ अभी माँ का दूध पीता था कि उसके छोटे भाई का जन्म हो गया। माँ के दूध पर छोटे भाई का अधिकार हो गया। बिसनाथ का दूध छूट गया। बिसनाथ को उनके तीन साल होने तक पड़ोस की कसेरिन दाई ने पाला। माँ का स्थान दाई ने ले लिया। यह बिसनाथ पर अत्याचार हुआ।
- दिलशाद गार्डन में लेखक बतखों को देखता है। बत्तख अंडे देने के समय पानी छोड़कर जमीन पर आ जाती है। लेखक ने एक बत्तख को कई अंडों को सेते देखा।

- लेखक को बत्तख माँ तथा मानव शिशु माँ में कई समानताएँ दिखीं। जिस प्रकार बत्तख पंख फैलाकर अंडों को दुनिया की नज़रों से बचाकर रखती है। अपनी पैनी चोंच से सतर्कता से कोमलता से अपने पंखों के अंदर छिपा कर रखती है, हमेशा निगाह कौवे की ताक पर रखती है उसी प्रकार मानव शिशु की माँ भी अपने बच्चों को दुनिया की नज़रों से बचाती है, उन पर आने वाली मुसीबत को भाँपकर उनकी रक्षा करती है।

- गर्मियों की दोपहर में लेखक घर से चुपचाप बाहर निकल जाता था। लू से बचने के लिए माँ धोती या कमीज से गाँठ लगाकर प्याज बाँध देती। लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना पिया जाता, आम को भूनकर या उबालकर गुड़ या चीनी में उसका शरबत पिया जाता, उसे देह में लेपा जाता था, नहाया जाता तथा उससे सिर धोया जाता था।

- बिस्कोहर में बरसात आने से पहले बादल ऐसे घिरते थे कि दिन में ही अंधेरा हो जाता था। बरसात कई दिन तक होती थी जिसके कारण कच्चे घरों की दीवारें गिर जाती थीं तथा घर धँस जाता था।

- बरसात आने पर पशु-पक्षी सभी पुलकित हो उठते हैं। बरसात में कई कीड़े भी निकल आते हैं। उमस के कारण मछलियाँ मरने लगती हैं। पहली बारिश में दाद-खाज, फोड़ा फुंसी ठीक हो जाते हैं।

- मैदानों, खेतों तथा तालाबों में कई प्रकार के साँप होते हैं। साँप को देखने में डर तथा रोमांच दोनों है। डोडहा ओर मजगिदवा विषहीन होते हैं। डोडहा को वामन जाति का मानकर मारा नहीं जाता। धामिन भी विषहीन है। घोर कड़ाइच, भटिहा तथा गेंहुअन खतरनाक है जिसमें से सबसे अधिक गेंहुअन खतरनाक है जिसे फेंटारा भी कहते हैं।

- गाँव में लोग प्रकृति के बहुत निकट हैं। लेखक के अनुसार फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं क्योंकि गांव में कई रोगों का इलाज फूलों द्वारा किया जाता है। फूलों की गंध से महामारी, देवी, चुडैल आदि का संबंध जोड़ा जाता है। गुड़हल के फूल को देवी का फूल मानते हैं। बेर के फूल सूंघने से बर्रे, ततैया का डंक झड़ता है। आम के फूल कई रोगों के उपचार में काम आते हैं। नीम के पत्ते और फूल चेचक में रोगी के समीप रखते हैं।

- लेखक के गाँव में कमल भी खिलते हैं। हिंदुओं के यहाँ कमल-पत्र पर भोजन परोसा जाता है। कमल पत्र की पुरइन भी कहते हैं तथा कमल की नाल को

भसीण कहते हैं। कमल ककड़ी केवल बिक्री के लिए प्रयोग की जाती है। गट्टा (कमल-बीज) खाया जाता है।

- अपने एक रिश्तेदार के घर लेखक ने एक, अपनी उम्र से बड़ी औरत, देखी जिसकी सुन्दरता लेखक के हृदय में बस गई। लेखक को प्रकृति के समान ही वह औरत आकर्षक लगी। प्रकृति के समस्त दृश्यों, जूही की लता, चाँदनी की छटा, फूलों की खूशबू में उन्हें वह औरत नज़र आने लगी। लेखक को लगा, सुन्दर प्रकृति नारी के सजीव रूप में आ गई हो।
- लेखक जिस औरत को देखकर समस्त प्रकृति के सौन्दर्य को भूल गया उससे अपनी भावनाओं का इज़हार न कर सका। वह सफेद रंग की साड़ी पहने रहती है, आँखों में एक व्यथा लिए दिखती है। वह इंतजार करती हुई दिखती है। लेखक के लिए वह संगीत, मूति, नृत्य आदि कला के हर अस्वाद में मौजूद है। लेखक के लिए हर सुख-दु:ख से जोड़ने की सेतु है। इस स्मृति के साथ मृत्यु का बोध सजीव तौर पर जुड़ा है।

पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : लेखक ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बतख से की हैं?

उत्तर : लेखक ने बत्तख माँ और मानव शिशु माँ की तुलना करते हुए कई पक्ष सामने रखे हैं। लेखक को दोनों में कई समानताएँ दिखती हैं।

1. **खतरों से बचाना :** जिस प्रकार बत्तख अपने पंखों को फैलाकर अंड़ों को दुनिया की नज़रों से बचाकर रखती है उसी प्रकार मानव माँ भी अपने बच्चों की ढ़ाल बनकर उन्हें दुनिया के खतरों से बचाती है।
2. **सतर्कता और कोमलता से देखरेख :** जैसे बत्तख माँ अपनी पैनी चोंच से सतर्कता बरतते हुए कोमलता से अंड़ों को अपने पंखों के अंदर छुपाती है उसी प्रकार मानव माँ भी बच्चे को डांटते मारते समय ध्यान रखती है कि शिशु को नुकसान न पहुँचे।
3. **आने वाले खतरे को भाँपना :** बत्तख माँ की निगाह सदैव कौवे की ताक पर रहती है, मानव माँ भी बच्चे पर आने वाले संभावित खतरे को भांप लेती है।

प्रश्न 2 : लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:1. **लेखक के लिए प्रकृति :** लेखक का प्रकृति से गहरा लगाव था। उसे प्रकृति के कई दृश्य अनुपम एवं हृदयग्राही लगते थे। प्रकृति उसके लिए सौन्दर्य का पर्याय थी।

2. **लेखक की दृष्टि में नारी :** लेखक ने अपने गाँव में एक रूपवती नारी देखी जिसकी सुन्दरता लेखक के हृदय में बस गई। वह भी लेखक को सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति लगी।

3. **प्रकृति और नारी में समानता :** सौन्दर्य की समानता होने के कारण लेखक को लगा जैसे प्रकृति नारी का सजीव रूप लेकर उसके समक्ष आ गई। प्रकृति के समस्त दृश्यों में जूही की लता, चाँदनी की छटा, फूलों की खुशबू आदि में उसे नारी के सौन्दर्य का आभास होता था। सौन्दर्य के समान धर्म होने के कारण लेखक को प्रकृति और नारी एकाकार होते हुए दिखे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. हरसिंगार का फूल खिलता है :-

(क) शरद ऋतु में (ख) ग्रीष्म ऋतु में
(ग) बसंत ऋतु में (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2. किस साँप को मारा नहीं जाता?

(क) होंडहा साँप (ख) मजगिदवा साँप
(ग) धुमिन साँप (घ) गेहुँअन साँप

प्रश्न 3. गाँव में बर्रे व ततैया का डंक झाड़ा जाता है :-

(क) नीम के फूल से (ख) आम के फूल से
(ग) बेर के फूल से (घ) मटर के फूल से

प्रश्न 4. नीम के पत्तों का उपयोग किया जाता है :-

(क) मलेरिया के रोग में (ख) डेगूँ के रोग में
(ग) चेचक के रोग में (घ) चिकनगुनिया के रोग में

प्रश्न 5. विश्वनाथ त्रिपाठी का जन्म हुआ :-

(क) इलाहबाद, उत्तर प्रदेश (ख) गया, बिहार
(ग) कानपूर, उत्तर प्रदेश (घ) बिस्कोहर, उत्तर प्रदेश

प्रश्न 6. कोइयाँ है :-

(क) जलपुष्प (ख) एक जीव

(ग) ऋतु का नाम (घ) जंगली पुष्प

प्रश्न 7. यह अध्याय किस आत्म-कथा का अंश है?

(क) अर्ध कथानक (ख) नंगातलाई का गाँव

(ग) मेरी जीवनधारा (घ) पेड़ का हाथ

प्रश्न 8. बिस्कोहर की माटी लेखक के मन में बस गई :-

(क) गाँव के फूलों को याद रखने के कारण

(ख) प्रेम व भावुक संवेदना से परिपूर्ण बचपन की मधुर यादों के कारण

(ग) बचपन में गाँव के बच्चों के साथ खेले खेलों के कारण

(घ) क व ग दोनों

प्रश्न 9. बच्चे के प्रति माँ की ममता होती है :-

(क) स्वजन्य (ख) प्रकृतिजन्य

(ग) कर्मजन्य (घ) केवल ख

प्रश्न 10. प्रकृति को कवि ने किसके समान माना है:-

(क) सजीव नारी (ख) सजीव पेड़-पौधे

(ग) सजीव जीव जंतु (घ) कोई नहीं

पाठ-4

अपना मालवा : खाऊ उजाड़ू सभ्यता में

- लेखक ने इस पाठ में मालवा प्रदेश के मौसम, ऋतुओं, नदियों, वहाँ के जनजीवन तथा संस्कृति का अत्यंत सजीव वर्णन किया है।
- मालवा में जब अत्यधिक बारिश होती है तो जनजीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। यातायात के साधन ठप्प हो जाते हैं तथा लोगों को आने-जाने में कठिनाई होती है।
- बारिश होने के कारण गेहूँ और चने की फसल अच्छी होती है किंतु सोयाबीन की फसल गल जाती है।
- अतिवृष्टि से नदियों में बाढ़ आ जाती है और पानी लोगों के घरों, दुकानों आदि में घुस जाता है।
- लेखक के अनुसार मालवा में पहले जैसा पानी अब नहीं गिरता क्योंकि उद्योग धंधों से निकलने वाली गैसों से पर्यावरण गर्म हो रहा है। वायु प्रदूषण फैल रहा है। पर्यावरण असंतुलित हो गया है। वर्षा ऋतु पर भी इसका कुप्रभाव पड़ा है और मालवा में औसतन वर्षा कम हो गई है।
- आज के इंजीनियर पश्चिमी शिक्षा को उच्च मानते हैं। उनका मानना है कि ज्ञान पश्चिम के रिनेंसा के बाद आया। किंतु भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा इतिहास की अज्ञानता के कारण उन्हें ये नहीं पता कि जिस पानी के प्रबंधन में वे स्वयं को माहिर मानते हैं उसे विक्रमादित्य, भोज और मुंज जैसे राजाओं ने रिनेंसा के आने से पहले ही समझ लिया था।
- पठार पर पानी रोकने के लिए इन्होंने तालाब-बावड़ियाँ बनवाई और बरसात का पानी रोक कर धरती के गर्भ के पानी को जीवंत रखा।
- हमारे इंजीनियरों ने तालाबों और बावड़ियों को बेकार समझ कर उन्हें कीचड़ से भर जाने दिया।
- नवरात्रि की पहली सुबह मालवा में घट स्थापना होती है। लोग गोबर से घर आँगन लीपने, मानाजी के ओटले को रंगोली से सजाने तथा सज-धजकर त्यौहार मनाने की तैयारी में है। इन दिनों में वर्षा ऋतु समाप्त हो जाने पर मौसम साफ हो जाता है।

- लेखक हैरान है कि इस समय भी बदल गरज रहे हैं तथा बरसने के पूरे आसार है।
- ओंकारेश्वर में नर्मदा पर बांध बन रहा था जो सीमेंट कंक्रीट के विशाल राक्षस के समान प्रतीत होता है। नदी के वेग में बाँध से रूकावट आ गई जिसके कारण नदी तिनफिन करती बह रही है। मानो बाँध बनने से चिढ़ रही हो। बाँध के निर्माण में लगी मशीनें और ट्रक गुर्राते हुए से प्रतीत होते हैं।
- वर्तमान युग औद्योगिक विकास का युग है। नदियाँ गंदे नालों में बदल रही हैं। लोगों द्वारा कूड़ा करकट नदियों में बहाया जाता है। कल-कारखानों उद्योगों का रासायनिक पदार्थ नदियों में बहाया जाता है। पूजा सामग्रियों को जल में प्रवाहित किया जाता है। इन सभी कारणों से नदियाँ सड़े नालों में बदल रही हैं। शिप्रा, चंबल, नर्मदा, चोरल इन सभी नदियों को विकास की सभ्यता ने गंदे पानी के नालों में बदल दिया है।
- हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें प्रकृति से काट दिया है। हमारे नदी नाले सूख गये हैं। पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। विकास की औद्योगिक सभ्यता, वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है।
- यह खाऊ-उजाड सभ्यता यूरोप और अमेरिका की देन है। वे अपनी इस पद्धति को बदलना नहीं चाहते। वातावरण को गर्म करने वाली गैसें सबसे ज्यादा यूरोप और अमेरिका से निकलती है। फिर भी वे अपनी इस जीवन पद्धति से समझौता नहीं करना चाहते।
- इन गैसों द्वारा तापमान के बढ़ने के कारण ही समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है, मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है। लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिरना, बाडमेर के गांव बाढ़ में डूब गए। यही कारण है कि मालवा में अब डग-डग रोटी पग-पग नीर नहीं मिलता।
- लेखक के अनुसार हम अमेरिका तथा यूरोप की नकल करते हुए ऐसी जीवन पद्धति, संस्कृति, सभ्यता को अपना रहे हैं जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक सिद्ध होगा।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसके गरम होने में यूरोप और अमेरिका की भूमिका लिखें।

उत्तर: 1. **वातावरण के गरम होने का कारण :** आज औद्योगिक विकास के चलते हम जो उद्योग धंधों, कल-कारखाने लगा रहे हैं उनसे वातावरण को गरम करने वाली गैसें निकलती हैं। ये गैसे वातावरण के तापमान को कई डिग्री से बढ़ा रही है।

2. **यूरोप और अमेरिका की भूमिका :** ये हानिकारक गैसें सबसे अधिक यूरोप और अमेरिका जैसे देशों से निकलती है। इन देशों में लगे उद्योगों से निकलने वाली ग्रीन हाउस गैसों से वातावरण सर्वाधिक प्रदूषित हो रहा है।

3. **वातावरण के गर्म होने से हानियाँ :** इन गैसों द्वारा तापमान बढ़ने के कारण समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है, मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है तथा पर्यावरण असंतुलित हो गया है।

4. **इसे रोकने के लिए प्रयास :** इन हानियों से बचने के लिए हमें प्रकृति के विकास के साथ लेकर चलना होगा। उद्योग धंधों में ऐसा विकल्प चुनना होगा जिससे हमारे पर्यावरण को भी हानि न पहुँचे। जैसे बंजर धरती पर औद्योगीकरण करना या जंगलों को बेवजह न काटना आदि।

प्रश्न 2 : आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले कैसे बना रही हैं?

उत्तर : आज की सभ्यता के अनुसार हम नदियों को माता नहीं मानते बल्कि उसे उपयोग की वस्तु समझते हैं तथा कई रूपों में उसे दूषित कर रहे हैं-

1. **कूड़ा-कचरा फेंक कर :** लोगों द्वारा अपने घर का कूड़ा कचरा इन नदियों में बहा दिया जाता है। जिसे पूर्णत: बहा ले जाने में असमर्थ नदियाँ प्रदूषित हो जाती हैं।

2. **पूजा सामग्री बहाकर :** हिन्दु सभ्यता के अनुसार पूजा सामग्री को पवित्र मान नदियों में बहा दिया जाता है जिसके कारण नदियाँ दूषित होती जा रही है।

3. **कल कारखानों का रासायनिक पदार्थ :** उद्योगों कारखानों से निकला सारा रासायनिक पदार्थ नदियों में बहाया जाता है जिनसे नदियों का पानी जहरीला भी हो जाता है।

4. **नदियों का निरंतर रखरखाव न करना :** नदियो के प्रति लापरवाही के कारण इनके नियमित सफाई व रखरखाव पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता जिससे ये गंदे नालों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. मालवा प्रदेश है :-

(क) रेतीला (ख) उपजाऊ

(ग) पठारी (घ) ऊँचे पहाड़ों वाला

प्रश्न 2. पाठ में प्रयुक्त रेनेंसा शब्द का अर्थ है :-

(क) रात (ख) पुनर्जागरण

(ग) दिन (घ) अत्यधिक

प्रश्न 3. राजा मुंज व भोज ने बढ़ावा दिया था :-

(क) भूमिगत जल को निकालने को

(ख) तालाब, कुओं और बावड़ियों के निर्माण को

(ग) पर्यटन स्थल बनाने को

(घ) कोई नहीं

प्रश्न 4. विक्रमादित्य जैसे दूरदर्शी राजाओं ने तालाबों व बावड़ियों के निर्माण को बढ़ावा दिया –

(क) पाताल से पानी निकालने हेतु (ख) भूमिगत जल की निकासी हेतु

(ग) भूमिगत जल के संचयन हेतु (घ) केवल ग

प्रश्न 5. नागदा स्टेशन पर लेखक को चाय पिलाते हैं :-

(क) मीणा जी (ख) शर्मा जी

(ग) मुँशी जी (घ) कोई नहीं

प्रश्न 6. दो जगह से नर्मदा को देखने पर नदी लेखक को दिखाई दी :-

(क) कहीं अथाह गहरी (ख) कहीं मटमैली कहीं छिछली

(ग) केवल ख (घ) क व ख दोनों

प्रश्न 7. ओंकारेश्वर के सामने नर्मदा नदी पर बनाए जा रहे विशाल बाँध को लेखक क्या कहकर अपना असंतोष प्रकट करता है?

(क) सुखदायी (ख) राक्षसी
(ग) दु:खदायी (घ) सदानीरा

प्रश्न 8. पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप का परिणाम हैं :-

(क) मौसम-चक्र बिगड़ना (ख) तापमान में निरंतर वृद्धि व बर्फ पिघलना
(ग) केवल ख (घ) क व ख दोनों

प्रश्न 9. अमेरिका व यूरोप - ये विकसित देश है :-

(क) सर्वाधिक पर्यावरण की रक्षा करने वाले
(ख) सर्वाधिक कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन करने वाले
(ग) केवल क
(घ) केवल ख

प्रश्न 5. शिप्रा नदी की महत्ता बढ़ जाती है :-

(क) चंबल नदी में मिलने से
(ख) उज्जैन में महाकाल के चरण- स्पर्श करने से
(ग) इटावा के पास यमुना नदी में मिलने से
(घ) कोई नहीं

अति महत्वपूर्ण प्रश्न

सूरदास की झोपड़ी

प्रश्न 1 : 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता।' इस कथन के आधार पर सूरदास की मन: स्थिति बताइए?

प्रश्न 2 : जगधर के मन में किस तरह की ईर्ष्या का भाव जगा और क्यों?

प्रश्न 3 : सूरदास अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

प्रश्न 4 : 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी' इस कथन की पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए?

प्रश्न 5 : "सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा।" इस कथन के आधार पर सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए?

प्रश्न 6 : सुभागी व भैरों के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

आरोहण

प्रश्न 1. 'आरोहण' कहानी के आधार पर भूपसिंह के चरित्र का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2. 'आरोहण' कहानी के आधार पर पहाड़ों पर स्त्रियों की दयनीय दशा का वर्णन करें।

प्रश्न 3. चिड़िया व गीध की कहानी से हमें क्या संदेश मिलता है?

प्रश्न 4. 'पहाडों पर जीवन अत्यन्त कठिन होता है'-आरोहण के आधार पर स्पष्ट करें।

प्रश्न 5. रूपसिंह को अपने गाँव लौटने में लज्जा, अपनत्व और ग्लानि का अनुभव क्यों हो रहा था।

प्रश्न 6 : कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

बिस्कोहर की माटी

प्रश्न 1 : कोइयाँ किसे कहते है? उसकी विशेषताएँ बताइए।

प्रश्न 2 : गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए।

प्रश्न 3 : बिसनाथ द्वारा बिस्कोहर में हुई बरसात का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 4 : बिस्कोहर गाँव में साँपों की कौन-कौन सी प्रजातियाँ थीं?

प्रश्न 5 : बिस्कोहर की माटी लेखक के मन में क्यों बस गई?

प्रश्न 6 : "बच्चा दूध ही नहीं,चाँदनी भी पी रहा था। चाँदनी भी माँ जैसी पुलक-स्नेह और ममता दे रही है।" आशय स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न 7 : बच्चे का माँ का दूध पीना, सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबधों का जीवन-चरित्र होता है? कहानी के आधार पर वर्णित कीजिए।

अपना मालवा: खाऊ उजाड़ू सभ्यता में

प्रश्न 1 : मालवा में जब बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

प्रश्न 2 : अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता, जैसा गिरा करता था, इसका क्या कारण है?

प्रश्न 3 : मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज ने पानी के रख-रखाव के लिए क्या प्रबंध किए।

प्रश्न 4 : 'नई दुनिया' की लाइब्रेरी से क्या पता चलता है?

प्रश्न 5 : अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ उजाड़ू जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा। इस कथन पर विचार कीजिए।

प्रश्न 6 : हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी के प्रबंधन को जानते है और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे?

प्रश्न 7 : लेखक के विचार में हम जिसे 'विकास की औद्योगिक सभ्यता' कहते हैं, वह उजाड़ की अपसभ्यता कैसे है?

प्रश्न 8 : इस पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

परियोजना कार्य

हिंदी साहित्य के विभिन्न युग अथवा किसी एक काल का चयन

- आदिकाल
- भक्तिकाल
- रीतिकाल
- आधुनिक काल

आदिकाल

- समयसीमा
- नामकरण
- सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियाँ
- मुख्य प्रवृतियाँ
- मुख्य कवि एवं उनकी रचनाएँ

भक्तिकाल

- समय सीमा
- विभिन्न काव्य धाराएँ
  - –निर्गुण काव्य धारा
  - –सगुण काव्य धारा
  - – ज्ञान मार्गी काव्य धारा
  - –प्रेम मार्गी काव्य धारा

रीतिकाल

- समय सीमा
- नामकरण
- मुख्य प्रवृतियाँ
  - –रीतिसिद्ध कवि
  - –रीति बद्ध कवि
  - – रीति मुक्त कवि

आधुनिक काल

- भारतेंदु युग
- द्विवेदी युग

- छायावाद
- प्रगति वाद
- प्रयोगवाद
- नई कविता
- साठोत्तरी कविता

जनसंचार माध्यम

- मुद्रित माध्यम
- रेडिया
- टेलीविजन
- इंटरनेट

सोशल मीडिया के व्यापक आयाम

- परिभाषा
- प्रकार
- भूमिका
- लाभ
- हानि

जनसंचार का मुद्रित माध्यम

- परिभाषा
- इतिहास
- खूबियां
- हिंदी के महत्वपूर्ण समाचार पत्र
- किन्हीं दो समाचार पत्रों की तुलना

जनसंचार माध्यम के रूप में सिनेमा

- परिचय
- इतिहास
- भूमिका
- किन्हीं चार फिल्मों की समीक्षा

पत्रकारीय लेखन के विविध आयाम

- समाचार
- फीचर
- आलेख

- स्तंभ
- साक्षात्कार
- कार्टून
- रिपोर्ट
- संपादकीय लेख (परिभाषा, उदाहरण लेखन शैली)

विशेष लेखन

- परिभाषा
- विशेष भाषा एवं शब्दावली
- शैली
- विशेष लेखन के क्षेत्र

–राजनीति

–अर्थ व्यवस्था

–अपराध

–स्वास्थ्य

–फिल्म

–पर्यावरण

–शिक्षा

कहानी और लघुकथा

- परिभाषा
- अंतर
- ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाली कहानियां (किन्हीं दो कहानियों की समीक्षा)
- किन्हीं दो कहानियों अथवा दो लघु कथाओं की समीक्षा

अन्य विषय

- हिंदी की कविताओं में बादल का वर्णन
- हिंदी कविता में प्रकृति सौंदर्य
- मेरा शहर
- नदियाँ–हमारी जीवन रेखा
- मेरा प्रिय साहित्यकार
- ग्रामीण और शहरी जीवन में अंतर

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन
2. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया
3. विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार
4. सृजनात्मक लेखन : कैसे बनत है कविता
5. नाटक लिखने का व्याकरण
6. कैसे लिखें कहानी
7. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

पाठ–1

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

मुख्य बिन्दु

- जनसमाज द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जन संचार के अनेक माध्यम हैं जैसे – मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट। मुद्रित अर्थात् समाचार पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए, रेड़ियो सुनने के लिए, टी.वी. देखने व सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने व देखने के लिए प्रयुक्त होते हैं। अखबार पढ़ने के लिए है, रेडियो सुनने के लिए है और टी० वी० देखने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। किन्तु इंटरनेट पर पढ़ने देखने और सुनने, तीनों की आवश्यकता पूरी हो जाती है।
- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित (प्रिंट) माध्यम सबसे पुराना, माध्यम है जिसके अंतर्गत समाचार, पत्र, पत्रिकाएँ आती हैं। मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ। तत्पश्चात् जर्मनी के गुटेनबर्ग ने छापाखाना की खोज की। भारत में सन् 1556 में, गोवा में पहला छापाखाना खुला जिसका प्रयोग मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए किया था। आज मुद्रण कप्यूटर की सहायता से होता है।
- मुद्रित माध्यम की खूबियाँ (विशेषताएँ) देखें तो हम पाएंगे कि सभी की अपनी कमियाँ हैं और खूबियाँ हैं। लिखे हुए शब्द स्थायी होते हैं। इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार समझ न आने पर कई बार पढ़ सकते हैं और उन पर चिंतन-मनन करके संतुष्ट भी हो सकते हैं। जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले अथवा बाद में पढ़ सकते हैं। चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं।
- मुद्रित माध्यम की खामियाँ (कमियाँ) – निरक्षरों (अशिक्षित लोगों) के लिए अनुपयोगी, टी.वी. तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं दे पाता। समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात् 24 घंटे में एक बार, साप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक मास में एक बार प्रकाशित

होता है। किसी भी खबर अथवा रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेडलाइन (निश्चित समय सीमा) होती है। स्पेस (स्थान) सीमा भी होती है। महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार ही किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है। मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर, सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

- मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए भाषा, व्याकरण, शैली, वर्तनी, समय-सीमा, आबंटित स्थान, अशुद्धि शोधन एवं तारतम्यता पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।
- **रेडियो :** रेडियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है जिसमें ध्वनि, शब्द और स्वर ही प्रमुख है। रेडियो मूलत: एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। रेडियो समाचार की संरचना समाचार पत्रों तथा टी.वी. की तरह उल्टा पिरामिट शैली पर आधारित होती है, जिसमें अखबार की तरह पीछे लौट कर सुनने की सुविधा नहीं होती। लगभग 90 फीसदी समाचार या कहानियाँ इसी शैली में लिखी जाती हैं।
- **उल्टा पिरामिड शैली :** उल्टा पिरामिट शैली में समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है अर्थात् कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन् खबर के आरंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-इंट्रो, बॉडी, समापन।

  1. **इंट्रो :** समाचार का मुख्य भाग
  2. **बॉडी :** घटते क्रम में खबर का विस्तृत ब्यौरा।
  3. **समापन :** अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काटकर छोटा भी किया जा सकता है।

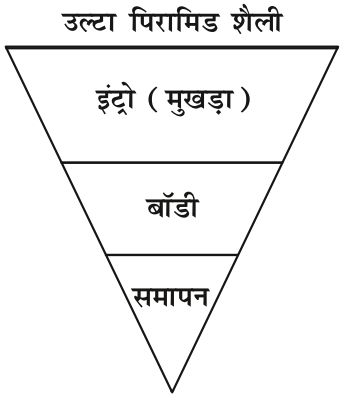

I समाचार लेखन (उल्टा पिरामिड शैली)

कॉफी हाउस में गोली चलने से हड़कंप

1. **इन्ट्रो** कनॉट प्लेस इलाके में स्थित एक कॉफी हाउस में गुरुवार दोपहर अचानक गोली चलने से हड़कंप मच गया। हालांकि, घटना में कोई हताहत नही हुआ। पुलिस मौके पर पहुंच गई और जांच आरंभ की तो यह पता चला कि गलती से पिस्टल गिर जाने से दुर्घटनावश गोली चली थी।

2. **बॉडी** जानकारी के अनुसार, क्नॉट प्लेस के एन ब्लॉक में स्टार बक्स के नाम से एक कॉफी हाउस है। यहां गुरुवार दोपहर टैगोर पार्क मॉडल टाउन निवासी 61 वर्षीय अनिल कुमार बैठे थे। उन्होंने अपने साथ एक लाइसेंसी रिवाल्वर 32 एमके फील्ड गन रखी थी। गुरुवार को वह अपने दो दोस्तों के साथ इस कॉफी होम में मीटिंग कि लिए आए था। करीब दो घंटे से सभी वहां बैठे हुए थे। इस दौरान वह जैसे ही खडे हुए कि उनकी पैंट की जेब से पिस्टल गिर गई और गोली चल गई। गनीमत यह रही कि इस घटना में कोई जख्मी नहीं हुआ। मामले की जांच नहीं हुई । मामले की जांच से जुड़े एक पुलिस अधिकारी ने कहा घटनास्थल पर सीसीटीवी कैमरे तो लगे हुए हैं, लेकिन आरोपी के खड़े होने की वजह से घटना की तस्वीरें कैमरे में कैद नही हो सकी।

3. **समापन** पुलिस ने मौके से पिस्टल, पांच राउंड गोली और एक चली हुई गोली का खाली कारतूस बरामद किया है। जांच आगे बढ़ी तो यह खुलासा हुआ कि यह लाइसेंसी पिस्टल है, जो अनिल कुमार के नाम पर जारी की गई है। लेकिन, इस लाइसेंस की वैद्यता बीते साल 26 अक्तूबर को ही खत्म हो गई थी। पुलिस ने इस मामले में आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जांच में जुटी पुलिस अब उससे पूछताछ कर पूरे घटनाक्रम को समझने का प्रयास कर रही है।

2. यौन उत्पीड़न से निपटने को शिक्षा विभाग तैयार

1. **इन्ट्रो** दिल्ली के शिक्षा विभाग ने कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न की घटनाओं पर हाईटेक तकनीक अपनाया है। विभाग ने सरकारी स्कूलों और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में काम करने वाली महिला कर्मचारियों द्वारा यौन उत्पीड़न की शिकायत के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल तैयार किया है। इसके जरिये महिलाएं शिकायत दर्ज कर सकेंगी।

2. **बॉडी** शिक्षा निदेशालय ने सर्कुलर में कहा है कि कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न कानून 2013 के तहत स्कूलों में हर स्तर पर आंतरिक शिकायत समिति गठित की जा चुकी है। निदेशालय ने कहा कि अब विभाग की ओर से शिकायतों के लिए आईसीसी का ऑनलाइन मॉड्यूल तैयार किया गया है। निदेशालय ने इसकी शुरूआत कर दी है।

3. **समापन** अब www.edudel.nic.in पर जाकर शिकायतकर्ता कंपलेंट अंगेस्ट सेक्सुअल हैरेसमेंट एट वर्कप्लेस के पोर्टल पर जाकर शिकायत कर सकेंगे।

समाचार लेखन की बुनियादी बातें : साफ सुथरी टाइप्ड कॉपी, ट्रिपल स्पेस में टाइप करते हुए दोनों ओर हाशिया छोड़ें, एक पंक्ति में 12-13 शब्दों से अधिक न हों, पंक्ति के अंत में विभाजित शब्द का प्रयोग न करें। समाचार कॉपी में जटिल शब्द एवं संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग न करें। लंबे अंकों को तथा दिनांक को शब्दों में लिखें। निम्नलिखित, क्रमांक, अधोहस्ताक्षरित, किंतु, लेकिन, उपर्युक्त, पूर्वोक्त जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। वर्तनी पर विशेष ध्यान दें। समाचार लेखन की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करें।

टेलीविजन : टेलीविजन जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है। टेलीविजन भी रेडियो की भांति एक रेखीय माध्यम है। टी.वी. में शब्दों व ध्वनियों की अपेक्षा दृश्यों (तस्वीरों) का महत्व अधिक है। टी.वी. में शब्द दृश्यों के अनुरूप तथा उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं। टेलीविजन में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक खबर बताने की शैली का प्रयोग किया जाता है। अतः टी.वी. में समाचार लेखन की प्रमुख शर्त दृश्य के साथ लेखन है।

- **टी.वी. खबरों के प्रमुख चरण :** प्रिंट अथवा रेडियो की भांति टी.वी. चैनल समाचार देने का मूल आधार सूचना देना है। टी.वी. में ये सूचनाएँ इन चरणों से होकर गुजरती हैं-

  1. फ्लैश (ब्रेकिंग न्यूज) 2. ड्राई एंकर, 3. फोन इन, 4. एंकर विजुअल, 5. एंकर-बाइट, 6. लाइव, 7. एंकर पैकेज।

- **विशेषताएँ :** देखने व सुनने की सुविधा, जीवंतता तुरन्त घटी घटनाओं की जानकारी, प्रभावशाली, समाचारों का लगातार प्रसारण।

- **कमियाँ :** भाषा शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी, बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी-कभी सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है, अपरिपक्व बुद्धि पर सीधा प्रभाव।

- **रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा :** भाषा के स्तर व गरिमा को बनाए रखते हुए सरल भाषा का प्रयोग करें ताकि सभी वर्ग तथा स्तर के लोग समझ सकें। वाक्य छोटे-छोटे तथा सरल हों, वाक्यों में तारतम्यता हो। जटिल शब्दों, सामासिक शब्दों एवं मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से बचें। जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्तताएँ, अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ा जाए।

इंटरनेट : इंटरनेट की दीवानी नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर छपे समाचार पढ़ने में आनंद नहीं आता उन्हें स्वयं को घंटे दो घंटे में अपडेट रखने की आदत सी बन गई है। इंटरनेट पत्रकारिता, ऑन लाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता इसे कुछ भी कह सकते हैं। इंटरनेट द्वारा जहाँ हम सूचना, मनोरंजन, ज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवादों का आदान-प्रदान कर सकते हैं वहीं इसे अश्लीलता, दुष्प्रचार एवं गंदगी फैलाने का माध्यम भी बनाया जा रहा है। इंटरनेट का प्रयोग समाचारों के संप्रेषण, संकलन तथा सत्यापन एवं पुष्टिकरण में भी किया जा रहा है। टेलीप्रिंटर के जमाने में जहाँ एक मिनट में केवल 80 शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जा सकते थे वहीं आज एक सेकेण्ड में लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

- इंटरनेट पर समाचार पत्र का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम किसी भी रूप में समाचारों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों के माध्यम से अपने समय की धड़कनों को अनुभव कर दर्ज करने का कार्य करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है। इसी पत्रकारिता को वैब पत्रकारिता भी कहा जाता है।
- इस समय विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है जबकि भारत में दूसरा दौर। भारत के लिए प्रथम दौर 1993 से प्रारंभ माना जाता है और दूसरा दौर 2003 से प्रारंभ हुआ है।
- भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ डॉटकॉम','इंडिया इंफोलाइन'तथा'सीफी'जैसी कुछ साइटें हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है। वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय'तहलका डॉटकॉम'को जाता है।
- हिंदी में नेट पत्रकारिता, 'वेब दुनिया' के साथ प्रारम्भ हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ, ये पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नयी दुनिया', 'हिन्दुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान-पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण प्रारंभ हुए। 'प्रभासाक्षी' नाम से प्रारंभ हुआ अखबार प्रिंट रूप में न होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. है।
- हिन्दी वेब जगत में आज अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं। कुल मिलाकर हिन्दी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशवकाल में ही हैं। सबसे बड़ी समस्या हिन्दी के फौंट की है। अभी भी हमारे पास हिन्दी का कोई की-बोर्ड

नहीं है। जब तक हिन्दी के की-बोर्ड का मानकीकरण नहीं हो जाता तब तक इस समस्या को दूर नहीं किया जा सकता।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम है :-

(क) रेडियो (ख) टेलिविज़न

(ग) प्रिंट माध्यम (घ) इंटरनेट

प्रश्न 2. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता है:-

(क) शब्दों में स्थायित्व होता है

(ख) अनपढ़ों के लिए सहायक

(ग) लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं

(घ) क और ग

प्रश्न 3. भारत में पहला छापाखाना शुरू हुआ था :-

(क) 1556 गोवा में (ख) 1585 कलकत्ता में

(ग) 1565 बंगाल में (घ) 1558 गोरखपुर में

प्रश्न 4. मुद्रण की शुरूआत किस देश से हुई : -

(क) जर्मनी (ख) चीन

(ग) पुर्तगाल (घ) भारत

प्रश्न 5. रेडियो जनसंचार का कौन सा माध्यम है :-

(क) श्रव्य (ख) दृश्य

(ग) प्रिंट (घ) क और ख

प्रश्न 6. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर आधारित है :-

(क) कथात्मक शैली (ख) पिरामिड शैली

(ग) उल्टा पिरामिड शैली (घ) चित्रात्मक शैली

प्रश्न 7. ब्रेकिंग न्यूज़ का अर्थ है :-

(क) खबरों को तोड़ना

(ख) खबरों को बार-बार दिखाना

(ग) किसी खबर को तत्काल दर्शकों तक पहुँचाना

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8. 'एंकर बाइट' का अर्थ है :-

(क) प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा खबर की पुष्टि करना।

(ख) खबर को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना

(ग) एंकर द्वारा किसी खबर को बताना

(घ) एंकर द्वारा खबर को छोटा करके दिखाना।

प्रश्न 9. वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय किसे कहा जाता है :-

(क) इंडियन एक्सप्रेस को (ख) द हिंदू को

(ग) तहलका डॉटकॉम को (घ) हिंदुस्तान टाइम्स को

प्रश्न 6. वेब पत्रकारिता क्या है :-

(क) इंटरनेट पर पत्र लिखना (ख) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन

(ग) इंटरनेट पर खबरें ढूँढना (घ) उपरोक्त सभी

ई सामग्री- (लिंक)

अभिव्यक्ति और माध्यम - 3 नवंबर 2020 - https://youtu.be/afjWsLKsFnE

10 नवंबर 2020 - https://youtu.be/YxCEXUsjzKQ

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : विभिन्न जनसंचार माध्यमों, प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट की पाँच-पाँच विशेषताएँ एवं कमियाँ बताते हुए तालिका बनाएं।

उत्तर :

विशेषताएँ (खूबियाँ)

प्रिंट	रेडियो	टी.वी.	इंटरनेट
1. पढ़ने व सोचने का पूरा अवसर प्राप्त होता है।	1. इस माध्यम से ध्वनि स्वर, शब्दों तथा संगीत से मनोरंजन व ज्ञान वर्धन होता है।	1. विश्व की घटनाओं को घर बैठे सीधे (लाइव) देख सकते हैं।	1. दृश्य व प्रिंट दोनों माध्यमों का लाभ मिलता है।
2. यह लिखित भाषा का विस्तार है।	2. रेडियो में सुनने की उन्मुक्तता (स्वतंत्रता) होती है।	2. यह मनोरंजन व ज्ञानवर्धन का उत्तम साधन है।	2. इंटरनेट के द्वारा बटन दबाते ही सूचनाओं का विशाल भंडार प्राप्त होता है।
3. प्रिंट माध्यम के द्वारा किसी भी सामग्री को सन्दर्भ के लिए काटकर लंबे समय तक रख सकते हैं।	3. यह सस्ता माध्यम है।	3. टी.वी. की खबरों से जीवंतता का एहसास होता है।	3. यह संवादों के आदान-प्रदान व चैटिंग का सस्ता स्त्रोत है।
4. कहीं से भी (बीच में से भी) और कभी भी पढ़ सकते हैं।	4. निरक्षर व पढ़े लिखे सभी इसका आनंद ले सकते हैं।	4. इसमें देखने व सुनने का आनंद एक साथ लिया जा सकता है।	4. खबरें बड़ी तीव्र गति से पहुँचाई जाती है।
5. प्रिंट माध्यम चिंतन, विचार व संप्रेषण का माध्यम है।	5. इसके माध्यम से दूरदराज के कार्यक्रम भी आसानी से सुने जा सकते हैं।	5. इसके माध्यम से साक्षर व निरक्षर दोनों तरह के लोग कार्यक्रम देख व सुन सकते हैं।	5. इंटरनेट के द्वारा खबरों का संप्रेषण पुष्टि, सत्यापन व बैकग्राउंड तुरंत होता है।

खामियाँ (कमियाँ)

प्रिंट	रेडियो	टी.वी.	इंटरनेट
1. इसमें सीमित स्थान होता है।	1. एक रेखीय माध्यम की तरह पीछे नहीं लौट सकते।	1. इसमें समय की सीमा होती है। यह भी एक रेखीय माध्यम है।	1. इसमें समय सीमा न होने के कारण लोग दूसरे कार्यों से कटते जा रहे हैं।
2. निरक्षर अर्थात् अनपढ़ लोगों के लिए प्रिंट माध्यम किसी काम का नहीं है।	2. कई बार रेडियो कार्यक्रमों एवं समाचार बुलेटिनों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।	2. टी.वी. कार्यक्रमों में दर्शकों को बाँधे रखना कठिन कार्य है।	2. गरीबों तथा अनपढ़ों के लिए इंटरनेट किसी काम का नहीं। इसे चलाने के लिए धन व कौशल की आवश्यकता होती है।
3. इस माध्यम द्वारा हम तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते।	3. रेडियो में अधिक लंबे कार्यक्रम नहीं सुना सकते क्योंकि वे उबाऊ हो जाते हैं।	3. इसमें दृश्य श्रव्य(विजुअल व शब्द वाइट्स) में संतुलन बनाना बहुत कठिन है।	3. नयी पीढ़ी में स्वयं को हर समय अपडेट रखने की लत लगने के बुरे परिणाम सामने आ रहे हैं।
4. आय के विशेष स्त्रोत न होने के कारण प्रिंट माध्यम को विज्ञापन कर्त्ताओं को वरीयता देनी पड़ती है।	4. इसमें बोलचाल की भाषा के प्रयोग से भाषा के विस्तार व विकास की संभावना नहीं रहती।	4. इसमें सैक्स, हिंसा व रोमांस को प्रोत्साहन मिलता है और भाषा के विस्तार की भी संभावना कम रहती है।	4. यह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का माध्यम है।
5. अशुद्धियाँ हों तो छपने के बाद उन्हें दूर नहीं किया जा सकता।	5. इस माध्यम में श्रोताओं को बाँधकर रखना काफी कठिन है।	5. टी.वी. माधयम में लाभ को ध्यान में रखकर तैयार किए गए कार्यक्रम विशेष दर्शक वर्ग के लिए होते हैं। अत: ये टाइप्ड हो जाते हैं।	5. इंटरनेट को केवल एक औजार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

पाठ-2

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

- लोकतंत्र में अखबार एक पहरेदार शिक्षक और जनमत निर्माण का कार्य करते हैं।
- अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने, उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। पत्रकार इस दायित्व की पूर्ति के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।
- पत्रकारीय लेखन एवं सृजनात्मक लेखन एक दूसरे से भिन्न हैं

	पत्रकारीय लेखन	*सृजनात्मक लेखन*
1.	इसका संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं और मुद्दों से है।	1. इस लेखन में कल्पना को भी स्थान दिया जाता है।
2.	यह अनिवार्य रूप से तात्कालिक और पाठकों की रूचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है।	2. इस लेखन में लेखक पर बंधन नहीं होता उसे काफी छूट होती है।

- पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का मूलभाव सक्रिय होता है।
- **अच्छे लेखन की भाषा :** सीधी, सरल एवं प्रभावी भाषा।
- **अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य बातें :** (1) गूढ़ से गूढ़ विषय की प्रस्तुति सरल सहज और रोचक हो। (2) विषय तथ्यों द्वारा पुष्ट हो। (3) लेख उद्देश्यपूर्ण हो।
- **पत्रकार के प्रकार : 1. पूर्णकालिक :** किसी समाचार संगठन के नियमित वेतनभोगी।

  2. अंशकालिक : एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाले।

  3. फ्रीलांसर : स्वतंत्र पत्रकार जो भुगतान के आधार पर अलग अलग अखबारों के लिए लिखें।

- **छह ककार :** किसी भी समाचार में छह प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है। क्या हुआ? कैसे हुआ? किसके साथ हुआ? क्यों हुआ? कहाँ हुआ? कब हुआ?

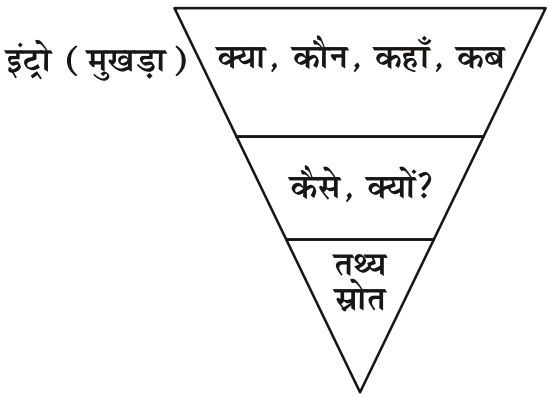

उलटा पिरामिट शैली

मुखड़ा - सबसे महत्वपूर्ण बात

बॉडी - कुछ कम महत्वपूर्ण बात

समापन - सबसे कम महत्वपूर्ण बात

- फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना होता है।
- फीचर तथा समाचार में अंतर।

	समाचार	*फीचर*
1.	समाचार का कार्य पाठको को सूचना देना होता है	1. फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।
2.	इसका उद्देश्य पाठकों को ताज़ी घटना से अवगत कराना होता है।	2. इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना, और मनोरंजन करना होता है।
3.	इसमें शब्द सीमा होती है।	3.इसमें शब्द सीमा नहीं होती। अच्छे फीचर 200 से 2000 तक शब्दों के होते हैं।
4.	इसमें लेखक के विचारों या कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता।	4. इसमें लेखक की कल्पना और विचारों को भी स्थान मिलता है।
5.	इसमें फोटो का होना अनिवार्य नहीं है।	5. अच्छे फीचर के साथ फोटो या ग्राफिक्स होना अनिवार्य है।

- **फीचर के प्रकार :** समाचार बैकग्राउंड फीचर, खोजपरक फीचर साक्षात्कार

फीचर, जीवन शैली फीचर, रूपात्मक फीचर, व्यक्तित्व चरित्र फीचर, यात्रा फीचर आदि।

- **विशेष रिपोर्ट :** समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

- **विशेष रिपोर्ट के प्रकार**

  1. खोजी रिपोर्ट – पत्रकार ऐसी सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन कर जनता के समक्ष लाता है जो पहले सार्वजनिक न हो।
  2. इन डेप्थ रिपोर्ट – सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता हैं
  3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट – घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या की जाती है
  4. विवरणात्मक रिपोर्ट – समस्या का विस्तृत विवरण दिया जाता है।

- आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है लेकिन विषयानुसार रिपोर्ट में फीचर शैली का भी प्रयोग होता है इसे फीचर रिपोर्ट कहते हैं।

- विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

- **विचारपरक लेखन :** अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय, टिप्पणियां विचारपरक लेखन में आते हैं।

- **संपादकीय** – संपादकीय को अखबार की आवाज़ माना जाता है क्योंकि संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते।

  संपादकीय का दायित्व संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है इसलिए इसके नीचे किसी का नाम नहीं होता। संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना या मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करता है।

- **स्तंभ लेखन :** कुछ लेखक अपने वैचारिक रूझान और लेखन शैली के लिए पहचाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता देखकर समाचार पत्र उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने एवं उसमें अपने

विचार व्यक्त करने की लेखक को पूर्ण छूट होती है। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वे अपने लेखक के नाम से पहचाने जाते हैं।

- **संपादक के नाम पत्र :** यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। यह अखबार का एक स्थायी स्तंभ है जिसके जरिए पाठक विभिन्न मुद्दों पर न सिर्फ अपनी राय प्रकट करता है अपितु जन समस्याओं को भी उठाता है।
- **लेख :** संपादकीय पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार और विषय विशेषज्ञ किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। इसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। किंतु इसमें लेखक तर्कों एवं तथ्यों के जरिए अपनी राय प्रस्तुत करता है।
- **साक्षात्कार :** साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढ़ाँचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए न केवल ज्ञान अपितु संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : फीचर से क्या अभिप्राय है? फीचर कितने प्रकार के होते हैं? इनकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना शिक्षित करना और मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है।

फीचर कई प्रकार के होते हैं जिनमें मुख्य हैं-

1. समाचार बैकग्राउंड फीचर
2. खोजपरक फीचर
3. साक्षात्कार फीचर
4. जीवनशैली फीचर
5. रूपात्मक फीचर
6. व्यक्तिचित्र फीचर
7. यात्रा फीचर
8. विशेषकार्य फीचर

फीचर की विशेषताएँ : फीचर की शैली कथात्मक शैली की तरह होती है। इसका आकार रिपोर्ट से बड़ा होता है। एक अच्छे एवं रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन या ग्राफिक्स का होना अनिवार्य है। फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। फीचर बोझिल नहीं होते।

प्रश्न 2 : विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं? विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : विशेष रिपोर्ट : समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार : विशेष रिपोर्ट के मुख्य चार प्रकार हैं।

1. **खोजी रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में पत्रकार उन सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन करके जनता के सामने लाता है जो पहले सबके समक्ष न आए हों।
2. **इन डेप्थ रिपोर्ट :** सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को जनता के सामने लाने वाली रिपोर्ट।
3. **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विस्तार से विश्लेषण और व्याख्या की जाए।
4. **विवरणात्मक रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में समस्या का विस्तृत वर्णन और बारीक से बारीक तथ्य को उद्घाटित किया जाए।

इनके अलावा एक अन्य रिपोर्ट भी है।

फीचर रिपोर्ट : सामान्यत: रिपोर्ट उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं। किंतु कुछ एक कथात्मक शैली में लिखी जाने वाली रिपोर्ट फीचर रिपोर्ट कहलाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. किसी घटना या समस्या जिससे अधिक से अधिक लोग प्रभावित हों, या रुचि रखें को कहते हैं :-

(क) समाचार (ख) फीचर
(ग) कहानी (घ) आलेख

प्रश्न 2. समाचार पत्रों का मुख्य कार्य है :-

(क) सूचना देना (ख) जागरुक करना
(ग) शिक्षित करना (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3. समाचार लेखन में कितने ककारों का प्रयोग किया जाता है :-

(क) चार (ख) पाँच
(ग) छह (घ) आठ

प्रश्न 4. फीचर क्या नहीं है : –

(क) सुव्यवस्थित लेख (ख) सृजनात्मक लेख

(ग) आत्मनिष्ठ लेख (घ) तात्कालिक घटना से अवगत कराने वाले लेख

प्रश्न 5. गहरी छानबीन विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर तैयार रिपोर्ट या खबर को कहते हैं :–

(क) ब्रेकिंग न्यूज़ (ख) वर्णनात्मक रिपोर्ट

(ग) विशेष रिपोर्ट (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6. किस लेख को अख़बार की आवाज़ माना जाता है :–

(क) विशेष लेख (ख) विचारपरक लेख

(ग) इनडेप्थ लेख (घ) संपादकीय लेख

प्रश्न 7. पाठक समाचार पत्रों में किस रूप में भागीदार बनते हैं :–

(क) फीचर लेख द्वारा (ख) संपादक के नाम पत्र लेखन द्वारा

(ग) आलेख लेखन द्वारा (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8. फ्रीलांसर पत्रकार कहते हैं :–

(क) फ्री में काम करने वाला पत्रकार

(ख) कुछ भी लिखने के लिए स्वतंत्र पत्रकार

(ग) भुगतान के आधार पर अलग–अलग अखबारों के लिए लिखने वाला पत्रकार

(घ) एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार

प्रश्न 6. एक सफल साक्षात्कारकर्ता के लिए आवश्यक है :–

(क) संवेदनशील कूटनीति (ख) आकर्षक व्यक्तित्व

(ग) धैर्य और साहस (घ) क और ग

प्रश्न 6. खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर किया जाता है :–

(क) भ्रष्टाचार के विरुद्ध (ख) अनियिमितताओं के विरुद्ध

(ग) गड़बड़ियों और घोटालों के विरुद्ध (घ) उपरोक्त सभी

पाठ-3

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

- **विशेष लेखन :** समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य विज्ञान खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी देते हैं इसी कार्य के अन्तर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लेखन किया जाए तो उसे विशेष लेखन कहते हैं।
- **डेस्क :** समाचार पत्र-पत्रिकाओं रेडियो और टी.वी. में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।
- **विशेष लेखन के क्षेत्र :** विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे अर्थ व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य इत्यादि।
- **बीट :** संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ है कि वह आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार है।
- विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नहीं है। अब बीट रिपोर्टिंग के आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।
- बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

	बीट रिपोर्टिंग	विशेषीकृत रिपोर्टिंग
1.	बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी होना पर्याप्त है उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती हैं।	1. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है।
2.	बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं।	2. विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

- विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विषय विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं।
- पत्र पत्रिकाओं को विशेष लेख लिखने वाले सामान्यत: पेशेवर पत्रकार न होकर विषय विशेषज्ञ होते हैं। जैसे खेल के क्षेत्र में हर्षा भोगले, जसदेव सिंह और नरोत्तम पुरी आदि प्रसिद्ध हैं।
- **विशेष लेखन की भाषा शैली :** विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

  1. कारोबार और व्यापार में सोना उछला, चाँदी लुढ़की आदि।
  2. पर्यावरण संबंधित लेख में आद्रता, टाक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग आदि।

- विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विषयानुसार उल्टा पिरामिड या फीचर शैली का प्रयोग हो सकता है। पत्रकार चाहे कोई भी शैली अपनाएँ लेकिन उसे यह ध्यान में रखना होता है कि खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना चाहिए।
- **विशेषज्ञता का अभिप्राय :** विशेषज्ञता का अर्थ है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सकें।
- विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं का अपडेट रहना, पुस्तकें पढ़ना, शब्दकोश आदि का सहारा लेना, सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क रखना, निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।
- कुछ वर्षों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण रूप से उभरने वाली पत्रकारिता-आर्थिक पत्रकारिता है क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है।
- आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावली का मतलब नहीं पता होता।
- आर्थिक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह किस प्रकार, सामान्य पाठक और जानकार पाठक दोनों को भली-भांति संतुष्ट कर पाता है।
- किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करने के लिए महत्व रखने वाली बातें हैं

कि हमारी बात पाठक / श्रोता तक पहुँच रही है या नहीं तथा तथ्यों और तर्कों में तालमेल है या नहीं।

पाठ से संबंधित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : विशेष लेखन किसे कहते हैं? इसके प्रमुख क्षेत्र तथा उनमें प्रयोग होने वाली भाषा शैली के बारे में लिखें।

उत्तर : समाचार पत्रों में सामान्य समाचारों के अलावा, साहित्य विज्ञान, खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसी कार्य के अंतर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर विशेष लेखन किया जाता है उसे विशेष लेखन कहते हैं।

- **विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र :** अर्थ व्यापार, खेल मनोरंजन, विज्ञान प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य आदि।
- **विशेष लेखन की भाषा शैली :** विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। यह उल्टा पिरामिड या फीचर शैली दोनों में लिखा जाता है। यह विषयानुसार निर्धारित होती है।

विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है जैसे–

1. **कारोबार और व्यापार :** तेज़ड़िए, मंदड़िए, सोना उछला।
2. **पर्यावरण और मौसम :** आर्द्रता, टॉक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग।
3. **खेल :** जर्मनी ने घुटने टेके, आस्ट्रेलिया के पाँव उखड़े।

प्रश्न 2 : विशेष लेखन में बीट तथा डेस्क का अर्थ तथा महत्व बताइए।

उत्तर : बीट : समाचार पत्रों तथा रेडियो टेलीविजन में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें अपने विषय की पूरी जानकारी हो। इन्हीं डेस्कों पर काम करने वाले संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। यदि एक संवाददाता का बीट खेल है तो उसे उस क्षेत्र की सभी खेल संबंधी रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. विशेष लेखन है :-

(क) किसी विशेष व्यक्ति का लेख

(ख) किसी विशेष व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया लेख

(ग) किसी विशेष विषय पर सामान्य से हटकर किया लेख

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2. संवाददाताओं के बीच उनकी रुचि और ज्ञान के आधार पर किए गए काम के बँटवारे को ----- कहते हैं :-

(क) बीट (ख) डेस्क

(ग) एकंरिंग (घ) संपादकीय

प्रश्न 3. विशेष लेखन के क्षेत्र है :-

(क) अर्थ-व्यापार (ख) विज्ञान प्रौद्योगिकी

(ग) फिल्म-मनोरंजन (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. विशेष संवाददाता का दर्जा पाने के लिए संवाददाता को होना चाहिए :-

(क) उच्च डिग्री प्राप्त करना

(ख) किसी विशेष पद का अधिकारी

(ग) अपने अनुभव के आधार पर विषय विशेष में अपनी जानकारी को विकसित करना

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5. सोना उछला; 'चाँदी लुढ़की', 'सेंसेक्स आसमान पर' प्रस्तुत शब्दावली का संबंध है :-

(क) कारोबार एवं व्यापार से (ख) सुनार से

(ग) खेल से (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6. विशेष संवाददाता बनने के लिए आवश्यक है :-

(क) इस विषय से संबंधित पुस्तकें पढ़े

(ख) इस विषय से संबंधित लोगों को अपडेट रखें

(ग) संबंधित विषय का शब्दकोश और एन साइक्लोपिडिया भी उनके पास हो

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 7. न्यूज़ पेग क्या है?

(क) न्यूज़ को अच्छी तरह समझना।

(ख) न्यूज़ को विशेष ढंग से पेश करना।

(ग) किसी विशेष लेख की शुरुआत किसी खबर से जोड़कर प्रस्तुत करना।

(घ) किसी खबर को पेशगी लेकर प्रस्तुत करना।

प्रश्न 8. 'विशेष लेखन' के लेखक अधिकतर होते हैं :-

(क) संपादक (ख) विशेष लेखक

(ग) विषय के विशेषज्ञ (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 9. 'नरोत्तमपुरी' किस क्षेत्र के विशेष रिपोर्ट कर्त्ता है :-

(क) पर्यावरण (ख) कानून-परामर्श दाता

(ग) खेल जगत (घ) फिल्म जगत

प्रश्न 10. समाचार पत्रों के किन लेखों में तकनीकी शब्दावली का भी प्रयोग किया जाता है :-

(क) फीचर (ख) विशेष रिपोर्ट

(ग) आलेख (घ) संपादकीय

पाठ-4

सृजनात्मक लेखन

'कैसे बनती है कविता'

- कविता इंसान के मन को अभिव्यक्त करने वाली सबसे पुरानी कला है। मौखिक युग में कविता के द्वारा इंसान ने अपने भावों को दूसरे तक पहुंचाया होगा। इससे स्पष्ट होता है कि कविता मन में उमड़ने-घुमड़ने वाले भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का काव्यात्मक माध्यम है।
- वाचिक परंपरा में जन्मीं कविता आज लिखित रूप में मौजूद है। पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए लोकगीतों और तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। कविता को आज तक किसी एक परिभाषा में बांध पाना सम्भव नहीं हो पाया है। अनेक प्राचीन काव्यशास्त्रियों और पश्चिमी विद्वानों ने कविता की अनेक परिभाषाएँ दी हैं। जैसे शब्द और अर्थ का संयोग, रसयुक्त वाक्य, संगीतमय विचार आदि।
- कविता लेखन के संबंध में दो मत मिलते हैं। एक का मानना है कि अन्य कलाओं के समान कविता लेखन की कला को प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि इसका संबंध मानवीय भावों से है जबकि दूसरा मत कहता है कि अन्य कलाओं की भांति प्रशिक्षण के द्वारा कविता लेखन को भी सरल बनाया जा सकता है।
- कविता का पहला उपकरण 'शब्द' है। कवि डल्ब्यू एच ऑर्डेन ने कहा कि 'प्ले विद द वर्ड्स' अर्थात् कविता लेखन में सबसे पहले शब्दों से खेलना सीखें, उनके अर्थ की परतों को खोलें क्योंकि शब्द ही भावनाओं और संवेदनाओं को आकार देते हैं।
- बिंब और छंद (आंतरिक लय) कविता को इंद्रियों से पकडने में सहायक होते हैं। बाह्य संवेदनाएँ मन के स्तर पर बिंब के रूप में परिवर्तित हो जाती है। छंद के अनुशासन की जानकारी के बिना आंतरिक लय का निर्वाह असंभव है। कविता की भाषा, बिंब, छंद, संरचना सभी परिवेश के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसलिए इनके अनुसर ही भाषा, बिंब और छंद का चयन किया जाता है।

- कविता के मुख्य घटक (तत्व)
  1. भाषा का सम्यक ज्ञान
  2. शब्द विन्यास
  3. छंद विषयक बुनियादी जानकारी
  4. अनुभव और कल्पना का सामंजस्य
  5. सहज सम्प्रेषण शक्ति
  6. भाव एवं विचार की अनुभूति
- नवीन दृष्टिकोण और प्रस्तुतीकरण की कला न हो तो कविता लेखन संभव ही नहीं है। प्रतिभा को किसी नियम या सिद्धांत द्वारा पैदा नहीं किया जा सकता, किन्तु परिश्रम और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। कविता लेखन के ये घटक कविता लेखन भले ही न सिखाएँ पर कविता की सराहना एवं कविता विषयक ज्ञान देने में सहायक हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 : कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं।

1. **भाषा का सम्यक ज्ञान :** कविता में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। भावों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जरूरी है कि कवि कविता में भाषा के रोज नये प्रयोगों द्वारा अपने अनुभवों को रूप प्रदान करता रहे।

2. **शब्द विन्यास :** शब्द मनुष्य के सबसे प्रिय मित्र होते हैं। इसलिए कविता लेखन के समय कवि को अपने भावों और विचारों के अनुरूप शब्दों का चयन कर उनका प्रयोग करना चाहिए।

3. **छंद विषयक बुनियादी जानकारी :** छंद और तुक से बँधी हुई रचना हमारी भावनाओं को संगीत में बाँधकर हमारे सामने प्रस्तुत करती है तो उसकी छूअन हमें भीतर तक उस भाव से जोड़ देता है। इसलिए कविता में छंद और तुक कविता को अधिक भावमयी बना देते हैं।

4. **अनुभव और कल्पना का सामंजस्य :** कवि कविता में भावों और विचारों के साथ अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करता है। कल्पना के द्वारा कवि कविता में जीवन के सत्य के मधुर और कटु दोनों रूपों को प्रकट करता है। कवि को केवल कोरी कल्पना से बचना चाहिए।

5. **सहज सम्प्रेषण शक्ति :** कविता कवि अपने लिए नहीं लिखता वरन् उसका लक्ष्य अपने भावों और विचारों से समाज को परिचित कराना है। इसलिए वह अपने भावों का साधारणीकरण करता है। सहज व सरल भाव पाठक को कविता के साथ बांध देते हैं।

6. **भाव एवं विचार की अनुभूति :** कविता भावों का प्रबल आवेग है और मनुष्य भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए तत्पर रहता है। सामान्य व्यक्ति कविता की उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकता जहाँ कवि पहुँच जाता है क्योंकि कवि की आत्म शक्ति प्रबल होती है।

पाठ-5

नाटक लिखने का व्याकरण

पाठ परिचय : नाटक एक दृश्य विद्या है। इसे हम अन्य गद्य विधाओं से इसलिए अलग भी मानते हैं, क्योंकि नाटक भी कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध आदि की तरह साहित्य के अन्तर्गत ही आता है। पर यह अन्य विधाओं से इसलिए अलग है क्योंकि वह अपने लिखित रूप से दृश्यता की ओर बढ़ता है। नाटक केवल अन्य विधाओं की भांति केवल एक आयामी नहीं है। नाटक का जब तक मंचन नहीं होता तब तक वह सम्पूर्ण रूप व सफल रूप में प्राप्त नहीं करता है। अत: कहा जा सकता है कि नाटक को केवल पाठक वर्ग नहीं दर्शक वर्ग भी प्राप्त है।

साहित्य की अन्य विधाएँ पढ़ने या फिर सुनने तक की यात्रा करती है, परंतु नाटक पढ़ने, सुनने और देखने के गुण को भी अपने भीतर रखता है।

नाटक के प्रमुख तत्व या अंग घटक इस प्रकार हैं :

1. समय का बंधन, 2. शब्द, 3. कथ्य, 4. संवाद, 5. द्वंद (प्रतिरोध), 6. चरित्र योजना, 7. भाषा शिल्प, 8. ध्वनि योजना, 9. प्रकाश योजना, 10. वेषभूषा, 11. रंगमंचीयता।

प्रश्न 2 : ''समय के बंधन' का नाटक में क्या महत्व है?

उत्तर : नाट्य विधा में 'समय के बंधन' का विशेष महत्व है। नाटककार को 'समय के बंधन' का अपने नाटक में विशेष ध्यान रखना होता है और इस बात का नाटक की रचना पर भी पूरा प्रभाव पड़ता है। नाटक को शुरु से अन्त तक एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा होना होता है। यदि ऐसा नहीं होता तो नाटक से प्राप्त होने वाला रस, कौतुहल आदि प्राप्त नहीं हो पाता है। नाटक का मंथन हम धारावाहिक के रूप में नहीं दिखा सकते हैं। नाटककार चाहे अपनी किसी भूतकालीन रचना को ले या किसी अन्य लेखक की रचना को चाहे वह भविष्यकाल की हो, वह दोनों परिस्थितियों में नाटक का मंचन वर्तमान काल में ही करेगा। इसीलिए नाटक के मंचीय निर्देश हमेशा वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। क्योंकि नाटक का कभी भी मंचन हो वह वर्तमान काल में ही घटित होगा। या खेला जाएगा।

इसके साथ-साथ ही नाटक के प्राय: तीन अंक होते हैं, प्रारंभ, मध्य, समापन। अत: इन अंकों को ध्यान में रखते हुए भी नाटक को समय सीमा में बांटना जरूरी हो जाता है।

पाठ-6

कैसे लिखें कहानी

मुख्य बिन्दु

कहानी : किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिन्दु हो, उसे कहानी कहा जाता है। कहानी जीवन का अविभाज्य अंग है। हर व्यक्ति अपनी बातें दूसरों को सुनाना और दूसरों की बातें सुनना चाहता है। कहानी लिखने का मूलभाव सभी में होता है, इसे कुछ लोग विकसित कर पाते हैं, कुछ नहीं।

कहानी का इतिहास : जहाँ तक कहानी के इतिहास का सवाल है, वह उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है। मौखिक कहानी की परम्परा बहुत पुरानी है। प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ अत्यन्त लोकप्रिय थी, क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थीं। धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया था। शिक्षा देने के लिए भी पंचतंत्र जैसी कहानियाँ लिखी गईं, जो जगप्रसिद्ध हैं।

कथानक : कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है। जिसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख होता है। कथानक को कहानी का प्रारम्भिक नक्शा माना जा सकता है।

कहानी का कथानक आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कहानीकार कल्पना का विकास करते हुए एक परिवेश, पात्र और समस्या को आकार देता है तथा एक ऐसा काल्पनिक ढांचा तैयार करता है जो कोरी कल्पना न होकर संभावित हो और लेखक के उद्देश्य से मेल खाता हो। कथानक में प्रारम्भ, मध्य और अन्त- कथानक का पूरा स्वरूप होता है।

द्वंद्व : कहानी में द्वंद्व के तत्व का होना आवश्यक है। द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है तथा कहानी में रोचकता बनाए रखता है। द्वंद्व के तत्वों से अभिप्राय यह है कि परिस्थितियों के रास्ते में एक या अनेक बाधाएँ होती हैं उन बाधाओं के समाप्त हो जाने पर, किसी निष्कर्ष पर पहुँच कर कथानक पूरा हो जाता है। कहानी की यह शर्त है कि वह नाटकीय ढंग से

अपने उद्देश्य को पूर्ण करते हुए समाप्त हो जाए। कहानी द्वंद्व के कारण ही पूर्ण होती है।

देशकाल और वातावरण : हर घटना, पात्र और समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने के लिए आवश्यक है कि लेखक देशकाल और वातावरण का पूरा ध्यान रखे।

पात्र : पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा, उतनी ही आसानी से उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी।

चरित्र चित्रण : पात्रों का चरित्र-चित्रण पात्रों की अभिरूचियों के माध्यम से, कहानीकार द्वारा गुणों का बखान करके, पात्र के क्रिया-कलापों, संवादों के माध्यम से किया जाता है।

संवाद : कहानी में संवाद का विशेष महत्व है। संवाद ही कहानी को और पात्र को स्थापित एवं विकसित करते हैं, साथ ही कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं, जो घटना या प्रतिक्रिया, कहानीकार नहीं दिखा सकता, उसे संवादों के माध्यम से सामने लाता है। संवाद पात्रों के स्वभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल होते हैं।

चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) : कथानक के अनुसार कहानी चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) की ओर बढ़ती है। सर्वोत्तम यह है कि चरमोत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करे तथा उसे लगे कि उसे स्वतन्त्रता दी गई है, उसने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वह उसके अपने हैं।

कहानी लिखने की कला : कहानी लिखने की कला को सीखने का सबसे अच्छा और सीधा रास्ता यह है कि अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाएं और उनका विश्लेषण किया जाए।

पाठ-7

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

प्रश्न 1 : नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है?

उत्तर : नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को सरल बनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रूककर एक रूपरेखा प्रदान करें। उसके बाद शानदार तरीके से अपने विषय की शुरुआत करें।
2. उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाये, यह भी दिमाग में पहले से होना आवश्यक है।
3. जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है।
4. किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ-साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक है।
5. आत्मपरक लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है। जबकि निबंधों और अन्य लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग लगभग वर्जित होता है।

प्रश्न 2 : आलेख या फीचर लेखन करते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

उत्तर :

1. आलेख या फीचर की भाषा सरल, सरस और भावपूर्ण होनी चाहिए।
2. इसमें नई जिज्ञासाएँ जागृत करने की क्षमता होनी चाहिए।
3. इसमें विचारों की अधिकता होनी चाहिए।
4. इसमें किसी बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए।
5. यह नवीनता और ताज़गी से युक्त होना चाहिए।
6. इसका आकार बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन-अभ्यास

1. कोराना के पश्चात विद्यालय में मेरा पहला दिन
2. बोर्ड परीक्षा का पेपर और दिल्ली का ट्रैफिक जाम
3. जब मैंने पहला पौधा लगाया
4. बोर्ड परीक्षा से एक रात पहले बिजली का चले जाना
5. भयंकर गर्मी में चौराहे पर बच्चों द्वारा भीख माँगना
6. मेरी पहली हवाई यात्रा
7. यदि इंटरनेट अचानक बंद हो जाए
8. मोबाइल के बिना दुनिया की कल्पना
9. रक्तदान का मेरा अनुभाव
10. अपने विदेशी दोस्त के साथ मेरा दिल्ली भ्रमण
11. सपने में गांधी जी से मुलाकात
12. यमुना नदी को साफ सुथरा बनाने का स्वप्न
13. दिल्ली की इलेक्ट्रिक बस में मेरी पहली यात्रा
14. कोराना के पश्चात बाजारों में भीड़-भाड़
15. मेरे जीवन की वह सुखद घटना
16. मेरे मोहल्ले में बरसात
17. मेट्रो स्टेशन पर मित्र से मुलाकात
18. मंच पर पहली बार
19. नदी का शांत तट और मैं
20. सब्जी बेचता बच्चा
21. घनी अंधेरी रात में आकाश का वह सबसे चमकीला तारा
22. घर से स्कूल तक का सफर
23. परीक्षा के दिन
24. विज्ञापन-कितना झूठ कितना सच
25. मेरा प्यारा बचपन
26. सोशल मीडिया-कितना सही कितना गलत
27. पर्यावरण के लिए मेरी जिम्मेदारी
28. लक्ष्य तक पहुँचने की तैयारी
29. आत्मघाती है बदले की भावना
30. मेरी भाषा मेरा गौरव

फीचर/आलेख-अभ्यास

1. बस्तों के बोझ के नीचे गुम होता बचपन।
2. जीवन के बेहतरीन पलों को छीनता मोबाइल फोन।
3. हर हाथ में हथियार-सोशल मीडिया।
4. भीड़ में अकेले हम।
5. घर और बाहर-दोनों मोर्चों पर जूझती महिलाएँ।
6. सब पढ़ें, सब बढ़ें।
7. स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत।
8. यातायात नियमों की अनदेखी से होती दुर्घटनाएँ।
9. धर्म तोड़ता नहीं, जोड़ता है।
10. सफलता में बाधक सोच-'मैं ही सही हूँ।'
11. दिव्यांगों की खेल जगत में बढ़ती हुई उपलब्धियाँ।
12. असुरक्षित माहौल : कामकाजी महिलाएँ।
13. बच्चों में आत्मविश्वास की कमी।
14. शिक्षा के स्तर पर हुए सुधार/क्रान्ति।

हल सहित/आलेख

प्रश्न 1 : 'खेल और स्वास्थ्य' पर फीचर लिखें-

खेलना एक शारीरिक क्रिया कलाप है। जिससे हमारे शरीर के सभी अंगों का संचालन होता है। क्योंकि इससे हमारे शरीर में रक्त का परिसंचरण भी सुधर जाता है। जीवन में सदैव खेलों में भाग लेने से सबसे पहले तो हमारे स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव पड़ता है और हमारी कोशिकाओं में रक्त का संचार सही बना रहता है। हमारे ऊतक जो टूटते रहते हैं वे फिर से बन जाते हैं और हमारा स्नायु-तंत्र मजबूती से काम करता रहता है। यदि स्वस्थ वातावरण में सामान्य शारीरिक गतिविधियाँ की जाएँ तो शारीरिक सुदंरता के साथ-साथ स्वास्थ्यगत सुदंरता भी प्राप्त हो सकेगी।

खेलों में भाग लेने वाले व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक विकास दूसरों से अच्छा होता है व दोनों में सतुंलन बनाए रखने में सहायता करता है। उसके स्मृति, स्तर एकाग्रता-स्तर और सीखने की क्षमता में सुधार होता है।

परीक्षोपयोगी एक अंक वाले प्रश्नोत्तर (अभिव्यक्ति और माध्यम)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

प्रश्न 1. रेडियो समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उत्तर–रेडियो समाचार की भाषा सरस, निरक्षर लोगों के लिए बोधगम्य, आम बोलचाल की सुस्पष्ट भाषा होनी चाहिए।

प्रश्न 2. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के तेजी से लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

उत्तर– इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। इसमें पढ़ने, सुनने और देखने की तीनों सुविधाएँ होती हैं।

प्रश्न 3. विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – किसी विशेष विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन होता है। अधिकांश समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के साथ–साथ रेडियो और टी.वी. चैनलों में भी विशेष लेखन होता है।

प्रश्न 4. पत्रकारिता की साख बनाए रखने के लिए संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का नामोल्लेख कीजिए!

उत्तर–(क) तथ्यों की शुद्धता पर ध्यान देना।

(ख) निष्पक्षता के साथ सामग्री को प्रस्तुत करना।

प्रश्न 5. फीचर किसे कहते हैं?

उत्तर – सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन को फीचर कहते हैं। इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना होता है।

प्रश्न 6. इंटरनेट पत्रकारिता के बहुत लोकप्रिय होने का सबसे प्रमुख कारण क्या है ?

उत्तर– इंटरनेट की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। यह सभी प्रकार की सूचनाओं के आदान–प्रदान, चर्चा व परिचर्चाओं का साधन होने के साथ–साथ मनोरंजन का भी साधन है।

प्रश्न 7. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर आधारित होती है ?

उत्तर – उल्टा पिरामिड शैली।

प्रश्न 8. भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला?

उत्तर– भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में, गोवा में खुला।

प्रश्न 9. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर–बीट रिपोर्टिंग में संवाददाता का उस क्षेत्र के संबंध या विषय में सामान्य जानकारी या रुचि होना पर्याप्त है जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण होता है। पत्रकार को उस विषय की विशेष जानकारी होनी चाहिए

प्रश्न 10. वेबसाइट पर पत्रकारिता शुरू करने की पहली साइट कौन सी है?

उत्तर – रिडिफ़ डॉट कॉम को।

प्रश्न 11. टी.वी. पर प्रसारित किए जाने वाले समाचार किन-किन चरणों से होकर दर्शकों तक पहुँचते हैं?

उत्तर–टी.वी. समाचार दर्शकों तक निम्नलिखित चरणों से होकर पहुँचते हैं

फ्लैश या ब्रेकिंगन्यूज, ड्राई एंकर, फोन–इन एंकर, विजुअल, एंकर बाइट, लाइव, एंकर पैकेज।

प्रश्न 12. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है, लिखिए।

उत्तर–विशेष रिपोर्ट चार प्रकार की होती है–खोजी रिपोर्ट, इन डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट।

प्रश्न 13. बीट किसे कहते हैं ?

उत्तर– खबरें कई तरह की होती हैं, जैसे–राजनीतिक, आर्थिक, आपराधिक, खेल, फिल्म, कृषि आदि। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहा जाता है।

प्रश्न 14. पत्रकार का क्या दायित्व है ?

उत्तर–पत्रकार का दायित्व है–पाठकों अथवा दर्शकों तक सूचना पहुँचाना, उन्हें जागरूक और शिक्षित करने के साथ–साथ उनका मनोरंजन करना।

प्रश्न 15. पत्रकार कितने तरह के होते हैं?

उत्तर– पत्रकार तीन तरह के होते हैं–पूर्णकालिक पत्रकार, अंशकालिक पत्रकार और फ्रीलांसर पत्रकार।

प्रश्न 16. पूर्णकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर– वे पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करने वाले वेतनभोगी कर्मचारी होते हैं। वे पूर्णकालिक पत्रकार कहलाते हैं।

प्रश्न 17. अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं?

उत्तर – अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार होता है।

प्रश्न 18. फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं ?

उत्तर– वह पत्रकार जिसका संबंध किसी विशेष अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग–अलग अखबारों के लिए लिखता है।

प्रश्न 19. पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा कहाँ तक सीमित है ?

उत्तर – पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों तक सीमित होता है।

प्रश्न 20. **समाचारपत्रों के समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर–(क) भाषा सीधी, सरल, साफ–सुथरी और प्रभावी होने के साथ–साथ सुबोध होती है।

(ख) वाक्य छोटे–छोटे और सहज होते हैं।

प्रश्न 21. उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का ढाँचा क्या होता है ?

उत्तर–उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का ढाँचा इस प्रकार होता है–इंट्रो या मुखड़ा, बॉडी और समापन।

प्रश्न 22. समाचार लेखन के छह ककार क्या होते हैं ?

उत्तर – समाचार लेखन के छह ककार होते हैं–क्या, किसके, कब, कहाँ, क्यों और कैसे। समाचार–लेखन में इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है।

प्रश्न 23. इंट्रो या मुखड़े में कितने ककारों का उत्तर दिया जाता है ?

उत्तर – इंट्रो या मुखड़े में पहले तीन–चार ककारों का उत्तर दिया जाता है। ये ककार हैं– क्या, कौन, कब और कहाँ।

प्रश्न 24. फीचर लेखन की शैली कैसी होती है ?

उत्तर – फीचर लेखन की शैली सीधा पिरामिड अर्थात कथात्मक होती है।

प्रश्न 25. आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन–सा है ?

उत्तर–आधुनिक जनसंचार के माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम प्रिंट माध्यम है।

प्रश्न 26. प्रिंट या मुद्रित जनसंचार माध्यम के दो रूप बताइए।

उत्तर – समाचारपत्र और पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें प्रिंट माध्यम के दो रूप हैं।

प्रश्न 27. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

उत्तर –मुद्रित माध्यमों में छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, आराम से पढ़ते हुए सोच सकते हैं और समझ में न आने पर पुनः पढ़ सकते हैं। यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रश्न 28. मुद्रित माध्यमों की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–(क) मुद्रित माध्यमों की भाषा आम बोलचाल की सरल, सुबोध और प्रचलित भाषा होती है।

(ख) मुद्रित माध्यमों की भाषा व्याकरण और वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध होती है।

प्रश्न 29. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?

उत्तर- मुद्रित माध्यम निरक्षरों के लिए किसी काम के नहीं हैं, यही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है।

प्रश्न 30. अखबारों की दो खामियाँ लिखिए।

उत्तर - (क) अखबार तुरंत घटी घटनाओं को पाठकों तक तुरंत नहीं पहुँचा सकते।

(ख) मुद्रित माध्यमों में लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा ज्ञान, उनकी शैक्षिक योग्यता, उनकी रुचियों और आवश्यकताओं का ध्यान रखना पड़ता है।

प्रश्न 31. रेडियो से श्रोता को क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है?

उत्तर - (क) रेडियो श्रोता को खबरों को पुनः सुनने की सुविधा नहीं है। रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुना सकता।

(ख) उसे अपनी रुचि-अरुचि के सभी समाचारों को सुनने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

प्रश्न 32. नेट या नेट साउंड से क्या आशय है ?

उत्तर-नेट या नेट साउंड से आशय है-ऐसी प्राकृतिक आवाजें जो शूट करते समय अपने आप चली आती है।

प्रश्न 33. आम आदमी के दो जनसंचार माध्यम कौन-कौन से हैं ?

उत्तर - रेडियो और टेलीविजन दोनों आम आदमी के माध्यम हैं।

प्रश्न 34. रेडियो और टी.वी. समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर -(क) रेडियो और टी.वी. समाचारों की भाषा सरल, सुबोध और प्रभावी होती है।

(ख) वाक्य छोटे-छोटे, सीधे और स्पष्ट होते हैं।

प्रश्न 35. ऐसे तीन शब्द लिखिए जिनका रेडियो और टी.वी. की भाषा में प्रयोग निषेध होता है?

उत्तर - (क) निम्नलिखित (ख) उपरोक्त (ग) अधोहस्ताक्षरित।

प्रश्न 36. रेडियो और टी.वी. के लिए साफ-सुथरी और सरल भाषा लिखने के लिए किन दो चीजों के प्रयोग से बचना आवश्यक है?

उत्तर-(क) गैर जरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, अतिरंजित उपमाओं से।

(ख) मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से।

प्रश्न 37. भाषा के साफ-सुथरी रखने के दो उपाय लिखिए।

उत्तर (क) वाक्य छोटे-छोटे हों। एक वाक्य में एक ही बात कही जाए।

(ख) वाक्यों में तारतम्य होना चाहिए।

प्रश्न 38. अपडेट करने से क्या आशय है?

उत्तर–अपडेट करने से आशय है कि इंटरनेट की विभिन्न वेबसाइटों पर उपलब्ध नवीनतम सूचना से स्वयं को परिचित रखना।

प्रश्न 39. इंटरनेट के दो प्रमुख लाभ बताइए।

उत्तर–(क) इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर खबरों का संप्रेषण किया जाता है।

(ख) समाचारों के संकलन, उनके सत्यापन और पुष्टिकरण के लिए इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 40. आजकल टेलीप्रिंटर एक सेकेंड में लगभग कितने शब्द का एक जगह से दूसरी जगह भेज सकता है ?

उत्तर–लगभग 70 हजार शब्द प्रति सेकेंड।

प्रश्न 41. इंटरनेट पत्रकारिता का आरंभ कब हुआ?

उत्तर– इंटरनेट पत्रकारिता का आरंभ सन 1982 में हुआ।

प्रश्न 42. इंटरनेट पत्रकारिता किसे कहते हैं ?

उत्तर – इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान–प्रदान करना, लेखों, चर्चा–परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों द्वारा अपने समय की धड़कनों को अनुभव और दर्ज करने को इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं।

प्रश्न 43. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का कौन–सा दौर चल रहा है?

उत्तर– भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है।

प्रश्न 44. इंटरनेट पर पढ़े जा सकने वाले दो हिंदी समाचारपत्रों के नाम लिखिए।

उत्तर– 'नवभारत टाइम्स' और 'हिंदुस्तान'।

प्रश्न 45. हिंदी में नेट पत्रकारिता करने का श्रेय किसे दिया जाता है?

उत्तर– हिंदी में नेट पत्रकारिता आरंभ करने का श्रेय 'वेब दुनिया' को दिया जाता है।

प्रश्न 46. उस हिंदी अखबार का नाम बताइए जो प्रिंट रूप में न होकर केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

उत्तर–'प्रभासाक्षी' नामक हिंदी अखबार केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

प्रश्न 47. हिंदी का सर्वश्रेष्ठ वेबसाइट कौन–सी है?

उत्तर – हिंदी की सर्वश्रेष्ठ वेबसाइट बी.बी.सी. की है।

प्रश्न 48. आजकल इंटरनेट पत्रकारिता के अत्यंत लोकप्रिय होने का क्या कारण है ?

उत्तर– इससे न केवल खबरों का संप्रेषण, पुष्टि, सत्यापन होता है बल्कि खबरों के बैकग्राउंड को तैयार करने में तत्काल सहायता मिलती है।

प्रश्न 49. टी.वी. पर प्रसारित खबरों में सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है ?

उत्तर–टी.वी. पर प्रसारित खबरों में विजुअल, नेट और बाइट सबसे महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 50. प्रिंट माध्यम की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– (क) प्रिंट माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है।

(ख) इस माध्यम से लिखित भाषा का विस्तार होता है।

प्रश्न 51. प्रिंट माध्यम की दो खामियाँ लिखिए।

उत्तर– (क) अशिक्षित व्यक्तियों के लिए इस माध्यम की कोई उपयोगिता नहीं है।

(ख) यह तुरंत घटी घटनाओं की सूचना तत्काल नहीं दे पाता।

प्रश्न 52. रेडियो माध्यम की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– (क) यह माध्यम शिक्षित व अशिक्षित दोनों के काम का है।

(ख) रेडियो माध्यम के लिए बिजली की अनिवार्यता नहीं है।

प्रश्न 53. टेलीविजन की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–(क) टेलीविजन में देखने और सुनने की दोनों सुविधाएँ हैं।

(ख) यह घटनाओं को तुरंत श्रोताओं–दर्शकों तक पहुँचाता है।

प्रश्न 54. इंटरनेट की कमी का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–इंटरनेट अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का माध्यम बन गया है।

प्रश्न 55. एक अच्छे और रोचक फीचर के लिए क्या-क्या आवश्यक है?

उत्तर–एक अच्छे और रोचक फीचर के लिए फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स का होना आवश्यक है।

प्रश्न 56. अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने वाले पृष्ठ को क्या कहते हैं?

उत्तर––संपादकीय पृष्ठ के सामने वाले पृष्ठ को ऑप–एड पृष्ठ कहते हैं।

प्रश्न 57. संपादकीय का क्या महत्त्व होता है?

उत्तर –संपादकीय में अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करते हैं।

प्रश्न 58. स्तंभ लेखन का कार्य कौन करता है?

उत्तर –स्तंभ लेखन का कार्य कुछ महत्वपूर्ण लेखक करते हैं।

प्रश्न 59. संपादक के नाम पत्र लेखन का उद्देश्य क्या होता है?

उत्तर– 'संपादक के नाम पत्र' का उद्देश्य जनता या पाठकों को विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय प्रकट करने का अवसर देना होता है।

प्रश्न 60. अखबारों में लेख कौन लिखता है ?

उत्तर– अखबारों में लेख वरिष्ठ पत्रकार और विषय–विशेषज्ञ लिखते हैं।

प्रश्न 61. लेख और विशेष रिपोर्ट में क्या अंतर होता है ?

उत्तर– लेख में लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। उसमें उस विषय से जुड़े सभी तथ्यों और सूचनाओं के अतिरिक्त पृष्ठभूमि की सामग्री भी होती है जबकि विशेष रिपोर्ट में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

प्रश्न 62. साक्षात्कार के लिए पत्रकार में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

उत्तर–किसी व्यक्ति का साक्षात्कार करने के लिए पत्रकार में संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य, साहस और ज्ञान जैसे गुण होने चाहिए।

प्रश्न 63. वह लेखन, जिसमें किसी मुद्दे के प्रति समाचारपत्र की अपनी राय प्रकट की जाती है, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर– उसे संपादकीय कहते हैं।

प्रश्न 64. किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहन छानबीन और विश्लेषण को क्या कहा जाता है?

उत्तर–उसे रिपोर्ट कहते हैं।

प्रश्न 65. लेख किसे कहते हैं ?

उत्तर–किसी समाचार के अंतर्गत उसका विस्तार, पृष्ठभूमि, विवरण आदि वाले को लेख कहते हैं।

प्रश्न 66. डेस्क से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– समाचारपत्रों और पत्रिकाओं, टी.वी. और रेडियो चैनल में विशेष लेखन की व्यवस्था को डेस्क कहते हैं।

प्रश्न 67. विशेष लेखन क्या होता है?

उत्तर–किसी विशेष विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है।

प्रश्न 68. **संवाददाताओं में काम का विभाजन किस आधार पर किया जाता है?**
उत्तर- संवाददाताओं में काम का विभाजन उनकी विषय में दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है?

प्रश्न 69. **बीट किसे कहते हैं?**
उत्तर- संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखने की प्रक्रिया को मीडिया में बीट कहा जाता है।

प्रश्न 70. **खेलों में दिलचस्पी और जानकारी रखने वाले पत्रकार को कौन-सी बीट मिलेगी?**
उत्तर- खेल बीट।

प्रश्न 71. **कृषि क्षेत्र से संबंधित शब्दावली के दो उदाहरण दीजिए।**
उत्तर- (क) गेहूँ टूटा।
(ख) लाल मिर्च और लाल हुई।

प्रश्न 72. **सर्राफ़ा बाजार से संबंधित भाषा-शैली के दो उदाहरण लिखिए।**
उत्तर- (क) सोना तेरह हजारी हुआ।
(ख) चाँदी लुढ़की।

प्रश्न 73. **पर्यावरण और मौसम से जुड़ी विशेष शब्दावली का प्रयोग करते हुए दो समाचारों के शीर्षक लिखिए।**
उत्तर- (क) मछुआरों को सुनामी की चेतावनी।
(ख) पश्चिमी विक्षोभ के कारण मूसलाधार वर्षा की संभावना।

प्रश्न 74. **बीट से जुड़ा समाचार लिखने की शैली क्या होती है?**
उत्तर- उल्टा पिरामिड शैली

प्रश्न 75. **विशेष लेखन के पाँच प्रमुख विषय लिखिए।**
उत्तर- (क) अर्थ-व्यापार (ख) विज्ञान-प्रौद्योगिकी (ग) खेल (घ) कृषि (ड) विदेश।

प्रश्न 76. **पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ क्या है?**
उत्तर- पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ है-व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने पर भी किसी विशेष विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर समझ को उस सीमा तक विकसित करना कि उनकी आप सहजता से व्याख्या कर सकें।

प्रश्न 77. कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी रोजमर्रा की खबरें किस शैली में लिखी जाती हैं ?

उत्तर–उल्टा पिरामिड शैली में लिखी जाती हैं।

प्रश्न 78. दलहन और तेल के कारोबार से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर–(क) स्टॉकिस्टों की चौतरफा बिकवाली से उड़द में से दो दिनों में 150 रुपये निकले।

(ख) वनस्पति तेल में आग लगी।

प्रश्न 79. खेल क्षेत्र से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर–(क) मुरलीधरन की स्पिन में आस्ट्रेलिया फँसा।

(ख) विकटों की पतझड़ : एक दिन में 16 विकटें गिरी।

प्रश्न 80. सूचनाओं के दो मुख्य स्त्रोत कौन-कौन से हैं?

उत्तर–(क) मंत्रालय के सूत्र

(ख) प्रेस कान्फ्रेंस और विज्ञप्तियाँ।

प्रश्न 81. कविता की उत्पत्ति के मूल में क्या-क्या है?

उत्तर– कविता की उत्पत्ति के मूल में संवेदना और राग तत्व हैं।

प्रश्न 82. कविता लेखन के संबंध में कौन-से दो मत प्रचलित हैं ?

उत्तर–(क) कविता लेखन की कोई प्रणाली सिखाई या बताई नहीं जा सकती।

(ख) प्रशिक्षण के द्वारा कविता लिखना सिखाया जा सकता है।

प्रश्न 83. बचपन में बच्चों का कविता से परिचय किस रुप में होता है?

उत्तर – लोरी के रुप में प्रथम परिचय होता है।

प्रश्न 84. कविता अन्य कलाओं की तरह सिखाई क्यों नहीं जा सकती है?

उत्तर– क्योंकि इसमें बाह्य उपकरणों की सहायता नहीं ली जा सकती है।

प्रश्न 85. कविता का सबसे पहला उपकरण क्या है ?

उत्तर – कविता का सबसे पहला उपकरण 'शब्द' है।

प्रश्न 86. शब्दों से खेलने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर–शब्दों से खेलने का तात्पर्य है शब्दों के नए आयाम खोलना और लय तथा ताल की दुनिया में जाना।

प्रश्न 87. बिंब और छंद हमारी क्या सहायता करते हैं?

उत्तर –बिंब और छंद कविता की आंतरिक लय को इंद्रियों द्वारा पकड़ने में हमारी सहायता करते हैं।

प्रश्न 88. कविता का अनिवार्य तत्त्व कौन-सा है ?

उत्तर – छंद कविता का अनिवार्य तत्त्व है।

प्रश्न 89. कविता के सारे घटक किससे प्रचलित होते हैं?

उत्तर – कविता के सारे घटक परिवेश और संदर्भ से प्रचलित होते हैं।

प्रश्न 90. कविता के घटक कौन-कौन से हैं ?

उत्तर – कविता के घटक भाषा, संरचना, बिंब, छंद और संकेत हैं।

प्रश्न 91. कविता किनसे बनती है?

उत्तर– कविता शब्दों के मेल, परिवेश के अनुसार शब्द–चयन, लय, तुक, वाक्य संरचना, यति–गति, बिंब, संक्षिप्तता के साथ–साथ विभिन्न अर्थ स्तर आदि से बनती है।

प्रश्न 92. नाटक को किस प्रकार के काव्य की संज्ञा दी गई है ?

उत्तर–दृश्य काव्य की।

प्रश्न 93. नाटककार को नाटक लिखते समय किस बात को सदा याद रखना चाहिए?

उत्तर–समय के बंधन की बात को नाटककार को सदैव ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न 94. नाटक वर्तमानकाल में ही क्यों लिखे जाते हैं ?

उत्तर–नाटक को वर्तमानकाल में संयोजित करना होता है। इसलिए नाटक वर्तमान में ही लिखे जाते हैं।

प्रश्न 95. नाटक का शरीर किसे कहा जाता है ?

उत्तर– बोले जाने वाले 'शब्द' को नाटक का शरीर कहा जाता है।

प्रश्न 96. नाटक के तत्त्व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर – कथ्य, संवाद, चरित्र–चित्रण, देश–काल, भाषा और उद्देश्य नाटक के तत्त्व हैं।

प्रश्न 97. नाटककार को कौन-सी कला आनी चाहिए?

उत्तर– नाटककार को घटनाओं, स्थितियों अथवा दृश्यों का चुनाव, उन्हें उचित क्रम में रखना, प्रारंभ से अंत तक विकास की दिशा में आगे बढ़ने की कला अवश्य आनी चाहिए।

प्रश्न 98. किस प्रकार का नाटक गहरा और सशक्त सिद्ध होता है?

उत्तर–जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक गुण जितने अधिक होंगे वह नाटक उतना ही गहरा और सशक्त होगा।

प्रश्न 99. दो चर्चित नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर– अंधायुग और तुगलक।

प्रश्न 100. आधुनिक युग के दो नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर– मोहन राकेश, धर्मवीर भारती।

प्रश्न 101. एक अच्छा नाटक कौन-सा होता है ?

उत्तर – एक अच्छा नाटक वही होता है जो कथा को आपसी बहस, वाद-विवाद और तर्क-वितर्क से आगे बढ़ाता है।

प्रश्न 102. कहानी का इतिहास कितना पुराना है?

उत्तर – कहानी का इतिहास, मानव इतिहास जितना ही पुराना है।

प्रश्न 103. कहानी का केंद्र-बिंदु कौन होता है ?

उत्तर– कहानी का केंद्र–बिंदु कथानक होता है।

प्रश्न 104. कहानी के तत्वों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–कहानी के तत्त्व हैं–कथानक, पात्र, भाषा, देशकाल, उद्देश्य, संवाद।

प्रश्न 105. कहानी में कथानक के कितने स्तर होते हैं ?

उत्तर– कहानी में कथानक के तीन स्तर–आदि, मध्य, अंत होते हैं।

प्रश्न 106. कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उत्तर – कहानी की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक होनी चाहिए।

प्रश्न 107. लेख में किस शैली का प्रयोग होता है?

उत्तर–लेख में 'मैं' शैली का प्रयोग होता है।

प्रश्न 108. कहानी को रोचक बनाने में कौन सा तत्त्व सहायक होता है?

उत्तर– द्वन्द्व।

प्रश्न 109. कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उत्तर – सरल, सहज और स्वाभाविक।

प्रश्न 110. स्टिंग ऑपरेशन क्या है ? यह क्यों किया जाता है।

उत्तर– स्टिंग ऑपरेशन किसी गुप्त कैमरे से किया गया गुप्त ऑपरेशन है जिसमें किसी भ्रष्टाचार अथवा रहस्य का भंडाफोड किया जाता है।

प्रश्न 111. ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई थी? अब यह (AIR) संस्था के अंतर्गत आता है।?

उत्तर– ऑल इंडिया रेडियो (AIR) की स्थापना 1936 ई0 में हुई थी। अब यह 'प्रसार भारती' नामक संस्था के अन्तर्गत आता है।

प्रश्न 112. द्वारपाल किन्हें कहा जाता है?

उत्तर–द्वारपाल संपादक या संपादक मंडल को कहा जाता है जो प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

प्रश्न 113. पत्रकारिता की बैसाखियों से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– पत्रकारिता की बैसाखियों से तात्पर्य है – वे साधन जिनके सहारे पत्रकारिता निष्पक्ष, वस्तुपरक और सन्तुलित बनती है। ये बैसाखियाँ हैं–1. निष्पक्षता 2. सच्चाई 3. संतुलन 4.स्पष्टता।

प्रश्न 114 रेडियो समाचार वाचक की दो विशेषताएँ बताएँ?

उत्तर – 1. आवाज में स्पष्टता हो।

2. वाचक का उच्चारण सही हो।

प्रश्न 115. चौथा खंभा किसे कहा जाता है? क्यों?

उत्तर–मीडिया को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है, क्योंकि मीडिया ही लोकतंत्र को सजग बनाए रखता है। वह जनता के हितों की रक्षा करता है।

प्रश्न 116. संचार प्रक्रिया में 'फीड-बैक' का महत्त्व बताइए?

उत्तर–समाचार प्राप्तकर्त्ता की प्रतिक्रिया को 'फीड–बैक' कहा जाता है। फीड–बैंक के आधार पर ही संदेश में सुधार किया जाता है। इसी से संचार की प्रक्रिया आगे बढ़ती है।

प्रश्न 117. स्वतंत्रता से पहले की किन्हीं दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर 1 हँस 2 जागरण

प्रश्न 118 भारत में कौन–कौन सी साइट प्रयोग की जाती है ?

उत्तर–भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ डॉटकॉम', इंडियाइफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है।

प्रश्न–119. उल्टा पिरामिड–शैली में समाचारों को किस क्रम में लिखा जाता है ?

उत्तर–उल्टा पिरामिड–शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए क्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/विचार/समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम के बजाए सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है।

प्रश्न 120. रेडियो प्रसारण के लिए तैयार किए जा रहे समाचार की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–(i) उच्चारण में जटिल शब्द न हों।

(ii) संख्या को शब्दों में लिखें।

(iii) पर्याप्त हाशिया दोनों ओर हो।

(iv) % और $ को प्रतिशत और डॉलर लिखा जाए आदि।

प्रश्न 121. व्यापार–कारोबार की भाषा की एक विशेषता लिखिए।

उत्तर–इसमें कारोबार से संबंधित शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 122. खोजी पत्रकारिता से क्या आशय है ?

उत्तर–भ्रष्टाचार, अनियमितता, गड़बड़ी आदि को उजागर करने वाली पत्रकारिता।

प्रश्न 123. मुद्रित माध्यम में लेखक को क्या ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर–मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा–ज्ञान के साथ–साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावा उन्हें पाठकों की रुचियों और जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

प्रश्न 124. 'उलटा पिरामिड' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'उल्टा पिरामिड' समाचारों का ढाँचा है, जिसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है।

प्रश्न 125. वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किस भारतीय वेबसाइट को जाता है ?

उत्तर–तहलका डॉटकॉम।

प्रश्न 126. मुद्रण माध्यम (प्रिंट मीडिया) के अंतर्गत आने वाले दो माध्यमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–(i) समाचारपत्र, (ii) पत्र–पत्रिकाएँ।

प्रश्न 127 फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज का क्या आशय है ?

उत्तर–कोई भी बड़ी खबर कम शब्दों में और खबरों को रोककर सबसे पहले दर्शक तक पहुँचाना है।

प्रश्न 128. संचार माध्यमों में रेडियो क्या है ?

उत्तर–रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है।

प्रश्न 129. रेडियो समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर- रेडियो समाचार की भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का भी प्रयोग किया गया हो।

प्रश्न 130. पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं ?

उत्तर-अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

प्रश्न 131. फीचर के अंत में क्या होना चाहिए?

उत्तर-फीचर के अंत में उनकी भविष्य की योजनाओं पर फोकस करना चाहिए।

प्रश्न 132 'इन-डेप्थ' रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर-'इन-डेप्थ' रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है।

प्रश्न 133. संपादकीय लेखन क्या होता है ?

उत्तर-संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना, समस्या, या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं।

प्रश्न 134. अखबारों में किस तरह के लेख होते हैं ?

उत्तर-अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचारपूर्ण लेखन से उस अखबार की छवि बनती है। अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियाँ विचारपरक पत्रकारीय लेखन की श्रेणी में आते हैं।

प्रश्न 135 स्तंभ लेखन क्या होता है ?

उत्तर-स्तंभ लेखन भी विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है।

प्रश्न 136. लिखित और मौखिक भाषा में क्या अंतर है ?

उत्तर-लिखित और मौखिक भाषा में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि लिखित भाषा अनुशासन की माँग करती है। मौखिक भाषा में एक स्वत: स्फूर्तता होती है।

प्रश्न 137. संपादक के नाम पाठक के पत्र कहाँ प्रकाशित होते हैं ?

उत्तर–अखबारों के संपादकीय पृष्ठ पर और पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम पाठकों के पत्र भी प्रकाशित होते हैं। सभी अखबारों में यह एक स्थायी स्तंभ होता है। यह पाठकों का अपना स्तंभ होता है। इस स्तंभ के जरिए अखबार के पाठक न सिर्फ विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं बल्कि जन समस्याओं को भी उठाते हैं।

प्रश्न 138 लेख लिखने वालों को किस प्रकार शुरुआत करनी चाहिए?

उत्तर–लेख की कोई एक निश्चित शैली नहीं होती और हर एक लेखक की अपनी शैली होती है। लेकिन अगर अखबारों और पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना चाहते हैं तो शुरुआत उन विषयों के साथ करना चाहिए जिस पर आपकी अच्छी पकड़ और जानकारी हो।

प्रश्न 139. टी.वी. और रेडियो पर विशेष लेखन के लिए क्या प्रबंध होता है?

उत्तर–अधिकतर समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी.वी. और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है।

प्रश्न 140. भारत का पहला छापाखाना किसने खोला था ?

उत्तर– भारत में पहला छापाखाना मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।

प्रश्न 141. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना कौन-सा माध्यम है ?

उत्तर–प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है।

प्रश्न 142. अखबार और पत्रिका के लिए लेखक और पत्रकारों को किन-किन बातों को याद रखना चाहिए ?

उत्तर–अखबार और पत्रिका के लिए लेखक और पत्रकार को यह हमेशा याद रखना चाहिए कि वह ऐसे विशाल समुदाय के लिए लिख रहा है, जिसमें एक विश्वविद्यालय के कुलपति सरीखे विद्वान से लेकर कम पढ़े-लिखे मजदूर और किसान सभी शामिल हैं।

प्रश्न 143 अखबार में समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं ?

उत्तर–अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। इस समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ में उससे कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

प्रश्न 144. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर–पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं–पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर या स्वतंत्र। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है जबकि अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार है।

प्रश्न 145. पत्रकारीय लेखन में कैसी भाषा का प्रयोग किया जाता है ?

उत्तर–पत्रकारीय लेखन में आलंकारिक–संस्कृतनिष्ठ भाषा शैली के बजाय आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। पाठकों को ध्यान में रखकर ही अखबारों में सीधी, सरल, साफ–सुथरी लेकिन प्रभावी भाषा के इस्तेमाल पर जोर दिया जाता है।

प्रश्न 146. फीचर की भाषा किस प्रकार की होती है ?

उत्तर–फीचर की भाषा में समाचारों की सपाटबयानी नहीं चलती। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि फीचर की भाषा और शैली को आलंकारिक और दुरूह बना दिया जाए।

प्रश्न 147. सफल साक्षात्कार के लिए क्या जरूरी है ?

उत्तर–एक अच्छे और सफल साक्षात्कार के लिए यह जरूरी है कि आप जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने जा रहे हैं, उसके बारे में आपके पास पर्याप्त जानकारी हो।

प्रश्न 148. एंकर बाइट से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–टी.वी. पत्रकारिता में बाइट का काफी महत्त्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

प्रश्न 149. इंटरनेट और पत्रकारिता में क्या संबंध है ?

उत्तर–इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान–प्रदान का बेहतरीन औजार है, वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी जरिया बन गया है। इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं। पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर इस्तेमाल यानी खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग होता है। दूसरा, रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक ईमेल के जरिए भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है।

प्रश्न 150. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता कब से शुरू हुई ?

उत्तर- भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी तीसरा दौर चल रहा है। भारत में इसका पहला दौर 1982-1992 से शुरू माना जा, सकता है जबकि दूसरा दौर 1993-2001 से शुरू हुआ। तीसरा दौर-2002 से अब तक माना जाता है।

प्रश्न 151. लाइव किसे कहते हैं ?

उत्तर-लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी.वी. चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जाएँ ।

प्रश्न 152. हिंदी की वेब पत्रकारिता की क्या समस्या है ?

उत्तर-हिंदी की वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फौंट की है। डायनमिक फौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं।

प्रश्न 153. एंकर-पैकेज से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-एंकर-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का जरिया है। इसमें संबधिंत घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट एवं ग्राफिक के जरिये जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं।

प्रश्न 154 खोजी रिपोर्ट (Investigative Report) क्या होती है ? इसका इस्तेमाल कब किया जाता है ?

उत्तर-खोजी रिपोर्ट में किसी विषय की गहराई से छान-बीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाया जाता है जिन्हें पहले दबाने या छुपाने का प्रयास किया गया हो। इस रिपोर्ट का इस्तेमाल प्राय: सार्वजनिक महत्त्व के मामलों में भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

प्रश्न 155. भारत में समाचार-पत्रकारिता का प्रारंभ कब और किससे हुआ ?

उत्तर-भारत में समाचार पत्रकारिता का प्रारंभ 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गजट' से हुआ।

प्रश्न 156. हिंदी में समाचार प्रसारण करने वाले किन्ही दो टी.वी. चैनलों के नाम लिखिए ?

उत्तर-आई.बी.एन-7, आजतक।

प्रश्न 157. टेलीविजन को जनसंचार का सबसे लोकप्रिय माध्यम क्यों कहा गया है ?

उत्तर–टेलीविजन को जनसंचार का सबसे लोकप्रिय माध्यम इसलिए कहा गया है क्योंकि यह सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की आवश्यकताओं को प्रभावशाली ढंग से पूरा करता है। यह सचित्र होने के कारण विश्वसनीय माना जाता है।

प्रश्न 158. ऐसे किन्हीं दो हिंदी के समाचारपत्रों के नाम लिखिए जिनके इंटरनेट संस्करण भी उपलब्ध हैं ?

उत्तर–(1) नवभारत टाइम्स (2) हिंदुस्तान।

प्रश्न 159. इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय क्यों है ?

उत्तर–इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय इसलिए है क्योंकि यह सबसे तीव्र एवं सटीक माध्यम है। इसे किसी भी समय और स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है।

प्रश्न 160. विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रहीं भारत की किन्हीं दो संस्थाओं के नाम लिखिए।

उत्तर–(1) डिफेंस रिसर्च एंड डेवलेपमेंट ऑर्गनाइजेशन

(2) सेंट्रल स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन।

प्रश्न 161. भारत में नियमित अपडेटेट साइटों के नाम लिखिए।

उत्तर–(1) एन.डी.टी.वी. (2) द टाइम्स ऑफ इंडिया

प्रश्न 162. किन्हीं दो समाचारपत्रें के नाम बताइए जिनके वेब संस्करण भी उपलब्ध हैं ?

उत्तर–(1) दैनिक जागरण (2) अमर उजाला

प्रश्न 163. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है ?

उत्तर–इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान–प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है।

प्रश्न 164. ड्राई एंकर कौन होता है ?

उत्तर–ड्राई एंकर वह होता है जो समाचार के दृश्य नहीं आने तक दर्शकों को रिपोर्ट से मिली जानकारी के आधार पर समाचार से संबंधित सूचना देता है।

प्रश्न 165. पर्यावरण से संबंधित पत्रिकाओं के नाम लिखिए ?

उत्तर–डाउन टू अर्थ, नेशनल ज्योग्राफी।

प्रश्न 166. नई वेबभाषा को क्या कहते हैं ?

उत्तर–नई वेबभाषा को 'एच.टी.एम.एल.' अर्थात्, हाइपर टेक्स्ट मार्क्डअप लैंग्वेज' कहते हैं।

प्रश्न 167. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर होती है ?

उत्तर–उल्टा पिरामिड शैली पर।

प्रश्न 168. 'संपादक के नाम पत्र' स्तंभ की क्या उपयोगिता है ?

उत्तर–इस स्तंभ में पाठक विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। वे इनमें जन समस्याओं को उठाते हैं। नए लेखकों को अच्छा अवसर मिलता है।

प्रश्न 169. जनसंचार के मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

उत्तर–मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनका रिकार्ड रखा जा सकता है।

प्रश्न 170. अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है ?

उत्तर–अंशकालिक संवाददाता उसे कहा जाता है जो कुछ समय के लिए ही किसी समाचारपत्र के लिए काम करता है।

प्रश्न 171. पीत पत्रकारिता को परिभाषित कीजिए।

उत्तर–पीत पत्रकारिता में सनसनीखेज घटनाओं को उभारा जाता है। इसका उपयोग प्रायः किसी का चरित्र–हनन करने के लिए किया जाता है। उसे पेज थ्री पत्रकारिता भी कहा जाता है।

प्रश्न 172. इंटरनेट क्या है ?

उत्तर–इंटरनेट अंतरक्रियात्मक और सूचनाओं का विशाल भंडार है।

प्रश्न 173. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है ?

उत्तर–जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम है।

प्रश्न 174. बाइट किसे कहते हैं ?

उत्तर–बाइट कथन को कहते हैं। दूरदर्शन पर किसी खबर की पुष्टि के लिए बाइट दिखाई जाती है।

प्रश्न 175. इंटरनेट पत्रकारिता को अन्य किन–किन नामों से पुकारा जाता है ?

उत्तर–इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता और वेब पत्रकारिता के नामों से पुकारा जाता है।

प्रश्न 176. फीचर के साथ क्या–क्या होना जरूरी है ?

उत्तर–फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि का होना जरूरी है।

प्रश्न 177. संपादकीय को क्या माना जाता है ?

उत्तर–संपादकीय को अखबार की आवाज माना जाता है।

प्रश्न 178. संचार प्रक्रिया की शुरुआत कहाँ से होती है ?

उत्तर–संचार प्रक्रिया की शुरुआत स्रोत या संचारक से होती है।

प्रश्न 179 संचार प्रक्रिया में फीडबैक किसे कहते हैं ?

उत्तर–संचार प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता संदेश मिलने पर जो प्रतिक्रिया देता है उसे फीडबैक कहते हैं।

प्रश्न 180. नॉयज (शोर) किसे कहते हैं ?

उत्तर–संचार प्रक्रिया में आनी वाली बाधाओं को शोर या नॉयज कहते हैं।

प्रश्न 181. जनसंचार के दो प्रमुख कार्य बताइए।

उत्तर–दो प्रमुख कार्य हैं –

(1) सूचना देना, (2) शिक्षित करना।

प्रश्न 182. आकाशवाणी कितनी भाषाओं व बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है?

उत्तर–आकाशवाणी 24 भाषाओं और 146 बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 183 भारत में दूरदर्शन के क्या उद्देश्य होने चाहिए ?

उत्तर– • सामाजिक परिवर्तन • राष्ट्रीय एकता • वैज्ञानिक चेतना का विकास

• पर्यावरण संरक्षण मनोरंजन • सामाजिक विकास

प्रश्न 184. समाचार क्या है ?

उत्तर–समाचार किसी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

प्रश्न 185. समाचार के चार प्रमुख तत्त्व बताइए।

उत्तर–• नवीनता • प्रभाव • जनरुचि • अनोखापन।

प्रश्न 186. जनसंचार माध्यम में द्वारपाल की भूमिका का निर्वाह कौन करता है ?

उत्तर–संपादक, सहायक संपादक, समाचार संपादक, मुख्य उपसंपादक और उपसंपादक द्वारपाल की भूमिका का निर्वाह करते है।

प्रश्न 187. संपादन के प्रमुख सिद्वांत बताइए।

उत्तर– • तथ्यों की शुद्वता • वस्तुपरकता • निष्पक्षता • संतुलन • स्रोत।

प्रश्न 188. एडवोकेसी पत्रकारिता किसे कहा जाता है ?

उत्तर–जब कोई अखबार किसी खास विचारधारा या खास उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर उसके पक्ष में जनमत जगाने का अभियान चलाता है तब उसे एडवोकेसी पत्रकारिता कहा जाता है।

प्रश्न 189. मुद्रित माध्यम में पत्रकार को किस बात को ध्यान में रखना पड़ता है ?

उत्तर–मुद्रित माध्यम में पत्रकार को इस बात को ध्यान में रखना पड़ता है कि आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्वियों को दूर कर लिया जाए।

प्रश्न 190. टी.वी. के लिए खबर लेखन की बुनियादी शर्त क्या है ?

उत्तर–टी.वी. के लिए बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन की है।

प्रश्न 191. विशेष लेखन के चार क्षेत्र बताइए।

उत्तर– • खेल • कृषि • विदेश • शिक्षा–स्वास्थ्य।

प्रश्न 192. छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसे जाता है ?

उत्तर–छापेखाने के आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है।

प्रश्न 193. रेडियो में अखबार वाली क्या सुविधा नहीं है ?

उत्तर–रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है।

प्रश्न 194. प्रिंट माध्यम से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर–प्रिंट माध्यम से तात्पर्य है–अखबार, पत्रिकाएँ, और पुस्तकें। इन्हें प्रिंट किया या छापा जाता है। इनमें स्थायित्व होता है।

प्रश्न 195. विज्ञापन के दो उदेश्य लिखिए?

उत्तर–1. अपने उत्पाद की विशेषताएं बताना।

2. लोगों का ध्यान आकर्षित कर वस्तु की बिक्री बढ़ाना।

प्रश्न 196. दैनिक पत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–नियमित रूप से प्रतिदिन प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र दैनिक पत्र कहलाता है।

प्रश्न 197. साप्ताहिक पत्र से आप क्या समझते है?

उत्तर– सप्ताह में एक बार प्रकाशित होने वाला पत्र साप्ताहिक पत्र कहलाता है।

प्रश्न 198. पाक्षिक पत्र से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–15 दिन में एक बार प्रकाशित होने वाले पत्र को पाक्षिक कहा जाता है।

प्रश्न 199. समाचार में डेडलाइन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–किसी भी समाचार को एक समय सीमा के अंतर्गत ही प्रकाशित किया जाता है, यही डेड लाइन कहलाती है।

प्रश्न 200. निबंध-लेखन में किस शैली का प्रयोग वर्जित है?

उत्तर–''मैं'' शैली का।

अपठित गद्यांश

गद्यांश 1

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

भारतवर्ष के हजारों वर्षों के गौरवशाली इतिहास से यदि' बुद्ध पूर्णिमा' का दिन हटा दिया जाए तो शायद ये दुनिया हमें विश्व गुरू मानने में संकोच करने लगेगी । यह वह धरती है, जहाँ राम, कृष्ण जैसे अवतार और महावीर, आदि शंकराचार्य जैसे युगपुरूष जन्में हैं, लेकिन आज से करीब ढाई हजार साल पहले इस धरती पर उस सूर्य का उदय हुआ था, जिसने हमेशा-हमेशा के लिए मानवता की राहें आलोकित कर दी। एक बुद्ध न होते तो हमारी सनातन संपदा अधूरी रह जाती। हम आध्यात्मिकता के उस शिखर की झलक कभी न पाते, जहाँ पहुँचकर हम विश्व गुरू कहलाए। बुद्ध ईसा से 563 वर्ष पूर्व हुए थे, लेकिन उनकी बातें आज के दौर की हैं । बुद्ध का सबसे बड़ा रहस्य यही है कि वे ढाई हजार साल पहले जो बोल चुके हैं, वो सूत्र, उसकी भाषा, समसामयिक है। ओशो बुद्ध को दुनिया का एकमात्र 'धर्म-वैज्ञानिक' मानते थे, क्योंकि बुद्ध ने धर्म को तर्क से परे कभी नहीं माना । बुद्ध का मूल यही है कि, 'मैं तुम्हें सिर्फ मार्ग दिखा सकता हूँ, गंतव्य तुम्हें स्वयं खोजना होगा।' आपने कभी विचार किया है कि शाक्य वंश के राजकुमार 'सिद्धार्थ' गौतब बुद्ध बने क्यों ? क्योंकि वह दुख स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, वह दुख की जड़ों तक पहुंचकर उसे हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहते थे । उन्होंने ऐसा किया भी और ऐसा करने का मार्ग भी बताया। जबतक हम सुखों के पीछे अंधों की तरह भागेंगे, दुख भी हमारा पीछा करते रहेंगे। सुख और दुख साथ आते हैं। जैसे सिक्के को तोड़कर उसके दो पहलू अलग नहीं किए जा सकते, वैसे ही यह असंभव है कि सुख और दुःख अलग कर दिए जाएं । समदर्शी होना पड़ेगा, दोनों को एक नजर से देखना पड़ेगा, तभी हम इस अंधी दौड़ से मुक्त हो पाएंगें । एक दिन भगवान बुद्ध के दर्शन करने के लिए एक नगर सेठ आया । बड़ा धन कुबेर । तमाम हाथी-घोड़े सेवक-सेविकाओं के साथ भगवान के पास पहुंचा । दर्शन किए और जाते - जाते उसने भगवान से कहा,' आप बुद्ध हैं, मुझे बड़ा दुःख होता है जब मैं आपको मिट्टी के पात्र में भिक्षा माँगते हुए देखता हूँ। मैं आपके लिए सोने का भिक्षा-पात्र लाया हूँ , कृपा करके इसे स्वीकार करें ।' भगवान ने मुस्कराकर कहा,'ठीक है, रख दो ।' ये बात भगवान बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद को अच्छी नहीं लगी । सेठ के जाते ही आनंद कहने लगे,' भगवान, ये आपने क्या किया ? आप सोने-चांदी का मोह त्याग नहीं पाए ? आपने सोने का भिक्षा पात्र स्वीकार कर लिया । मैं बड़ा निराश हूँ, क्या सोचता था आपके बारे में और आप क्या निकले !'भगवान ने आनंद को पास बुलाया और कहा,'आनंद, सोने और मिट्टी के अंतर पर तुम रूके हुए हो मैं तो कब का उसके पार जा चुका हूँ । मूझे तो सिर्फ भिक्षा पात्र चाहिए, वो किस धातु का बना हैं, मुझे इससे क्या?' आनंद ने कहा,'यदि आपको कोई फर्क नहीं पड़ता, तो आपको सोना ठुकरा देना चाहिए था। भगवान ने उत्तर दिया,'यदि मैं सोना ठुकरा देता, तो इसका एक ही अर्थ था मैं अब तक सोने और मिट्टी का अंतर भुला नहीं पाया, अब तक मेरी आँखों ने समदर्शी होना नहीं सीखा ।

प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष सही, पर माया ने अब तक मुझे जकड़ रखा है ।' कितनी बड़ी बात बात कह दी भगवान बुद्ध ने । अगर हम अपने दिए हुए दान को दान माते हैं, तो सच्चे दानी नहीं हैं, अपने किए हुए परोपकार को परोपकार मानते हैं, तो अभी हमारे पूण्र परोपकारी होने में कुछ कमी है। जिस दिन हमारा अस्तित्व ही दानमय हो गया, हमारा व्यक्तित्व ही परोपकारी हो गया, उस दिन हम जो दें वही दान है, जो करें वही परोपकार है । हम दानी और परोपकारी होने के अंहकार से सदा के लिए मुक्त हो जाएंगे ।

1. वह कौन सी घटना थी जिस दिन मानवता का आलोक प्रकाशित हुआ था ?

(क) बुद्ध का जन्म

(ख) बुद्ध का महानिर्वाण

(ग) बुद्ध का महाप्रस्थान

(घ) उपर्युक्त सभी

2. भारत को विश्व गुरू मानने का क्या कारण है ?

(क) भारत की प्राकृतिक सुंदरता

(ख) भारत की अर्थव्यवस्था

(ग) भारत की आध्यात्मिक परंपरा

(घ) भारत की शिक्षा प्रणाली

3. बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क में क्या संबंध है ?

(क) धर्म और तर्क एक दूसरे के विपरीत हैं ।

(ख) धर्म और तर्क एक दूसरे के सहयोगी हैं ।

(ग) धर्म और तर्क में किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है ।

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. 'तभी हम इस अंधी दौड़ से मुक्त हो पाएंगे।' इस पंक्ति में ' इस अंधी दौड़ ' से लेखक का क्या आशय है ?

(क) सुखों के पीछे भागना

(ख) दुख के पीछे भागना

(ग) दुख के कारणों के पीछे भागना

(घ) समदर्शी होना

5. भगवान बुद्ध ने सोने का भिक्षा पात्र क्यों स्वीकार कर लिया ?

(क) भिक्षा पात्र के सोने के धातु से बने होने के कारण

(ख) पेट की भूख के कारण

(ग) मिट्टी और सोने की तुलना में सोने का मुल्य अधिक होने के कारण

(घ) समदर्शी होने के कारण

6. भगवान बुद्ध के अनुसार सच्चे दानी और परोपकारी की क्या विशेषाएँ हैं ?

(क) अपने दिए हुए दान और परोपकार को याद करना

(ख) परोपकार कर अथवा दान देकर भूल जाना

(ग) दानी और परोपकारी व्यक्ति के साथ रहना

(घ) उपर्युक्त सभी

7. ओशो द्वारा बुद्ध को संसार का एकमात्र धर्म वैज्ञानिक मानने का क्या कारण है ?

(क) धर्म ओर तर्क एक दूसरे के विपरीत हैं ।

(ख) बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क एक दूसरे से परे नहीं हैं ।

(ग) बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क एक दूसरे से परे हैं ।

(घ) बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क एक दूसरे के पर्यायवाची हैं ।

8. 'परोपकार ' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द को अलग कीजिए –

(क) परो (उपसर्ग) और पकार (मूल शब्द)

(ख)पर (उपसर्ग) और पकार (मूल शब्द)

(ग) पर (उपसर्ग) और उपकार (मूल शब्द)

(घ) परोप (उपसर्ग) और कार (मूल शब्द)

9. लेखक ने दान और परोपकार के साथ अहंकार की बात क्यों की है ?

(क)दान और परोपकार के साथ अहंकार का कोई संबंध नहीं है ।

(ख) लेखक के लिखने की इच्छा मात्र से ।

(ग) दान ओर परोपकार हमेशा अहंकार को जन्म देते हैं ।

(घ) व्यक्ति अंहकारी होते ही दानी अथवा परोपकारी हो जाता है।

10. गद्यांश में समदर्शी होने के क्या लक्षण बताए गए हैं ?

(क) विशेष और सामान्य दोनों को एक दृष्टि से देखना

(ख) सोने और मिट्टी में अंतर कर पाना

(ग) व्यक्ति का दानी और परोपकारी बन जाना

(घ) व्यक्ति का अहंकारी बन जाना

गद्यांश 2

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

महिलाओं को दूसरों की प्राथमिकताओं के आधार पर खुद को ढालना सिखाया जाता है और पुरूषों को नेतृत्व करना सिखाया जाता है क्योंकि दिन के अंत में , महिलाओं को घर के कामों का प्रबंधन करना पड़ता है जबकि पुरूष नायक होते हैं जो अपने परिवार को बचाते हैं और उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। यह भारत में सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता है और इसका एक कारण महिलाओं को समाज में बुनियादी अधिकार से वंचित करना है। एक महिला को अपने घरेलू मामलों में भी अपनी राय रखने के अधिकार से वंचित किया जाता है, राजनीतिक या वित्तीय दृष्टिकोण बहुत पीछे हैं । महिलाएँ जन्मजात नेत्री होती हैं और अगर उन्हें मौका दिया जाए तो वे हर क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर सकती हैं। हम एक पुरूष प्रधान समाज में रहते है जहाँ एक पुरूष को वह करने का पूरा अधिकार है जो वह चाहता है । सदियों से, महिलाओं को पुरूषों के सामने खाने या अन्य पुरूषों के सामने बैठने की अनुमति नहीं थी । लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण विश्व स्तर पर एक प्रमुख चिंता का विषय है। लैंगिक समानता दोनों लिंगों को समान शिक्षा और समान संसाधन प्रदान करने से शुरू होती हैं । बालिकाओं की शिक्षा हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए न कि केवल एक विकल्प। एक शिक्षित महिला अपने और अपने आसपास के लोगों के लिए बेहतर जीवन का निर्माण करने में सक्षम होगी । समाज में महिलाओं के विकास के लिए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण आवश्यक है । महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक महिला को शिक्षा प्राप्त करने , पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त करने और जागरूकता फैलाने का अवसर मिले । हालांकि, लैंगिक समानता सुनिश्चित करेगी कि संसाधनों तक पहुँच दोनों लिंगों को समान रूप से प्रदान की जाए और समान भागीदारी सुनिश्चित की जाए । यहाँ तक कि पेशेवर स्तर पर भी महिलाओं को लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ता है क्योंकि नियुक्तियों में एक पुरूष उम्मीदवार को महिला उम्मीदवार की अपेक्षा अधिक तरजीह दी जाती है । अब मानसिकता बदलनी चाहिए और महिला–पुरूष की परवाह न करते हुए योग्य उम्मीदवारों की ही नियुक्ति की जानी चाहिए । लैंगिक समानता सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और सभी के लिए बुनियादी मानवाधिकार सुनिश्चित करता है।

1. भारत में महिलाओं को समाज में बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित करने का क्या कारण है ?

(क) भारत में पुरूष प्रधान समाज का वर्चस्व

(ख) पुरूषों का महिलाओं से अधिक शक्तिशाली होना

(ग) पुरूषों की स्वार्थपरता

(घ) महिलाओं को पुरूषों से कमतर समझना

2. लैंगिक समानता की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं ?

(क) स्त्री–पुरूष दोनों को समान रूप से शिक्षा और संसाधन प्रदान करना

(ख) स्त्री की अपेक्षा पुरूष को समान रूप से शिक्षा और समान संसाधन प्रदान करना

(ग) पुरूषों की अपेक्षा स्त्री को समान रूप से शिक्षा और समान संसाधन प्रदान करना

(घ) स्त्री–पुरूष दोनों को अलग–अलग शिक्षा और संसाधन प्रदान करना

3. आज विश्व स्तर पर चिंता का एक प्रमुख विषय क्या है?

(क) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण

(ख) लैंगिक असमानता और महिलाओं की स्थिति

(ग) लैंगिक असमानता और पुरूष सशक्तिकरण

(घ) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण

4.पेशेवर स्तर पर महिलाओं को लैंगिक असमानता का सामना किस प्रकार करना पड़ता है ?

(क) पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं को अधिक छुट्टी देकर ।

(ख) पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं से अधिक काम लिया जाता है ।

(ग) महिला उम्मिदवार को पुरूष उम्मीदवार की अपेक्षा अधिक तरजीह दी जाती है ।

(घ) पुरूष उम्मीदवार को महिला उम्मीदवार की अपेक्षा अधिक तरजीह दी जाती है ।

5. सतत विकास की आवश्यकता को कैसे पूरा किया जा सकता है ?

(क) लैंगिक समानता से

(ख) महिला सशक्तिकरण से

(ग) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण दोनों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

6. महिलाओं को यदि मौका मिले तो वे क्या कर सकती हैं ?

(क) समाज का नेतृत्व

(ख) उत्कृष्ट वैज्ञानिक

(ग) देश की रक्षा

(घ) उपर्युक्त सभी

7. आज लैंगिक समानता की बात करना क्यों जरूरी है ?

(क) महिलाओं के विकास के लिए।

(ख) महिलाओं के बुनियादी अधिकारों के लिए।

(ग) देश के सतत विकास के लिए।

(घ) उपर्युक्त सभी।

8. आज हमारी प्राथमिकता क्या होनी चाहिए ?

(क) सभी के लिए घर

(ख) पर्यावरण सुरक्षा

(ग) आर्थिक प्रगति

(घ) बेटियों की शिक्षा

9. महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों को नेतृत्व करना क्यों सिखाया जाता है ?

(क) भारतीय समाज के प्रगतिवादी विचारों के कारण

(ख) पुरूषों में महिलाओं की अपेक्षा अधिक शारिरिक बल होने के कारण

(ग) महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व का गुण होने के कारण

(घ) भारतीय समाज के रूढ़िवादी विचारों के कारण

10. 'सशक्तिकरण ' शब्द में मूल शब्द?

(क) सशक्ति

(ख) शक्ति

(ग) करण

(घ) सश

गद्यांश 3

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

अफवाहों के दौर में शांत रहना बड़ी कठिन समस्या है । झुठी बातों को सुनकर चुप हो कर रहना भी भले आदमी की चाल है, परंतु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन-मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते । जरा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरूद्ध जहरीला वातावरण तैयार हो जाएगा । आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बाते बड़ी तेजी से फैल जाती हैं । समाचारों के शीघ्र आदान-प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं, जबकि धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के लिए सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्लभ हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खरतनाक हो गया है । हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा-फंसाद और टंटे को पसंद नहीं करती, परन्तु इतनी तेजी से कुटनीति ओर मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते । अगर लाखों-करोड़ो की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा । हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें जरूर कुछ करना पड़ेगा । हमारे अंदर हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा सहा जाना भी नहीं चाहिए । सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फसादों में नहीं पड़ते । राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं ।

यह स्वार्थी का संघर्ष है । करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन–मरण का भार जिन्होनें उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते । उन्हें स्वार्थ के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

1. लेखक ने कठिन समस्या किसे माना है ?
(क) अफवाहों के दौर में शांत रहना
(ख) अफवाहों के दौर में चंचल रहना
(ग) संघर्ष के दौर में शांत रहना
(घ) संघर्ष के दौर में चंचल रहना
2. राजनीति अफवाहों के जरिए क्या करवाती है ?
(क) लाभ
(ख) दंगे
(ग) उत्सव
(घ) पर्व
3. आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है ?
(क) भलाई के साधनों को
(ख) गलत बातों का प्रचार–प्रसार
(ग) सही बातों का प्रचार–प्रसार
(घ) राजनीति को
4. चुप रहना खतरनाक कब हो जाता है ?
(क) जब गलत प्रचार होता है ।
(ख) जब सही प्रचार होता है ।
(ग) जब सही–गलत प्रचार होता है ।
(घ) जब भलाई का प्रचार होता है ।
5. लेखक ने संघर्ष करना आवश्यक क्यों माना है ?
(क) जन के लाभ से बचने के लिए
(ख) जन की हानि से बचने के लिए
(ग) स्वार्थ को दूर करने के लिए
(घ) परहित को दूर करने के लिए
6. हमारा सारा साहितय किसका साहित्य है ?
(क) केवल नीति का

(ख) केवल सच्चाई का

(ग) नीति और सच्चाई का

(घ) प्रबलता का

7. कौन –से साधन अब भी दुर्लभ हैं?

(क) मनुष्य की भलाई को सोचने के

(ख) मनुष्य के स्वार्थ को सोचने के

(ग) मनुष्य क अहित को सोचने के

(घ) दूसरों के विवाद को सोचने के

8. हम किस पर दृढ़ रहते हैं ?

(क) केवल सच्चाई पर

(ख) केवल भद्रता पर

(ग) सच्चाई और भद्रता पर

(घ) केवल नीति पर

9. आदान–प्रदान में प्रयुक्त समास है ?

(क) कर्मधारय समास

(ख) द्वंद्व समास

(ग) द्विगु समास

(घ) तत्पुरूष समास

10. गद्यांश के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक होगा ?

(क) अन्याय का प्रतिकार

(ख) न्याय का प्रतिकार

(ग) सत्य का प्रतिकार

(घ) अंहिसा का प्रतिकार

गद्यांश 4

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

समाज तथा राष्ट्र के संदर्भ में कुछ तत्व ऐसे होते हैं जो मनुष्य के जीवन मूल्यों से जुड़े होते हैं । व्यक्ति की स्वाधीनता भी ऐसा ही एक तत्व है । किसी भी राष्ट्र अथवा व्यक्ति को सदा के लिए पराधीनता की बेड़ियों में नहीं बांधा जा सकता । पराधीनता की इन बेड़ियों को काटने के लिए स्वाधीनता की प्रबल भावना के कारण जन आंदोलन का जन्म लेना भी स्वाभाविक ही था । भारतवर्ष में 19वीं शताब्दी के आरंभ से ही विभिन्न आंदोलन विकसित हुए जिनका एकमात्र उदेश्य सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विषमताओं तथा ब्रिटिश पराधीनता से व्यक्ति को मुक्त करवाना था । देश के प्रत्येक नागरिक ने उस आंदोलन में अपना सर्वस्व अर्पण किया था । देश का साहित्यकार भी इस संघर्ष में किसी से पीछे न था। भारत में स्वाधीनता संग्राम का इतिहास उतना ही पुराना है जितना हमारी परतंत्रता का इतिहास। यह देश 1000 वर्ष से भी अधिक समय तक गुलाम रहा , परन्तु इसका सांस्कृतिक स्वरूप अक्षुण्ण बना रहा। भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता न होकर सांस्कृतिक एकता रही है । व्यापारी बनकर आए अंग्रेजों ने यहाँ की राजनीतिक अव्यवस्था का लाभ उठाया तथा शासक की गद्दी पर बैठ गए। भारतीय औद्योगिक विकास को रोकना, यहाँ के व्यापार और लघु उद्योगों को नष्ट करना अंग्रेजी रणनीति का हिस्सा था । पहली बार इस देश के इतिहास में अंग्रेज के रूप मेंएक ऐसा शासक आया था, जो राजस्व लेता था । 19वीं शताब्दी तक आते-आते अंग्रेजों का शोषणकारी भयावह रूप सामने आया । अंग्रेजों का विरोधा तो 1760 में ही प्रारंभ हो गया था जब मीर कासिम के नेतृत्व में मुर्शिदाबाद के बुनकरों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की अत्याचारों के विरूद्व विद्रोह किया था । मैसूर में टीपू सुल्तान और कर्नाटक में कित्तूर की राजकुमारी ने विद्रोह किया । 1773 में हजारों किसान अंग्रेजों के विरोध में खड़े हो गए । बहावी विद्रोह तथा मराठा प्रतिरोध भी इसी श्रेणी में हुआ । परन्तु सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में जगह-जगह हो रहे इस जनाक्रोश को पूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त हुई । 29 मार्च 1857 को मेरठ छावनी में मंगल पांडे का विद्रोह, अवध की बेगम जीनत महल, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब, तत्या टोपे जेसे योद्धाओं के नेतृत्व में आम जनता ने अंग्रेजों के विरूद्ध आवाज उठाई । 10 मई, 1857 की प्रथम स्वाधीनता क्रान्ति का परिणाम यह हुआ कि भारत का शासन सीधे रानी विक्टोरिया से संभाल लिया और सुधारों की प्रक्रिया प्रारंभ हुई । सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना । बंग भंग के दौरान अंग्रेजों का विरोध, गांधीवाद, क्रान्तिकारी आंदोलन, नवजागरण आदि धारणाएं प्रथम स्वाधीनता संग्राम के प्रभाव स्वरूप जन्मी । वहीं तमाम साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत के स्वर्णिम अतीत में आस्था जगाकर राष्ट्रप्रेम की भावना को बढ़ाया ।

1. मनुष्य के जीवन-मूल्यों में अन्तर्निहित सबसे महत्वपूर्ण जीवन-मूल्य क्या है ?
2. किस भावना के कारण कोई आंदोलन जन-आंदोलन का रूप ले लेता है ?
3. ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना किन उद्देश्यों को लेकर हुई थी ?

5. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सामूहिक जल-प्रतिरोध को अभिव्यक्त करने वाला आंदोलन कौन-सा था ?

6. 1857 की प्रथम स्वाधीनता क्रान्ति का परिणाम क्या हुआ ?

7. प्रथम स्वाधीनता संग्राम के प्रभाव स्वरूप भारत में किस प्रकार के वैचारिक परिवर्तन हुए ?

8. भारत में अंग्रेजों की रणनीति का हिस्सा क्या था ?

9. साहित्यकारों ने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी भूमिका का निर्वाह किस प्रकार किया ?

10. सांस्कृतिक शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय क्या हैं ?

गद्यांश 5

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

पर्यावरण संपूर्ण जीव-जगत का आधार है जो आदिमकाल से इसके उद्‌भव एवं विकास में सहायक रहा है तथा भविष्य का विकास भी इसी पर निर्भर है। इसी कारण मानव पर्यावरण का निरंतर उपयोग कर अपने विकास के मार्ग को प्रशस्त करता रहता है किन्तु इसमें व्यतिक्रम उस समय आता है जब हम पर्यावरण के मूल तत्वों को नष्ट करने लगते हैं अथवा उन्हें प्रदूषित करने लगते हैं । परिणामस्वरूप पर्यावरण के घटक अपनी स्वाभाविक प्राकृतिक क्रिया करने में समर्थ नहीं रहते और पारिस्थितिक संतुलन में बाधा उत्पन्न होती है फलस्वरूप मानव को अनेक आपदाओं का सामना करना पड़ता है । न केवल मानव अपितु जीव-जन्तु, पशु-पक्षी एवं वनस्पति का अस्तित्व भी संकटपूर्ण हो जाता है। पर्यावरण के अत्यधिक शोषण से आज संपूर्ण विश्व संकट में है और यह संकट गहराता जा रहा है। यही कारण है कि आज विश्व में पर्यावरण संकट, पर्यावरण अवकर्षण, जल वायु, भुमि, शोर, रेडियोधर्मी प्रदूषण, प्राकृतिक आपदाओं का संकट जीव-जगत् के नष्ट होने का संकट ओजोन परत में छिद्र तापमान में वृद्धि आदि सभी तथ्यों पर निरंतर विचार-विमर्श हो रहा है । वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री आदि सभी पर्यावरण संकट के प्रति चेतावनी दे रहे हैं । इसमें अनेक निराशावादी दृष्टिकोण रखते हैं । उनके अनुसार यह संकट और अधिक गहरा होता जाएगा यहाँ तक कि मानव सभ्यता को भी समाप्त कर देगा। इस खतरे से इनकार नहीं किया जा सकता किंतु इससे भसभीत होने की अपेक्षा इसको समाप्त या कम करने की आवश्यकता है और इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान में जिस विचारधारा को न केवल बल मिला है अपितु इस दिशा में सर्वत्र पर्याप्त कार्य भी हो रहा है वह है - पर्यावरण प्रबंधन अर्थात पर्यावरण का उचित उपयोग, उचित प्रबंध जिससे वह अधिक से अधिक मानवोपयोगी हो तथा कम से कम प्रदूषित हो और पारिस्थितिक-चक्र सदैव चलता रहे । पर्यावरण प्रबंधन की सामान्य परिभाषा है । पर्यावरण प्रबंधन के अंतर्गत नियोजन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं उचित निर्णय द्वारा सीमित संसाधनों का उपयोग तथा प्राथमिकताओं में परिवर्तन आवश्यक है जिससे वास्तविक जीवन में वे उपयोग हो सकें । वर्तमान परिस्थितियों में पर्यावरण प्रबंधन ही एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा पर्यावरण संकट को नियंत्रित किया जा सकता है ।

1. 'पर्यावरण संपूर्ण जीव-जगत का आधार है' लेखक के इस कथन का क्या आशय है ?

2. पर्यावरण के समायोजन और शोषण के क्रम में व्यतिक्रम कब उपस्थित हो जाता है ?

3. पारिस्थितिक संतुलन से कया अभिप्राय है ?

4. आज विश्व का पर्यावरण संबंधी प्रमुख संकट क्या हैं ?

5. पर्यावरण विसंगतियों का मानव-सभ्यता पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

6. पर्यावरण के खतरों से भयभीत होने की अपेक्षा इसको समाप्त या कम करने की आवश्यकता क्यों है ?

7. पर्यावरण प्रबंधन के अंतर्गत कौन-कौन से उपाय आते है ?

8. पर्यावरण संबंधी संकट को कम अथवा समाप्त करने का एक मात्र उपाय क्या है ?

9. पर्यावरण संबंधी निराशावादी दृष्टिकोण क्या है ?

10. 'पर्यावरण ' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द को अलग कर लिखिए ?

उत्तर संकेत (गद्य खंड)

गद्यांश-1

1. क	2. ग	3. ख	4. क	5. घ	6. ख	7. ख
8. ग	9. ग	10. क				

गद्यांश-2

1. क	2. क	3. ख	4. घ	5. ग	6. घ	7. घ
8. घ	9. घ	10. ख				

गद्यांश-3

1. क	2. ख	3. ख	4. क	5. ख	6. ग	7. क
8. ग	9. ख	10. क				

गद्यांश-4

1. व्यक्ति की स्वाधीनता

2. समान सामूहिक हितों के कारण

3. भारतीय संस्कृति

4. भारत के आर्थिक शोषण हेतु

5. 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन

6. भारत का शासन सीधे रानी विक्टोरिया ने संभाल लिया और सुधारों की प्रक्रिया प्रारंभ हुई ।

7. कांग्रेस की स्थापना, बंग भंग के दौरान अंग्रेजों का विरोध, गांधीवाद, क्रातिकारी आंदोलन, नवजागरण आदि विचारों का उदय

8. भारतीय औद्योगिक विकास को रोकना, यहाँ के व्यापार और लघु उद्योगों को नष्ट करना

9. अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत के स्वर्णिम अतीत में आस्था जगाकर राष्ट्रप्रेम की भावना को बढ़ाया।

10. संस्कृति (मूल शब्द) और इक (प्रत्यय)

गद्यांश–5

1. संसार के समस्त प्राणियों का अस्तिव पर्यावरण पर ही निर्भर है।

2. जब हम पर्यावरण के मूल तत्वों को नष्ट करने लगते हैं अथवा उन्हें प्रदूषित करने लगते हैं।

3. पर्यावरण में विभिन्न प्रकार के जीव–जंतु, पौधों एवं मनुष्यों के मध्य परस्पर संबंध को ही पारिस्थितिक संतुलन कहते हैं।

4. पर्यावरण के अत्यधिक शोषण से उत्पन्न पारिस्थितिक अंसतुलन

5. न केवल मानव अपितु जीव–जंतु पशु–पक्षी एवं वनस्पति का अस्तिव भी संकटपूर्ण हो जाएगा।

6. केवल भयभीत होने से संकट समाप्त नहीं होगा बल्कि इसको कम अथवा समाप्त करने के लिए पर्यावरण प्रबंधन पर काम करना पड़ेगा।

7. नियोजन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं उचित निर्णय द्वारा सीमित संसाधनों का उपयोग तथा प्राथमिकताओं में परिवर्तन

8. पर्यावरण प्रबंधन

9. संकट और अधिक गहरा होता जाएगा यहाँ तक कि मानव सभ्यता को भी समाप्त कर देगा

10. परि (उपसर्ग) और आवरण (मूल शब्द)

अपठित पद्यांश/काव्यांश

पद्यांश 1

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए –

शांत स्निग्ध, ज्योत्स्ना उज्जवल ।
अपलक अनंत, नीरव भू–तल ।
सैकत–शय्या पर दुग्ध–घवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म–विरल,
लेटी हैं श्रान्त, क्लांत, निश्चल ।
तापस–बाला गंगा, निर्मल, शशि–मुख से दीपित मृदु–करतल,
लहरें उर पर कोमल कुंतल ।
गोरे अंगों पर सिहर–सिहर, लहराता तार–तरल सुन्दर

चंचल अंचल–सा नीलांबर ।
साड़ी की सिकुड़न–सी जिस पर , शशि की रेशमी–विभा से भर,
सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर ।
चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,
हम चले नाव लेकर सत्वर ।
सिकता की सस्मित–सीपी पर, मोती की ज्योत्सना रही विचर,
लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर ।
मृदु मंद–मंद, मंथर–मंथर, लघु तरणि, हंसिनी–सी सुन्दर
तिर रही, खोल पालों के पर ।
निश्चल–जल के शुधि–दर्पण पर, बिम्बित हो रजत–पुलिन निर्भर
दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर ।
कालाँकॉकर का राज–भवन, सोया जल में निश्चिंत, प्रमन,
पलकों में वैभव–स्वप्न सघन ।
नौका से उठती जल–हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर–छोर ।
स्फारित नयनों से निश्चल , कुछ खोज रहे चल तारक दल
ज्योतित कर नभ का अंतस्तल,
जिनके लघु दीपों को चंचल, अंचल की ओट किये अविरल
फिरतीं लहरें लुक–छिप पल पल ।
सामने शुक्र की छवि झलमल, तैरती परी–सी जल में कल,
रूपहरे कचों में ही ओझल ।
लहरों के घूँघट से झुक–झुक, दशमी का शशि निज तिर्यक्–मुख
दिखलाता, मुग्धा–सा रुक–रक ।
अब पहुँची चपला बीच धार,
छिप गया चाँदनी का कगार ।
दो बाहों –से दुरस्थ–तीर, धारा का कृश कोमल शरीर
आलिंगन करने को अधीर ।
अति दूर, क्षितिज पर विटप–माल, लगती भू–लेखा–सी अराल,
अपलक–नभ नील–नयन विशाल;
माँ के उर पर शिशु–सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
ऊर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप;

वह कौन विहग ? क्या विकल कोक, उड़ता , हरने का निज विरह-शोक ?
छाया की कोकी को विलोक ?
नौका घूमी विपरीत-धार ।
डाँड़ों के चल करतल पसार, भर-भर मुक्ताफल फेन-स्फार,
बिखराती जल में तार-हार ।
चाँदी के साँपों -सी रलमल, नॉचतीं रश्मियाँ जल में चल
रेखाओं-सी खिंच तरल-सरल
लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि, सौ-सौ उड़ झिलमिल
फैले फूले जल में फेनिल ।
अब उथला सरिता का प्रवाह, लग्गी से ले-ले सहज थाह
हम बढ़े घाट को सहोत्साह
ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार
उर में आलोकित शत विचार ।
इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उदर
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम ।
शाश्वत नभ का नीला-विकास, शाश्वत शशि का यह रजत-हास
शाश्वत लघु-लहरों का विलास ।
है जग-जीवन के कधार चिर जन्म-मरण के आर पार
शाश्वत जीवन -नौका-विहार ।
मैं भूल गया अस्तित्व-ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व-दान ।

1. प्रस्तुत काव्यांश में किसका वर्णन ?
(क) प्रकृति का
(ख) नौका विहार का
(ग) गंगा का
(घ) रात्री का

2. कवि ने किसे तपस्विनी कहा है ?
(क) गंगा को
(ख) नदी को
(ग) रात्रि को
(घ) प्रकृति को

3. 'तन्वंगी ' श्ब्द का क्या अर्थ है ?

(क) युवती

(ख) छरहरी

(ग) गंगा

(घ) नदी

4. कवि ने किसे शिशु के समान बताया है?

(क) दीपों को

(ख) पतवार को

(ग) द्वीप को

(घ) चंद्रमा को

5. माँ के उर पर शिशु-सा पंक्ति में निहित अलंकार क्या है ?

(क) अनुप्रास

(ख) रूपक

(ग) मानवीकरण

(घ) उपमा

6. कवि क्या भूल गया ?

(क) जीवनदान

(ख) अस्तित्व ज्ञान

(ग) अमरत्व ज्ञान

(घ) अमरतव दान

7. 'सिक्ता ' का अर्थ क्या है ?

(क) रेत

(ख) धरती

(ग) नदी

(घ) समुद्र

8. ज्योत्सना की कौन सी विशेषता बताई गई है ?

(क) शांत स्निग्ध

(ख) तीक्ष्ण

(ग) मलिन

(घ) मृदुल

पद्यांश 2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए -

उठो, धरा के अमर सपूतों ।
पुनः नया निर्माण करो ।
जन-जन के जीवन में फिर से
नव स्फूर्ति, नव प्राण भरो ।
नई प्रात है नई बात,
है नया किरन है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें
नई आस है, साँस नई ।
युग-युग के मुरझे सुमनों में
नई-नई मुस्कान भरों ।
उठो, धरा के अमर सपूतों ।
पुनः नया निर्माण करो ।।
डाल-डाल पर बैठ विहग
कुछ नए स्वरों में गाते हैं ।
गुन-गुन,गुन-गुन करते भौंरें
मस्त उधर मँडराते हैं ।

1. कवि ने किसका आह्वान करते हैं ?
(क) देश वासियों से
(ख) सैनिकों से
(ग) अमर सपूतों से
(घ) नेताओं से
2. काव्यांश में कवि क्या करने को कहते है ?
(क) नया निर्माण करने को
(ख) नव स्फूर्ति भरने को
(ग) नव प्राण भरने को
(घ) उपर्युक्त सभी

3. मुस्कान भरने की बात किसके लिए कही गई है?

(क) सैनिकों के लिए

(ख) अमर सपूतों के लिए

(ग) देश वासियों के लिए

(घ) फूलों के लिए

4. डाल-डाल पर बैठे पक्षी क्या करते हैं ?

(क) उड़ते हैं

(ख) गाते हैं

(ग) खाते हैं

(घ) आश्रय पाते हैं

5. भौंरे क्या करते है?

(क) मंडराते हैं

(ख) गुनगुनाते हैं

(ग) मस्त हैं

(घ) मस्त होकर गुनगुनाते और मंडराते हैं

4. कवि नव स्फूर्ति, नव प्राण किसमें भरने की बात करते हैं ?

(क) अमर सपूतों में

(ख) स्वयं में

(ग) जन-जन में

(घ) पाठकों में

7. युग-युग से कौन मुरझाया हुआ है ?

(क) फूल

(ख) पत्ते

(ग) डालियाँ

(घ) पेड़

8. काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक चुनिए ?

(क) गर्जना

(ख) आह्वान

(ग) प्रार्थना

(घ) हुँकार

पद्यांश 3

1. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर दीजिए:**

जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है
जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर, समीर पिया।
वह स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य नहीं है।
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?
केवल अपने लिए सोचते, मौज भरे गाते हो।
पीते खाते, सोते, जगते, हँसते, सुख पाते हो।
जग से दूर, स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश है।
सोचो, तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम सा स्वार्थ विवश है?
पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला-पोसा।
किए हुए हैं वह निज-हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना अऋण प्रथम है सत्कर्त्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

1. मातृभूमि से मनुष्य क्या-क्या प्राप्त करता है?
   (क) अन्न, जल, फल (ख) अन्न, फल, फूल
   (ग) अन्न, जल, वायु (घ) फ़ल, फूल, जल

2. प्रस्तुत पंक्तियों में धरती की तुलना किससे की गई है?
   (क) ईश्वर से (ख) पिता से
   (ग) माता से (घ) विश्व से

3. प्रस्तुत काव्यांश में मनुष्य की किस प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है –
   (क) देश व देशवासियों के प्रति सेवा भाव
   (ख) स्वार्थी और आत्मकेंद्रित
   (ग) नि:स्वार्थ और उदार
   (घ) विश्व बंधुता

4. कवि के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य क्या होना चाहिए?

(क) माता–पिता के ऋण से उऋण होना

(ख) देश व जाति के ऋण से उऋण होना

(ग) शिक्षकों के ऋण से उऋण होना

(घ) भाई–बहनों के ऋण से उऋण होना

5. काव्यांश का मुख्य संदेश है –

(क) सेवा भाव (ख) परोपकार

(ग) दयालुता (घ) देश भक्ति

6. मनुष्य किसी प्रवृति के कारण विवश हो गया है।

(क) बेकारी (ख) बीमारी

(ग) स्वार्थ (घ) परमार्थ

7. कवि सम्पूर्ण जीवन किस पर न्यौछावर/समर्पित करने को कह रहा है:–

(क) मातृभमि पर (ख) माँ पर

(ग) समाज पर (घ) किसी अन्य पर

8. प्रस्तुत काव्यांश में कौन सा गुण है:–

(क) माधुर्य (ख) प्रसाद

(ग) ओज (घ) करुण

अपठित पद्यांश 4

1. **कितने ही कटुतम काँटे तुम मेरे पथ पर आज बिछाओ,**
और अरे चाहे निष्ठुर कर का भी धुँधला दीप बुझाओ।
किंतु नहीं मेरे पग ने पथ पर बढ़कर फिरना सीखा है।
मैंने बस चलना सीखा है।
कहीं छुपा दो मंज़िल मेरी चारों ओर तिमिर-घन छाकर,
चाहे उसे राख कर डालो नभ से अंगारे बरसाकर,
पर मानव ने तो पग के नीचे मंज़िल रखना सीखा है।
मैंने बस चलना सीखा है।
कब तक ठहर सकेंगे मेरे सम्मुख ये तूफान भयंकर
कब तक मुझसे लड़ पाएगा इंद्रराज का वज्र प्रखरतर
मानव की ही अस्थिमात्र से वज्रों ने बनना सीखा है।
मैंने बस चलना सीखा है।

प्रश्न (क) इस काव्यांश में किसकी महिमा बताई गई है?

(ख) किस शक्ति के बल पर मनुष्य सफलता पाता है?

(ग) मानव के सामने क्या नहीं टिक पाता और क्यों?

(घ) मनुष्य के सामने मुसीबतें क्यों नहीं टिक पातीं?

(ङ) साहसी मानव की मंज़िल कहाँ रहती है और क्यों?

(च) साहसी मानव अपनी मंज़िल कैसे प्राप्त करता है?

(छ) इस काव्यांश का मूल संदेश क्या है?

(ज) 'अस्थिमात्र से वज्रों ने बनना'-इस पंक्ति से किस कथा की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर (क) इस काव्यांश में मनुष्य के अदम्य साहस और उसकी दृढ़ इच्छा-शक्ति की महिमा बताई गई है।

(ख) मनुष्य अपने साहस, लगन और दृढ़ता के बल पर जीवन-पथ पर निरंतर आगे -आगे ही बढ़ता जाता है। ऐसा करके वह जीवन में सफलता की नई ऊँचाई पर चढ़ता जाता है।

(ग) मानव के सामने भयंकर-से-भयंकर तूफान भी नहीं ठहर पाते हैं।

(घ) मनुष्य इन तूफानों का सामना साहसपूर्वक करता है और उन्हें पराजित करके ही दम लेता है।

(ङ) साहसी मनुष्य की मंज़िल उसके पैरों के नीचे होती है।

(च) वह अपनी मंज़िल के मार्ग में आने वाली हर प्राकृतिक मुसीबत का सामना करके विजय पाता है और अंततः भीषण अँधेरे में छिपी सफलता को भी पा लेता है।

(छ) साहस व दृढ़विश्वास से ही जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है

(ज) 'अस्थिमात्र से वज्रों ने बनना'-यह पंक्ति महर्षि दधीचि द्वारा मानवता के लिए अपनी हड्डियों का दान देने, उन अस्थियों से बने वज्र से असुरराज वृत्तासुर को देव-दानव युद्ध में पराजित करने तथा देव सत्ता की स्थापना की कथा की ओर संकेत किया गया है।

पद्यांश 5

2. इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी।
यह समाधि, यह लघु समाधि है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीला-स्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृतिशाला-सी।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर पड़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिनगारी।।

इससे भी सुंदर समाधियाँ
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में
क्षद्र जंतु ही गाते।

पर कवियों की अमर गिरा में
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है वीरों की बानी।।

प्रश्न (क) प्रस्तुत काव्यांश में किसकी समाधि का उल्लेख किया गया है?

(ख) उसे अंतिम लीला-स्थली क्यों कहा गया है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए- 'यहीं कहीं पर बिखर गई वह भग्न विजय-माला-सी।'

(घ) व्यक्ति का मान कब बढ जाता है?

(ङ) इससे भी सुंदर समाधियाँ होने पर भी यह समाधि विशेष क्यों बताई गई है?

(च) युद्ध में बलि होने का क्या परिणाम परिलक्षित होता है।

(छ) काव्यांश में से उपमा अलंकार के दो उदाहरण छाँटिए।

(ज) रानी को वीर बाला सी क्यों कहा है?

उत्तर (क) प्रस्तुत काव्यांश में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि का उल्लेख किया गया है।

(ख) उसे अंतिम लीला-स्थली इसलिए कहा गया है क्योंकि लक्ष्मीबाई यहीं पर देश को अग्रेंजी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गई थी।

(ग) आशय यह है कि रानी लक्ष्मीबाई के शहीद होने से भारत को स्वतंत्रता मिलने की जो आशा बँधी थी, वह बिखर गई।

(घ) जब व्यक्ति अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए या अपनी आज़ादी को बनाए रखने के लिए जान की बाजी लगा देता है और वीरगति को प्राप्त हो जाता है।

(ङ) उस समाधि में स्वतंत्रता की आशा की चिंगारी छिपी हुई है।

(च) वीर का मान बढ़ जाता है।

(छ) आहुति-सी, बाला-सी, विजयमाला-सी, ज्वाला-सी।

(ज) वार-पर वार सह कर अंत तक लड़ी।

अभ्यास प्रश्न पत्र
कक्षा XII (2022-23)
हिंदी (ऐच्छिक) (002)

अधिकतम अंक : 80 **अवधि : 3 घंटे**

सामान्य निर्देश:- निम्नलिखित निर्देशों का पालन कीजिए -

- इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और खंड 'ब'। खंड 'अ' में वस्तुपरक और खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- खंड 'अ' में कुल 48 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में कुल 8 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, इनमें उप-प्रश्न भी दिए गए हैं। कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं।
- दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न संख्या	खंड 'अ' वस्तुपरक प्रश्न	अंक (उपभार x प्रश्न)
	अपठित गद्यांश	(10)
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-** भाषा बोल-चाल की भी होती है और लिखने की भी। बोल-चाल से हम अपने करीब के लोगो पर अपने विचार प्रकट करते है- अपने हर्ष-शोक के भावों का चित्र खींचते है। साहित्यकार वही काम लेखनी द्वारा करता है। हाँ, उसके श्रोताओं की परिधि बहुत विस्तृत होती है, और अगर उसके बयान मे सच्चाई है, तो शताब्दियों और युगों तक उसकी रचनाएँ हृदयो को प्रभावित करती रहती है। परन्तु मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि जो कुछ लिख दिया जाए, वह सब का सब साहित्य है। साहित्य उसी रचना को कहेगे जिसमे कोई सच्चाई प्रकट की गयी हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एव सुन्दर हो और जिसमे दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य मे यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था मे उत्पन्न होता है, जब उसमे जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गयी हों। तिलस्माती कहानियों, भूत-प्रेत की कथाओं ओर प्रेम-वियोग के आख्यानों से किसी जमाने मे हम भले ही प्रभावित हुए होय पर अब उनमें हमारे लिए बहुत कम दिलचस्पी	

	है। इसमे सन्देह नहीं कि मानव-प्रकृति का मर्मज्ञ साहित्यकार राजकुमारों की प्रेम-गाथाओं और तिलस्माती कहानियों मे भी जीवन की सच्चाइयाँ वर्णन कर सकता है, और सौन्दर्य की सृष्टि कर सकता है, परन्तु इससे भी इस सत्य की पुष्टि ही होती है कि साहित्य मे प्रभाव उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि वह जीवन की सच्चाइयों का दर्पण हो। फिर आप उसे जिस चौखटे मे चाहे, लगा सकते है- चिड़े की कहानी और गुलोबुलबुल की दास्तान भी उसके लिए उपयुक्त हो सकती है। साहित्य की बहुत-सी परिभाषाएँ की गयी है: पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम परिभाषा 'जीवन की आलोचना' है। चाहे वह निबन्ध के रूप में हो, चाहे कहानियों के, या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।	
	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए-	1x10=10
(i)	किसकी परिधि सबसे विस्तृत होती है? (क) लेखक (ख) श्रोता (ग) वक्ता (घ) दर्शक	
(ii)	गद्यांश के अनुसार साहित्य किसे कहा जाना चाहिए? (क) जिसमें किस्से-कहानियाँ हों (ख) जिसमें कल्पना का सौंदर्य हो (ग) जिसमें जीवन का यथार्थ चित्रण हो (घ) जिसमें जादू और तिलस्म हो	
(iii)	गद्यांश के अनुसार साहित्य मे प्रभाव कैसे उत्पन्न किया जा सकता है? (क) सौन्दर्य की सृष्टि द्वारा (ख) जीवन की सच्चाइयों को दिखाकर (ग) भूत-प्रेत और जादुई घटनाओं को दिखाकर (घ) प्रेम की सुखद अनुभूति को दिखाकर	
(iv)	किस प्रकार के साहित्यकारों की रचनाएँ शताब्दियों और युगों तक हृदयो को प्रभावित करती रहती हैं? (क) जिनके लेखन में गल्प होता है (ख) जिनके लेखन में कल्पना होती है	

	(ग) जिनके लेखन में सच होता है (घ) जिनके लेखन में मिथ्या होती है	
(v)	तिलस्माती कहानियों, भूत-प्रेत की कथाओं ओर प्रेम-वियोग के आख्यानों में लेखक की दिलचस्पी अब क्यों नहीं है? (क) क्योंकि अब उनमें मनोरंजन का तत्व नहीं रहा (ख) क्योंकि वे जीवन के यथार्थ से बहुत दूर हैं (ग) क्योंकि वे अब साहित्य का उद्देश्य बन गई हैं (घ) क्योंकि उनकी रचना अब बहुत कम हो गई हैं	
(vi)	लेखक के अनुसार साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा है- (क) जीवन की कल्पना (ख) जीवन की आलोचना (ग) जीवन की तुलना (घ) जीवन की संकल्पना	
(vii)	जिस साहित्य में जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की जाती हैं, उनका प्रभाव होता है- (क) सीमित (ख) व्यापक (ग) संकुचित (घ) सूक्ष्म	
(viii)	लेखक के अनुसार चिड़े की कहानी और गुलोबुलबुल की दास्तान भी वास्तविक साहित्य की श्रेणी में कब आ जाते हैं? (क) जब उनमें फंतासी युक्त चित्रण होता है (ख) जब उनमें दुख का सच्चा चित्रण होता है (ग) जब उनमें जीवन का सच्चा चित्रण होता है (घ) जब उनमें सच्चे सुख का चित्रण होता है	
(ix)	निम्नलिखित में भाषा का कौन-सा रूप नहीं होता? (क) लिखित (ख) मौखिक (ग) सांकेतिक (घ) पाक्षिक	

(x)	'परिमार्जित' शब्द का क्या अर्थ है? (क) एकत्र किया हुआ (ख) साफ अथवा मांजा हुआ (ग) अपरिवर्तित (घ) अर्जित किया हुआ	
	अपठित पद्यांश	(8)
प्रश्न 2.	**निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-** क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत्त-घन के नर्तन, मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन। मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण, शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन। मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए, फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान-पतन। में अटका कब, कब विचलित में, सतत डगर मेरी संबल, रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल। आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी, फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडन-मंडन। मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन, मुझे पथिक कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन। मैं बढ़ता अविराम निरन्तर तन-मन में उन्माद लिए, फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत् नर्तन।	
(i)	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए- कवि स्वयं को क्या मानता है? (क) देव (ख) पथिक (ग) भिक्षुक (घ) नर्तक	1x8=8
(ii)	कवि ने फूलों के स्थान पर शूलों से मित्रता क्यों की है? (क) क्योंकि उसकी लक्ष्य-प्राप्ति की इच्छाशक्ति दृढ है (ख) क्योंकि उसे फूल पसंद नहीं हैं	

	(ग) क्योंकि वह मार्ग की बाधाओं से घबराता है (घ) क्योंकि उसमें मानशिक बल की कमी है	
(iii)	कवि विपदाओं में भी क्या करता है? (क) नई आशा के दीप लिए नाचता है (ख) नई आशा के दीप लिए रोता है (ग) निराशा के दीप लिए मुस्काता है (घ) नई आशा के दीप लिए मुस्काता है	
(iv)	'अग्निशिखाओं के नर्तन' में अलंकार है – (क) अनुप्रास (ख) रूपक (ग) उपमा (घ) मानवीकरण	
(v)	'अविराम' शब्द का अर्थ है – (क) बिना चले (ख) बिना रुके (ग) बिना समझे (घ) बिना दौड़े	
(vi)	'युग की प्राचीर निबल' का भाव है– (क) आधुनिक आलीशान महल (ख) प्राचीन जर्जर किले (ग) आधुनिक आलीशान किले (घ) प्राचीन जर्जर महल	
(vii)	कवि के लिए कौन–सी राह सुपरिचित है? (क) निष्कंटक सरल राह (ख) बाधाओं और विपदाओं से भरी राह (ग) फूल और सुगंधों से भरी राह (घ) पर्वत झरने और जलाशयों से भरी राह	
(viii)	'पतन' शब्द का विलोम लिखिए– (क) उद्धार (ख) उन्नयन	

	(ग) उत्साह (घ) उत्थान	
	अथवा	
	शांत स्निग्ध, ज्योत्स्ना उज्जवल। अपलक अनंत, नीरव भू–तल। सैकत–शय्या पर दुग्ध–धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म–विरल, लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त, निश्चल। तापस–बाला गंगा, निर्मल, शशि–मुख से दीपित मृदु–करतल, लहरे उर पर कोमल कुंतल। गोरे अंगों पर सिंहर–सिहर, लहराता तार–तरल सुन्दर चंचल अंचल–सा नीलांबर। साड़ी की सिकुड़न–सी जिस पर, शशि की रेशमी–विभा से भर, सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर। चाँदनी रात का प्रथम प्रहर, हम चले नाव लेकर सत्वर। सिकता की सस्मित–सीपी पर, मोती की ज्योत्स्ना रही विचर, लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर। मृदु मंद–मंद, मंथर–मंथर, लघु तरणि, हंसिनी–सी सुन्दर तिर रही, खोल पालों के पर। निश्चल–जल के शुधि–दर्पण पर, बिम्बित हो रजत–पुलिन निर्भर दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर ।	
	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए–	
(i)	प्रस्तुत काव्यांश में किसका वर्णन है ? (क) प्रकृति का (ख) नौका विहार का (ग) गंगा का (घ) रात्रि का	
(ii)	कवि ने किसे तपस्विनी कहा है? (क) गंगा को (ख) नदी को	

	(ग) रात्रि को (घ) प्रकृति को	
(iii)	'तन्वंगी' शब्द का क्या अर्थ है? (क) युवती (ख) छरहरी (ग) गंगा (घ) नदी	
(iv)	कवि ने किसे केशों के समान बताया है ? (क) लहरों को (ख) पतवार को (ग) द्रीप को (घ) चंद्रमा को	
(v)	'मृदु मंद-मंद, मंथर-मंथर' पंक्ति में निहित अलंकार क्या है ? (क) अनुप्रास (ख) रूपक (ग) मानवीकरण (घ) उपमा	
(vi)	किसकी चमक रेशमी है? (क) नाव की (ख) कवि की (ग) चंद्रमा की (घ) उपर्युक्त सभी की	
(vii)	'सिकता' का अर्थ क्या है? (क) रेत (ख) धरती (ग) नदी (घ) समुद्र	
(viii)	नाव की कौन सी विशेषता बताई गई है? (क) हंस के समान सुंदर (ख) सूर्य के समान तीक्ष्ण	

	(ग) पंक के समान मलिन (घ) कोयल के समान मृदुल	
	अभिव्यक्ति और माध्यम	**(5)**
प्रश्न 3.	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए –	**1x5=5**
(i)	हिन्दी में नेट पत्रकारिता किसके साथ आरंभ हुई? (क) वैब दुनिया के साथ (ख) दैनिक जागरण के साथ (ग) दैनिक भास्कर के साथ (घ) राजस्थान पत्रिका के साथ	
(ii)	समाचार पत्र प्रकाशित या प्रसारित करने के लिए आखिरी समय सीमा को क्या कहा जाता है? (क) ब्लू लाइन (ख) ब्लैक लाइन (ग) रेड लाइन (घ) डेड लाइन	
(iii)	संपादकीय लिखने का कार्य किसका होता है? (क) वरिष्ठ पत्रकार का (ख) रिपोर्ट लेखक का (ग) संपादक और सहायक संपादकों का (घ) कोई भी लिख सकता है	
(iv)	कविता का जन्म किस परंपरा के रूप में हुआ था? (क) वाचिक रूप में (ख) लिखित रूप में (ग) यांत्रिक रूप में (घ) उपर्युक्त तीनों रूपों में	
(v)	नाटक को कौन-सा काव्य कहते हैं? (क) श्रव्य-काव्य (ख) महा-काव्य (ग) दृश्य-काव्य (घ) खंड-काव्य	

	पाठ्य-पुस्तक (अंतरा भाग 2)	(12)
प्रश्न 4.	निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-	
	अरुण यह मधुमय देश हमारा! जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा॥ सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर। छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा॥ लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे। उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा॥ बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल। लहरें टकरातीं अनन्त की, पाकर जहाँ किनारा॥ हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे। मदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा॥	
	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए –	1x6=6
(i)	हमारा देश कैसा है? (क) अनजान और छिटका (ख) अरुण और मधुमय (ग) सरल और तामरस (घ) हेम और कुम्भ	
(ii)	'अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' में कौन-सा भाव है? (क) भारत में अपरिचित लोगो को भी आश्रय मिलता है (ख) भारत में सूर्य पश्चिम दिशा में क्षितिज पर उगता है (ग) भारत में हिमालय क्षितिज के रूप में कार्य करता है (घ) भारत में नदियाँ क्षितिज पर जाकर मिलती हैं	
(iii)	प्रस्तुत गीत कौन गा रही है? (क) देवसेना (ख) कार्नेलिया (ग) चन्द्रलेखा (घ) उषा	
(iv)	प्रात:काल कौन सुख बरसा रहा है? (क) रजनी	

	(ख) हेम (ग) कुम्भ (घ) उषा	(12)
(v)	आकाश में उड़ते हुए छोटे पक्षी किस भांति प्रतीत हो रहे हैं? (क) वारिद बिंदु के समान (ख) तरुशिखा के समान (ग) इंद्रधनुष के समान (घ) उषा घट के समान	
(vi)	'करुणा जल' में कौन-सा अलंकार है? (क) मानवीकरण (ख) रूपक (ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा	
प्रश्न 5.	निम्नलिखित गद्यांश को धयानपूर्वक पढ़िए। चौधरी साहब से तो अब अच्छी तरह परिचय हो गया था। अब उनके यहाँ मेरा जाना एक लेखक की हैसियत से होता था। हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज समझा करते थे। इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का एक अद्‌भुत मिश्रण रहता था। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि चौधरी साहब एक खास हिंदुस्तानी रईस थे। वसंत पंचमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाचरंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा में रियासत और तबीयतदारी टपकती थी। कंधों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा-सा लड़का पान की तश्तरी लिए पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की काँट-छाँट का क्याड कहना है ! जो बातें उनके मुँह से निकलती थीं, उसमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला था।	
	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए -	1x6=6
(i)	उपर्युक्म गद्यांश में 'चौधरी साहब' का प्रयोग किसके लिए किया गया है? (क) रामचंद्र शुक्ल (ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र (ग) केदारनाथ पाठक (घ) उपाध्याय बद्रीनारायण	

(ii)	'हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज समझा करते थे। 'पंक्ति का आशय है– (क) चौधरी साहब को प्राचीन वस्तु समझना (ख) चौधरी साहब को पुरातात्विक वस्तु समझना (ग) चौधरी साहब को वयोवृ) और अनुभवी समझना (घ) चौधरी साहब को नया और ऊर्जावान समझना	(12)
(iii)	लेखक ने चौधरी साहब को 'एक खास हिंदुस्तानी रईस' क्यों कहा है? (क) क्योंकि वे प्राय: सभी पर्व–त्योहारों पर लोगों को दान देकर उत्सव मनाते थे (ख) क्योंकि वे अकूत धन–दौलत के स्वामी थे (ग) क्योंकि उनका बातचीत का ढंग औरों से निराला था (घ) क्योंकि वे प्राय: सभी पर्व–त्योहारों पर लोगों को शामिल कर उत्सव मनाते थे	
(iv)	निम्नलिखित में चौधरी साहब की विशेषता नहीं थी– (क) तरफदारी (ख) तबीयतदारी (ग) मनोरंजन प्रेमी (घ) बातचीत की विशिष्ट शैली	
(v)	'विलक्षण वक्रता' से तात्पर्य है– (क) अद्‌भुत प्रगतिशीलता (ख) अद्‌भुत व्यंग्यात्मकता (ग) अद्‌भुत परिपक्वता (घ) अद्‌भुत निरंकुशता	
(vi)	'हैसियत' शब्द में प्रत्यय है– (क) हस (ख) यत (ग) इयत (घ) सियत	
	पूरक पाठ्य–पुस्तक (अंतराल भाग 2)	(05)
प्रश्न 6.	निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए –	1x5=5
(i)	'सूरदास की झोपड़ी' किस उपन्यास का अंश है?	

	(क) रंगभूमि (ख) गबन (ग) सूरदास (घ) कर्मभूमि	
(ii)	'अभिलाषाओं की राख है' से क्या तात्पर्य है? (क) सभी पैसों का जल जाना (ख) झोपड़ी का जल जाना (ग) ईर्ष्या के कारण झोपड़ी जलना (घ) झोपड़ी के साथ उसके अभिलाषाओं की पूर्ति समाप्त होना	
(iii)	सूरदास ने पैसे क्यों जमा किए थे? (क) पिंडदान के लिए (ख) मिठुआ के ब्याह के लिए (ग) गांव वालों के लिए कुआं बनवाने के लिए (घ) उपरोक्त सभी	
(vi)	'बिस्कोहर की माटी' पाठ के अनुसार गर्मी और लू से बचने के उपाय कौन-से हैं? (क) बहुत ज्यादा दूध पीना चाहिए (ख) नींबू का पानी अत्याधिक पीना चाहिए (ग) कमीज में या धोती में गांठ लगाकर प्याज बांध लेना चाहिए (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं	
(v)	'बिस्कोहर की माटी' पाठ में आए शब्द 'कोइयां' से क्या अभिप्राय है? (क) कोयला (ख) जल में उगने वाला पुष्प (ग) लकड़ी (घ) इनमें से कोई नहीं	
	खंड 'ब' वर्णनात्मक प्रश्न	
	अभिव्यक्ति और माध्यम	(17)
प्रश्न 7.	निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :- (क) अति सर्वत्र वर्जयेत	**5x1=5**

	(ख) वर्षा का एक दिन (ग) भारत की भाषाई विविधाता	
प्रश्न 8.	निम्नलिखित प्रश्नों में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए-	3x2=6
(i) (ii) (iii)	स्टिंग ऑपरेशन से क्या अभिप्राय है? उल्टा पिरामिड शैली क्या होती है ? वॉच डॉग पत्रकारिता क्या है?	
प्रश्न 9.	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-	3x2=6
	एक अच्छे समाचार की कोई तीन विशेषताएँ बताइए। कविता लेखन में बिंबों की क्या भूमिका है?	
	पाठ्य-पुस्तक (अंतरा भाग 2 और अंतराल भाग 2)	20+3
प्रश्न 10.	निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-	2x2=4
(i) (ii) (iii)	'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है? अगहन मास में नागमती की विरह-वेदना का वर्णन जायसी ने किस प्रकार किया है? स्पष्ट कीजिए- 'यह दीप अकेला' में दीपक के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि ने उसे स्नेह भरा, गर्व भरा एवं मदमाता क्यों कहा है?	
प्रश्न 11.	निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या करें -	6x1=6
(i)	आह! वेदना मिली विदाई मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई अथवा मुझको दीख गया : सूने विराट् के सम्मुख हर आलोक-छुआ अपनापन है उन्मोचन नश्वरता के दाग से!	
प्रश्न 12.	निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-	2x2=4
(i)	''चौधरी साहब एक खासे हिंदुस्तानी रईस थे'' कैसे?	

(ii)	लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का दृष्टांत क्यों दिया है ?	
(iii)	संवाद देते समय बड़ी बहुरिया की आँखें क्यों छलछला आई?	3x2=6
	निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करें –	6x1=6
	बकौल वात्स्यायन के, आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल के मोहर से। आँखों देखा ढेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस की तेज पिण्ड से।	
प्रश्न 14.	निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए–	3x1=3
(i)	'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।	
(ii)	बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बतख से की है?	

टीप्पणी

टीप्पणी